UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180127

UNIVERSAL
LIBRARY

गांधी-उपदेश-माला—पहला प्रसून

प्रार्थना-सभा के भाषण

[नई दिल्ली में दिये गये गांधी जी के प्रार्थना प्रवचन]

१ जनवरी से २६ जनवरी तक

१९४८

संग्राहक

श्रीकृष्ण

१९४८

भारतीय प्रकाशन मंडल

दिल्ली

प्रकाशक
श्रीकृष्ण,
भारतीय प्रकाशन मण्डल,
सिरकी बाज़ार, दिल्ली

पहली बार : १९४८
मूल्य
एक रुपया

मुद्रक
जगन्नाथ प्रसाद शर्मा,
श्री भानु प्रिन्टिङ्ग वर्क्स
धरमपुरा—दिल्ली

स्वर्गीय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

की

पुण्य स्मृति

में

गांधीजी का प्रिय भजन

वैष्णव जन तो तेने कहिये,
जे पीड़ पराई जाणे रे;
परदुःखे उपकार करे तोये,
मन अभिमान न आणे रे,
सकल लोक माँ सहुने वंदे,
निन्दा न करे केनी रे;
वाच काछ मन निश्चल राखे,
धन धन जननी तेनी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी,
पर स्त्री जेने मात रे;
जिह्वा थकी असत्य न बोले,
परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहि जेने,
दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे;
राम नामशुं ताली लागी,
सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वण लोभी ने कपटरहित छे,
काम क्रोध निर्वाया रे;
भणे नरसैंयो तेंनु दरसन करतां,
कुल एकोतेर तार्यां रे।

भूमिका

राष्ट्रपिता अब हमारे बीच नहीं रहे, उनका हिन्दू-मुस्लिम-एकता की वेदी पर असामयिक, क्रूर बलिदान हो गया।

उनके महाप्रयाण से भारत ही नहीं सकल विश्व आज अनाथ है। उनकी अमृत-वाणी अब हमें फिर कभी सुनने को न मिलेगी। अब फिर कभी वे हमारा पथ-प्रदर्शन स्वयं न करेंगे किन्तु उनके उपदेशात्मक आदेश हमारे चिर पथ-प्रदर्शक हैं, वे हमें चिरकाल तक न्याय, सत्य और अहिंसा के दुर्गम मार्ग पर चलने में सहायक होंगे।

इधर कुछ वर्षों से पूज्य गांधी जी ने अपनी संध्या की प्रार्थना के बाद प्रवचन करने की प्रथा कर ली थी। उसमें वे अपना हृदय सर्व साधारण के सन्मुख खोलकर रख देते थे। प्रतिदिन की मुख्य-मुख्य घटनाओं का उल्लेख करके, उनके बारे में अपने विचार समालो चना सहित बताया करते थे। अपने इन प्रवचनों में वे राजनीति की बड़ी से बड़ी गूढ़ गुत्थियों को सुलझाने से लेकर प्रतिदिन-जीवन यापन की छोटी से छोटी बात को अपने स्वाभाविक सरल और सहज ढंग से इस प्रकार जनता को समझाया करते थे जैसे मानो परिवार का कोई गुरुजन अपने बाल बच्चों को उपदेश दे रहा है। सचमुच वे हमारे गुरुजन थे, उनके लिए भारत ही नही, सारा संसार एक बिशाल-परिवार के समान था। और हमारे लिए वे उस परिवार के मुखिया थे। अब जब वे नहीं हैं तो कम से कम उनके वे आदेश तो हमारे पास ही

जो उन्होंने अपने दीर्घ आदर्श जीवन में अपने लेखों में, भाषणों में और अपने अन्तिम समय के दिनों में प्रार्थना सभा के प्रवचनों में दिये थे। इस पुस्तिका में जनवरी मास में दिये गये उनके प्रार्थना-प्रवचनों का संग्रह है। यह मास उनके जीवन का अन्तिम मास था। उसमें उन्होंने क्या क्या किया और कहा, हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए उन्होंने अपना अन्तिम शाश्वत शस्त्र, उपवास का अपने जीवन में अन्तिम बार प्रयोग किया और उसके उद्देश्य में उन्हें जो अपूर्व असाधारण सफलता मिली यह सब उनके इन प्रार्थना प्रवचनों से भलि भांति ज्ञात हो जाता है।

ये प्रवचन आपके सामने हैं, इनकी पूर्ण भूमिका लिखने में मैं पूर्णतया असमर्थ हूँ, मुझमें इतना साहस ही नहीं है कि विश्ववन्द्य बापू के प्रवचनों की भूमिका लिखने की धृष्टता कर सकूँ। वह तो सूर्य के प्रचंड प्रकाश को एक क्षुद्र दीपक दिखाना होगा।

उन महापुरुष के बोलने का अपना ही एक निराला ढंग था। उसको लिपिबद्ध करना बड़ा ही कठिन है। फिर भी जहाँ तक संभव हो सका है, उनके प्रवचन यथा शक्ति ज्यों के त्यों दिये गये हैं। यदि अब भी कुछ भूल रह गई हो तो पाठक गण क्षमा करें और मुझे कृपया सूचित करें जिससे अगामी संस्करण शुद्ध हो सकें। इसके लिए उनका मैं आभारी हूँगा।

दिल्ली, रबिवार
तपंचमी, माघ शुक्ला पंचमी
ता०, १५-२-४८

श्रीकृष्ण

सायङ्काल की प्रार्थना

बौद्ध मंत्र

नम्यो हो रेंगे क्यों ।

सत् धर्म के प्रवर्तक भगवान् बुद्ध को नमस्कार करता हूँ ।

उपनिषत् मंत्र

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

इस जगत् में जो कुछ भी जीवन है वह सब ईश्वर का बसाया हुआ है । इसलिए तू ईश्वर के नाम से त्याग करके यथाप्राप्त भोग किया कर । किसी के धन की वासना न कर ।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुःसुरा सुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और पवन दिव्य स्तोत्रों से जिसकी स्तुति करते हैं, सामवेद का गान करने वाले मुनि, अङ्ग,पद, क्रम और उपनिषद् सहित वेदों से जिसका स्तवन करते हैं, योगी लाग ध्यानस्थ होकर ब्रह्ममय मन द्वारा जिसका दर्शन करते हैं और सुर तथा असुर जिसकी महिमा का पार नहीं पाते, मैं उस परमात्मा को नमस्कार करता हूं ।

गीता : अध्याय २

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥५४॥

५४—हे केशव ! स्थितप्रज्ञ अथवा समाधिस्थ के क्या लक्षण होते हैं ? स्थितप्रज्ञ कैसे बोलता, बैठता और चलता है ?

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥५५॥

५५—हे पार्थ ! जब मनुष्य मन में उठती हुई सभी कामनाओं का त्याग कर देता है और आत्मा द्वारा ही आत्मा में सन्तुष्ट रहता है, तब यह स्थितप्रज्ञ कहलाता है ।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥

५६—दुःख से जो दुखी न हो, सुख की इच्छा न रखे, और राग, भय और क्रोध से रहित हो, वह स्थिर-बुद्धि मुनि कहलाता है ।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५७॥

५७—सर्वत्र राग-रहित होकर जो पुरुष शुभ या अशुभ की प्राप्ति में न हर्षित होता है, न शोक करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है ।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५८॥

५८—कछुआ जैसे सब ओर से अङ्ग समेट लेता है, वैसे ही जब यह पुरुष इन्द्रियों को उनके विषयों से समेट लेता है, तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है ।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥५९॥

५९—देहधारी जब निराहार रहता है तब उसके विषय मन्द पड़ जाते हैं, परन्तु रस नहीं जाता । वह रस तो ईश्वर का साक्षात्कार होने से शान्ति होता है ।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥६०॥

६०—हे कौन्तेय ! चतुर पुरुषके उद्योग करते रहने पर भी इन्द्रियां ऐसी प्रमथनशील हैं कि वे उसके मन को भी बलात्कार से हर लेती हैं।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६१॥

६१—इन सब इन्द्रियों को वश में रखकर योगी को मुझमें तन्मय हो रहना चाहिये; क्योंकि अपनी इन्द्रियां जिसके वश में हैं उसकी बुद्धि स्थिर है।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥६२॥

६२—विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष को उनमें आशक्ति उत्पन्न होती है, आशक्ति से कामना हाती है, और कामना से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥६३॥

६३—क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से ज्ञान का नाश हो जाता है, और जिसका ज्ञान नष्ट हो गया वह मृतक तुल्य है।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥

६४—परन्तु जिसका मन अपने अधिकार में है और जिसकी इन्द्रियां रागद्वेष-रहित होकर उसके वश में रहती हैं, वह मनुष्य इन्द्रियों का व्यापार चलाते हुए भी चित्त की प्रसन्नता प्राप्त करता है।

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥६५॥

६५—चित्त प्रसन्न रहने से उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिः शान्तस्य कुतः सुखम् ॥६६॥

६६—जिसे महत्व नहीं, उसे विवेक नहीं। जिसे विवेक नहीं, उसे भक्ति नहीं। और जिसे भक्ति नहीं, उसे शान्ति नहीं है। और जहां शान्ति नहीं, वहां सुख कहां से हो ?

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥६७॥

६७—विषयोंमें भटकाने वाली इन्द्रियों के पीछे जिसका मन दौड़ता है उसका मन, जैसे वायु नौका को जल में खींच ले जाता है वैसे ही, उसकी बुद्धि को जहां चाहे वहां खींच ले जाता है।

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६८॥

६८—इसलिए हे महाबाहो ! जिसकी इन्द्रियां चारों ओरके विषयों से निकलकर अपने वशमें आ जाती हैं, उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥६९॥

६९—जब सब प्राणी सोते रहते हैं, तब संयमी जागता रहता है। जब लोग जागते रहते हैं, तब ज्ञानवान् मुनि सोता रहता है।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी७

७०—नदियों के प्रवेश से भरते रहने पर भी जैसे समुद्र अचल रहता है, वैसे ही जिस मनुष्य में संसारके भोग शान्ति हो जाते हैं, वही शान्ति प्राप्त करता है, न कि कामना वाला मनुष्य।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥७१॥

७१—सब कामनाओं का त्याग करके जो पुरुष इच्छा, ममता और अहङ्कार-रहित होकर विचारता है वही शान्ति पाता है।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥७२॥

७२—हे पार्थ! ईश्वर को पहचानने वाले की स्थिति ऐसी होती है। उसे पाने पर फिर वह मोह के वश नहीं होता और यदि मृत्यु-काल में भी ऐसी ही स्थिति टिकी रहे, तो वह ब्रह्मनिर्वाण पाता है।

एकादश व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्मी समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
ही एकादश सेवावी नम्रत्वे व्रतनिश्चये॥

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, अस्वाद, सब जगह भय का त्याग, सब धर्मों के साथ समानभाव, स्वदेशी धर्म का पालन, स्पर्शास्पर्श भावना का त्याग—इन ग्यारहों व्रतों को पालन करने का नम्रता पूर्वक निश्चय करता हूं।

कुरान की आयत

अऊजु बिल्लाहि मिनश् शैत्वानिर् रजीम्।
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम्॥

अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन् ।
अर् रहमानिर् रहीमि मालिकि यौमिद् दीन् ॥
ईयाक नअबुदु व ईयाक नस्तईन् ।
इह्दिनस् सिरात्वल् मुस्तक़ीम् ॥
सिरात्वल् लज़ीन अनअम्त अलै हिम् ।
ग़ैरिल् मग् दूबि अलै हिम् व लद् द्वाल्लीन् ॥

मैं पापात्मा शैतान के हाथों से (अपने को) बचाने के लिए परमात्मा की शरण लेता हूँ। हे प्रभो ! तुम्हारे नामका ही स्मरण करके मैं सारे कामों का आरम्भ करता हूं। तुम दया के सागर हो, तुम कृपामय हो। तुम अखिल विश्वके पालनहार हो। तुम ही मालिक हो। तुम मुझे सीधा ही रास्ता दिखाओ, उन्हीं का चलने का रास्ता दिखाओ जो तुम्हारी कृपा-दृष्टि पानेके काबिल हो गये हैं, जो तुम्हारी अप्रसन्नताके योग्य ठहरे, जो गलत रास्तेसे चले हैं उनका रास्ता मुझे मत दिखाओ।

ईश्वर एक है, वह सनातन है, वह निरालम्ब है, वह अज है, अद्वितीय है, सारी सृष्टिको पैदा करता है, उसे किसी ने पैदा नहीं किया।

जरतुश्ती गाथा

मज़दा अतमोह वहिश्ता,स्रवा ओस्चा श्योथनाचा वओचा ।
ता—तू वहू मनंघहा, आशाचा इषुदेम स्तुतो
त्तमा का अथा अहूरा फेरपेम् वस्ना हइ श्येम् दाओ अहूम् ।

ऐ होरमज्द ! सर्वोत्तम धर्म के वचन और कर्म के विषय मुझे बता जिससे मैं सच्ची राह पर रह सकूं और तेरी ही महिमा को गा सकूं। तू अपनी इच्छा के अनुसार मुझे चला। मेरा जीवन चिर नूतन रहे और वह मुझे स्वर्ग-सुख का दान करे।

—❀—

राम-धुन

हरे राम, हरे राम, हरे राम हरे।
भज मन निशिदिनी प्यारे ॥

× × ×

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीताराम ॥
ईश्वर अल्ला तेरे नाम,
सबको संमति दे भगवान् ॥

× × ×

राधाकृष्ण जय कुञ्ज बिहारी,
मुरलीधर गोवर्धन धारी ॥

× × ×

निवृत्ति ज्ञानदेव सोपान मुक्ताबाई।
एकनाथ नामदेव तुकाराम ॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे,
हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

× × ×

राजा राम राम राम,
सीता राम राम राम ॥

× × ×

जय राम जय राम जय जय राम।
श्री राम जय राम जय • जय राम ॥

× × ×

नई—धुन

सिय स्वामी की जय, प्यारे राघव की जय।
बोलो हनुमान कृपालु की, जय जय जय॥

× × ×

भजावा राम मेघश्याम;
मनीं आठवा हो सीताराम।
मनीं आठवा हो सीताराम,
मनीं आठवा हो राजाराम।

× × ×

पावना गजा पतित पावना रामा।

× × ×

राम धुन लागी गोपाल धुन लागी।

× × ×

जय गोविन्द हरि गोविन्द,
जय गोविन्द राधे गोविन्द।
जय गोपाल राधे गोविन्द,

× × ×

भजले भजले सीताराम।
मङ्गल मूर्ति सुन्दर श्याम॥

× × ×

: १ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, १–१–'४८

आत्मा की खुराक

आज अंग्रेजी साल का पहला दिन है। आज इतने ज़्यादा आदमियों को यहां जमा देखकर मैं खुश हूँ। पर मुझे दुःख है कि बहनों को बैठने को जगह देने में सात मिनट लग गये। सभा में एक मिनट भी बेकार जाने का मतलब है कि करोड़ों जनता के बहुत से मिनट बेकार गये। फिर तो हमारा खात्मा है न ? भाइयों को चाहिये कि बहनों को पहले जगह देना सीखें। जिस देश में औरतों की इज्जत नहीं वह सभ्य नहीं। दोनों को अपनी मर्यादा सीखनी चाहिये। यही मनु महाराज ने बताया है। आज़ादी मिल जाने के बाद, हम सब को और भी मर्यादा के साथ बरतना चाहिये। मैं उम्मीद करता हूँ कि आगे इस से भी ज़्यादा लोग आवेंगे। पर जितने लोग आवें, वे प्रार्थना की भावना लेकर आवें। क्योंकि प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है। भगवान के पास से हमें जो खुराक मिल सकती है, वह और जगह नहीं मिल सकती। मैं उम्मीद करता हूं कि जो लोग आये हैं, वे सब यहां भी शान्ति रखेंगे और जाते वक्त घरों को भी अपने साथ शान्ति ले जावेंगे।

हरिजन और शराब

यू० पी० में हाल में एक हरिजन-कान्फ्रेंस हुई थी। कहते हैं उसमें एक वज़ीर ने हरिजनों को उपदेश दिया कि आप गन्दे रहना, गन्दे कपड़े पहनना और शराब पीना छोड़ दें। इस पर कोई हरिजन बोल पड़ा कि जैसे सरकार ताड़ी के दरख्तों को उखाड़ कर फिकवा सकती है और

शराब की सब दुकानें बन्द करा सकती है, वैसे ही वह गन्दे कपड़े भी फुंकवा दे। हम नंगे रहेंगे, पर गन्दे नहीं। मैं उस हरिजन भाई की हिम्मत को सराहता हूं। मैं तो ताड़ीका गुड़ बना लेता हूँ। पर मैं हरिजन भाइयों से कहूंगा की असली इलाज उनके अपने हाथों में है शराब अगर दुकान पर बिकती भी हो, तब भी उन्हें ज़हर की तरह उससे बचना चाहिये। सच यह है कि शराब ज़हरसे भी ज़्यादा बुरी है। मज़दूर लोग घरमें आकर जो दुःख देखते हैं, उसे भुलाने के लिये शराब पीते हैं। ज़हर से शरीर ही मरता है, शराब से तो आत्मा सो जाती है। खुद अपने ऊपर काबू पाने का गुण ही मिट जाता है। मैं सरकार को सलाह दूंगा कि शराब की दुकानों को बन्द करके उनकी जगह इस तरह के भोजनालय खोल दे, जहां लोगों को शुद्ध और हल्का खाना मिल सके, जहाँ इस तरहकी किताबें मिलें जिन से लोग कुछ सीखें और जहाँ दूसरा दिल बहलाने का सामान हो। लेकिन सिनेमा को कोई स्थान न हो। इससे लोगों की शराब छूट सकेगी। मेरा यह कई देशों का तजरबा है यही मैंने हिन्दुस्तान में भी देखा और दक्षिण अफ्रीका में भी देखा था। मुझे इसका पूरा यक़ीन है कि शराब छोड़ देने से काम करने वालों का शारीरिक बल और नैतिक बल दोनों बढ़ जाते हैं, और उनकी कमाने की ताक़त भी बढ़ जाती है। इसलिए सन् १९२० से शराबबन्दी कांग्रेस के कार्यक्रम में शामिल है। अब जब हम आज़ाद हो गये हैं, सरकार को अपना वादा पूरा करना चाहिये और अबकारी की नापाक आमदनी को छोड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिये। आख़िर में सचमुच आमदनी का भी नुक़सान नहीं होगा, और लोगों का तो बहुत बड़ा लाभ होगा ही। हमारे लिये तरक्की का यही रास्ता है। यह हमें अपने आप अपने पुरुषार्थ से करना है।

—❀—

: २ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, २–१–'४८

नौआखाली का टोप

शुक्रवार की शाम को पानी बरस रहा था। गाँधीजी अपना नोआखाली का टोप लगाये हुए प्रार्थना की जगह पहुँचे। लोग टोप को देखकर कुछ हँसे। प्रार्थना के बाद गाँधीजी ने कुछ हंसते हुए कहा—

नोआखाली में किसान लोग धूप से बचने के लिए इसे ओढ़ते हैं मैं दो बातों की वजह से इसकी बड़ी कदर करता हूँ। एक तो मुझे यह एक मुसलमान किसान ने भेंट की है। दूसरे यह छतरी का अच्छा काम देती है और उस से सस्ती है, क्योंकि सब गाँव की ही चीज़ों से बनी है।

भजन

प्रार्थना में जो भजन गाया गया है, आपने सुना कितना मीठा है। पर यह भजन असल में सुबह का है। इसमें भगवान से प्रार्थना की गई है कि उठकर इन्तज़ार में खड़े भक्तों को दर्शन दो। यह सत्य है कि ईश्वर कभी सोता नहीं है। भजन में तो भक्त के दिलकी भावना है।

अविश्वास बुजदिली की निशानी है

हाल में अलाहाबाद से मेरे पास एक खत आया है। भेजने वाले भाई ने लिखा है कि थोड़े से भले लोगों को छोड़कर किसी मुसलमान पर यह ऐतबार नहीं किया जा सकता कि वह हिन्द सरकार का

वफ़ादार रहेंगे—ख़ासकर अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में लड़ाई हुई। इसलिए थोड़े से नैशनलिस्ट मुसलानों को छोड़ कर और सब मुसलमानों को निकाल देना चाहिये। मैं कहता हूं कि हर आदमी को यही चाहिये कि जब तक कोई बात इस के ख़िलाफ़ साबित न हो, वह मुसलमानों की बात का ऐतबार करे। अभी पिछले हफ़्ते क़रीब एक लाख मुसलमान लखनऊ में जमा हुये थे। उन्होंने साफ़ शब्दों में अपनी राष्ट्र भक्ति का ऐलान किया। अगर किसी की बेवफ़ाई या बेईमानी साबित हो जावे, तो उसे गोली से मारा भी जा सकता है, गो कि यह मेरा तरीक़ा नहीं है। पर फ़िजूल की बेएतबारी जहालत और बुजदिली की निशानी है। इसी से साम्प्रदायिक नफ़रतें फैली हैं, खून बहे हैं और लाखों बेघर-बार किये गये हैं। यह अविश्वास जारी रहा तो देश के अलग अलग टुकड़े हमेशा के लिये बने रहेंगे। और आख़िर में दोनों डोमिनियन नष्ट हो जावेंगी। भगवान न करे, अगर दोनों में लड़ाई छिड़ गई, तो मैं तो ज़िन्दा रहना पसन्द न करूँगा। पर जो मेरी तरह लोगों में अहिंसा में विश्वास होगा, तो लड़ाई नहीं होगी और सब ठीक ही होगा।

: ३ :

वेवल कैनटीन, नई दिल्ली, ३–१–'४८

शान्ति अन्दर की चीज़ है

शनिवार की शाम को गांधीजी की प्रार्थना वेवल कैनटीन में हुई। प्रार्थना के बाद की उनकी तक़रीर को सुनने के लिये बहुत लोग वहाँ जमा हो गये थे। गांधीजी ने कहा :

मुझे खुशी है कि आज मैं अपना बहुत दिनों का वादा पूरा कर सका और इस कैम्प के शरणार्थियों से बातें कर सका। मुझे बड़ी खुशी है कि यहां जितने भाई हैं, उतनी ही बहनें हैं। मैं चाहता हूँ आप सब मेरे साथ इस प्रार्थना में शामिल हों कि हमारे मुल्क में और दुनियाँ में फिर से शान्ति और प्रेम क़ायम हो। शान्ति बाहर की किसी चीज़ से जैसे दौलत से या महलों से, नहीं मिलती। शान्ति अपने अन्दर की चीज़ है। सब धर्मों ने इस सचाई का ऐलान किया है। जब आदमी को इस तरह की शान्ति मिल जाती है, तो उसकी आंखों, उसके शब्दों और उसके कामों सबसे वह शान्ति टपकने लगती है। इस तरह का आदमी झोंपड़ी में रहकर भी सन्तुष्ट रहता है और कलकी चिन्ता नहीं करता। कल क्या होगा, यह भगवान ही जानते है। श्रीरामचन्द्र को जो हमारी तरह आदमी थे, यह पता नहीं था कि ठीक उस वक्त जब उनके गद्दी पर बैठने की आशा थी, उन्हें बनवास दे दिया जायगा। पर वह जानते थे कि सच्ची शान्ति बाहर की चीज़ों पर निर्भर नहीं है। इसीलिए बनवास के खयाल का उन पर कुछ भी असर न हुआ। अगर हिन्दू और सिक्ख इस सचाई को जानते होते, तो यह पागलपन की लहर उनपर से फिर जाती, और मुसलमान चाहे कुछ भी करते, वह खुद शान्त रहते। अगर यह शब्द हिन्दुओं और सिक्खों के दिलों में घर कर लें तो मुसलमानों पर तो अपने आप उसका असर ज़रूर होगा ही।

कैम्प-जीवन का आदर्श

मैंने सुना है कि यह कैम्प कुछ अच्छी तरह चल रहा है। मैं यह बात तब तक पूरी तरह नहीं मान सकता, जब तक सब शरणार्थी मिलकर इस कैम्प में उससे ज़्यादा सफ़ाई और तरतीबी न रखें, जितनी दिल्ली शहर में दिखाई देती है। आपको जो मुसीबतें भोगनी पड़ी हैं, वह मैं जानता हूँ। आप में से कुछ बड़े बड़े घरों के लोग थे। पर आप के लिए उतने ही आराम की उम्मीद यहाँ करना फिजूल है। आप सबको सीखना चाहिये कि नई जरूरतों के मुताबिक अपने को कैसे ढाला जाय, और जहां तक बन पड़े इस हालत को ज़्यादा अच्छा बनना चाहिये। मुझे याद है, सन् १८९९ की बोअरवार से ठीक पहले अङ्गरेज़ लोग ट्रान्सवाल को छोड़कर वहां से नेटाल गये थे। वे जानते थे मुसीबत का कैसे सामना किया जावे। वे सबके सब बराबर की हैसियतसे रहते थे। उनमें से एक इञ्जीनियर था और दूसरे साथ बढ़ई का काम करता था हम सदियों से विदेशियों के गुलाम रहे हैं, इसलिए हमने यह बात नहीं सीखी। अब जब हम आज़ाद हुये हैं—और आज़ादी कैसी अनमोल बरकत है—मैं उम्मीद करता हूं कि शरणार्थी भाई-बहन अपनी इस मुसीबत से भी पूरा फायदा उठावेंगे। वे अपने इस कैम्प को एक ऐसा आदर्श कैम्प बना देंगे कि अगर सारी दुनियां से नहीं तो सारे हिन्दुस्तान से लोग आ आकर इस पर फ़ख्र करें। प्रार्थना में जो मन्त्र पढ़ा गया है, उसका मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ है, हम सब भगवान के अर्पण कर दें और फिर जितने की हमें सचमुच ज़रूरत हो, उतना ही उसमें से ले लें। अगर हम इस मन्त्र के अनुसार रहें, तो इस कैम्प ही में नहीं सारी दिल्ली में जो हाल में बदनाम हो गई है, फिर से नई जान आ जावेगी और हमारे सबके जीवन अन्दरके सुखसे भर जावेंगे।

—३—

: ४ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, ४-१-'४८

लड़ाई का मतलब

मैं चन्द मिनट देर से आया, क्योंकि पानी बरस रहा था। मुझसे कहा गया कि प्रार्थना की जगह ४-५ आदमी हैं। क्या जाना है? मगर मैंने कहा कि ४-५ आदमी हों या २५, मुझको जाना ही है। यहाँ इतने ज़्यादा आदमी आये हैं उसके लिए मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ। मैं यह मानता हूँ कि आप यहां सिर्फ़ कुतूहल के लिए नहीं आये, बल्कि ईश्वर के भजन के लिए आये हैं। आजकल हर जगह ये बातें चलती हैं कि शायद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच में लड़ाई होगी। यह हमारी कमनसीबी है। हम दोनों आपस में सुलहसे बैठ सकेंगे या नहीं? मैं इस बात से हैरान हो गया कि पाकिस्तान ने बयान निकाला है कि यूनियन ने लड़ाई छेड़ने के लिए यू० ऐन० ओ० के पास अपना केस भेजा है। यह कुछ अच्छी बात नहीं है। तब आप मुझे पूछ सकते हैं कि यूनियन यू० ऐन० ओ० के पास गई वह क्या अच्छी बात है? मैं कहूँगा कि अच्छी भी है और बुरी भी। अच्छी इस वास्ते कि काश्मीर की सरहद पर चढ़ाई होती रहती है, और ऐसा कहा जाता है कि उसमें पाकिस्तान का कुछ हाथ है। ऐसा नहीं है, पाकिस्तान के इतना कह देने ही से काम नहीं चलता। काश्मीर यूनियन के पास मदद माँगे, तो यूनियन के लिए मदद देना ज़रूरी हो जाता है। इसमें गलती है या नहीं, यह तो ईश्वर ही जानता है।

पाकिस्तान से जो बयान निकला है, उसमें गलती है। उनका काम कि बयान निकालने से पहले यहाँ की हुकूमत से मशविरा करते। जाहिर

में कहते हैं कि हम मिलना चाहते हैं, लेकिन उस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाते। मैं पाकिस्तान के नेताओं से यह कहूँगा कि जब देश के टुकड़े हो गये, तब किसी तरह लड़ाई होनी ही नहीं चाहिये। धर्म के नाम पर पाकिस्तान कायम हुआ। इसलिये उसको सब तरह से पाक और साफ़ रहना चाहिये। गलतियां दोनों तरफ काफ़ी हुई। मगर अब भी गलतियां करते ही रहें? अगर हम दोनों लड़ेंगे, तो दोनों तीसरी ताक़त के हाथ में चले जायेंगे। इस से बुरी बात और क्या होगी? दोनों को ईश्वर को साक्षी रखकर आपस में मिलना चाहिये। यू० ऐन० ओ० के पास जो गया है, उसे कौन रोक सकता है? एक ही ताकत अब तो रोक सकती है—वह है दोनों की सद्भावना और मेल जोल अगर हम अभी भी आपस में समझ लें और यू० ऐन०ओ० के पास से केस उठा लें तो वह राज़ी ही होगी। वह कोई खिलौना थोड़ा ही है। मगर जब हम मजबूर हो जाते हैं, तभी उसके पास जाते हैं। मैं तो अभी भी ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि वह हमें लड़ाई से बचाले। मगर यह समझौता दिल का होना चाहिये। अगर मन में दुश्मनी बनी रहे, तो वह तो लड़ाई से बदतर है। उससे तो अच्छा यही होगा कि ईश्वर दोनों को जी भर कर लड़ा दे। शायद उसमें से हमें कभी साफ़ होना होगा, तो होंगे।

बुजदिली से भी बुरा

दिल्ली में कल रात जो हुआ, उस से हमें लज्जित होना चाहिये। कहा जाता है कि खारी बावड़ी में दुःखी स्त्रियों और बच्चों को आगे करके पुरुष लोग मुसलमानों के खाली मकानों में चले गये और जहाँ मुसलमान रहते थे, वहां कब्ज़ा लेने की कोशिश करने लगे। मगर पुलिस आई और उसने टीअर गैस छोड़ी, तब शान्ति हुई। शरणार्थी

अपने दुःख से इतना तो सीखें कि मर्यादा से कैसे रहना चाहिये। इस तरह अन्धाधुन्धी मचा कर हम अपनी हुकूमत को बेकार करते हैं। क्या यहाँ देश विदेश के जो एलची आये हैं, उन्हें हमारा झगड़ा ही देखनेको मिलेगा ? ऐसा हुआ तो वे लोग कहेंगे कि इनको राज चलाना ही नहीं आता। इस तरह औरतों और बच्चोंको आगे रखना इन्सानियत की बात नहीं है। पुराने ज़माने में लोग गायों को आगे रखकर लड़ते थे, ताकि हिन्दू लड़ न सकें। लेकिन वह असभ्यता की निशानी थी। हम इस तरह औरतों का दुरुपयोग करते हैं। अगर हम हिन्दुस्तानको आज़ाद ही रखना चाहते हैं, तो हमें ऐसी चीज़ों से बचना चाहिये।

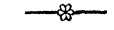

: ५ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, ५–१–'४८

अंकुश हटने का नतीजा

मेरे पास बहुत से ख़त और तार आ रहे हैं, जिनमें लोग अंकुश उठनेपर मुझे मुबारकबाद देते हैं, और जिन चीज़ोंपर अभी अंकुश है उसे भी हटाने को कहते हैं। अंग्रेजी में लिखा हुआ एक ख़त मैं यहाँ देता हूँ। ख़त लिखने वाले भाई एक खासे अच्छे व्यापारी हैं। उन्होंने मेरे कहने से अपने बिचार लिखे हैं :—

"आपके कहने के मुताबिक मैं चीनी, गुड़, शक्कर और दूसरी खाने की चीज़ों का भाव और अंकुश उठने से पहले का भाव नीचे देता हूँ :

आजकल का भाव	नवम्बरमें अंकुश उठनेसे पहलेका भाव
चीनी ३७॥ रु० मन	८० से ८५ रु० मन
गुड़ १३ से १५ रु० मन	३० से ३२ रु० मन
शक्कर १४ से १८ रु० मन	३७ से ४५ रु० मन
चीनी के क्यूब ॥≡) आनेका एक पैकेट	१॥ से १॥। रु० का एक पैकेट
चनी देशी ३० से ३५ रु० मन	७५ से ८० रु० मन

"आप देखते हैं कि चीनी आदि का भाव ५० फ़ी सैकड़ा गिर गया है।

अनाज

गेहूँ १८ से २० रु० मन	३० से ५० रु० मन
चावल बासमती २५ रु० मन	४० से ४५ रु० मन
मकई १५ से १७ रु० मन	३० से ३२ रु० मन
चना १६ से १८ रु० मन	३८ से ४० रु० मन
मूँग २३ रु० मन	३५ से ३८ रु० मन
उड़द २३ रु० मन	३४ से ३७ रु० मन
अरहर १८ से १६ रु० मन	३० से ३२ रु० मन

दालें

चने की दाल २० रु० मन	३० से ३२ रु० मन
मूंग की दाल २६ रु० मन	३६ रु० मन
उड़द की दाल २६ रु० मन	३७ रु० मन
अरहर की दाल २२ रु० मन	३२ रु० मन

तेल

सरसों का तेल ६५ रु० मन	७५ रु० मन

ऊनी और रेशमी कपड़ा

"अंकुश निकल जाने के कारण बाजार में बेतहाशा ऊनी और रेशमी कपड़ा आ गया है। ऊनी और रेशमी कपड़े की कीमत कम से कम ५० फ़ी सैकड़ा गिर गई है। कई जगह ६६ फ़ी सैकड़ा भी गिरी है।

सूती कपड़ा और सूत

"इस आशा से कि सूती कपड़े और सूत पर से भी अंकुश जल्दी ही निकल जायेगा, कीमतें धीरे धीरे गिर रही हैं। अगर सूती कपड़े पर से पूरी तरह अंकुश उठा लिया जाय, तो कीमत कम से कम ६० फ़ी सैकड़ा गिर जायगी, और कपड़ा भी ज़्यादा अच्छा मिलने लगेगा। मिल-मालिकों को एक-दूसरे के साथ मुकाबला करना पड़ेगा। रेशमी और ऊनी कपड़े की तरह, अंकुश उठ जाने से सूती कपड़ा भी ढेरों मिलने लगेगा। सूती कपड़े पर से अगर अंकुश उठाया गया, तो उसे सफल बनाने के लिए कम से कम तीन साल तक हिन्दुस्तान से बाहर कपड़ा भेजने की मनाही होनी चाहिए।

"सरकारी दफ़्तरों के आँकड़े तो जादू के खेल-से रहढे हैं। वे खुराक और कपड़े परसे अंकुश उठाने के रास्ते में नहीं आने चाहियें।

पेट्रोल का रेशनिंग

"पेट्रोल पर अंकुश तो युद्धके कारण लगाया गया था। अब उसकी ज़रूरत नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि इस कंट्रोल से थोड़ी सी ट्रान्सपोर्ट कंपनियों को फायदा पहुँच रहा है और वे इसे रखना चाहती हैं। करोड़ों जनता का तो इसके साथ कोई संबन्ध ही नहीं है। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि एक एक बस या ट्रक का मालिक, जिसके पास एक ही रास्ते का लाइसेन्स है, आज १०–१५ हजार रुपये हर महीने कमा रहा है। अगर पेट्रोल पर अंकुश न रहे और गाड़ियाँ चलाने में किसी एक के इजारे का रिवाज न रहे, तो एक गाड़ी का मालिक महीने में ३०० रु० से ज़्यादा नहीं कमा सकता। आज तो पेट्रोल की चिट्ठियों की तिजारत होती है। एक लारी की पेट्रोलकी चिट्ठी

आज किसी ट्रान्सपोर्ट डीलर के पास १० हजार में बेची जा सकती है। अगर पेट्रोल पर से अंकुश हटा दिया जाय, तो खुराक, कपड़े और मकानों का प्रश्न और कई दूसरे प्रश्न, जो आज देश के सामने हैं, अपने आप हल हो जावेंगे। पेट्रोल के राशनिङ्ग से ट्रान्सपोर्ट कम्पनियाँ पैसे कमा रही हैं और करोड़ों लोगों का जीवन बरबाद हो रहा है।

"अंकुश हटवाकर आप दुःखी जनता सेवा करें, तब यह देश चन्द खुशकिस्मतों के रहने लायक ही नहीं, बल्कि करोड़ों बदकिस्मतों के रहने लायक भी बनेगा। अंकुश लड़ाई के जमाने के लिए थे। आज़ाद हिन्द में उनका कोई स्थान नहीं होना चाहिये।"

मुझे लगता है कि इन आँकड़ों के सामने कुछ नहीं कहा जा सकता हो सकता है कि यह बात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा हो। अगर ऐसा है तो ज़्यादा जानकार लोग दूसरे आँकड़े बताकर मेरा अज्ञान दूर करने की कृपा करें। मैंने ऊपर लिखी बातें मान ली हैं, क्योंकि जानकार लोगों का मत भी इसी तरफ़ है।

जब जनता किसी बात को मानती है और कोइ चीज़ चाहती है, तब लोकराज में झिझक को कोई स्थान नहीं रहता। जनता के प्रतिनिधियों को जनता की माँग ठीक रूप में रखनी चाहिये, ताकि वह पूरी हो सके। जनता का मानसिक सहकार तो बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ जीतने में बहुत मदद दे चुका है।

कहते हैं कि दुनिया में जितना पेट्रोल निकलता है, उसका एक फ़ी सैकड़ा ही हिन्द को मिलता है। इससे निराश होने का कारण नहीं। हमारी मोटरें तो चलती ही हैं। क्या इसका यह मतलब है कि क्योंकि हम युद्ध करने वाले लोग नहीं हैं, इसलिए हमें ज़्यादा पेट्रोल की ज़रूरत ही नहीं। और, अगर हमें ज़्यादा ज़रूरत पड़े और दुनिया में

जितना पेट्रोल निकलता है, उतना ही निकले तो बाकी दुनिया के लिए पेट्रोल कम पड़ेगा ? टीकाकार मेरे घोर अज्ञान की हँसी न करें। मैं तो प्रकाश चाहता हूँ। अगर मैं अपना अँधेरा छिपाऊँ, तो प्रकाश पा नहीं सकता। सवाल यह उठता है कि अगर हमारे हिस्से में बहुत कम पेट्रोल आता है, तो काले-बाजार में पेट्रोल का अटूट जखीरा कहाँ से आता है, और गाड़ियों का फिजूल आना-जाना बिना किसी तरह की रुकावट के कैसे चलता है ?

पत्र लिखने वाले भाई ने जो हकीकत बयान की है, यह सच्ची हो, तो चौंकने वाली चीज़ है। अंकुश अमीरों के लिए आशीर्वाद रूप है, और गरीब के लिए लानत। और अंकुश रखा जाता है गरीबों के खातिर। अगर इजारे का रिवाज इसी तरह काम करता है, तो उसे एक पल भी बिचार किये बिना निकाल देना चाहिये।

कपड़े का कंट्रोल

कपड़े के बारे में तो अगर खादी को, जिसे आज़ादी की वर्दी कहा गया है, हम भूल नहीं गये, तो कपड़े पर अंकुश रखने के पक्ष में तो एक भी दलील नहीं है। हमारे पास काफी रुई है, और काफी हाथ हैं जो देहातों में चरखा और करघा चला सकते हैं। हम आराम से अपने लिए कपड़ा तैयार कर सकते हैं। न उसके लिए शोर-गुल की ज़रूरत है, न मोटर-लारियों की। पुराने राज में हमारी रेलों का पहला काम फ़ौज की सेवा था, दूसरे नम्बर पर बन्दरगाहों पर रुई ले जाना, और बाहर से बना कपड़ा भीतर ले आना था। जब हमारी केलिको, जिसे खादी कहते हैं, देहातों में बनती है, और वही खपती है, तब इस केन्द्रीकरण की कोई ज़रूरत नहीं रहती। अपने आलस या अज्ञान, या दोनों को छिपाने के लिए हम अपने देहातों को गाली न दें।

: ६ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, ६–१–'४८

यह दबाव बन्द होना चाहिये

मैंने सुना है कि बहुत से शरणार्थी अभी भी खाली मुस्लिम घरों का कब्जा लेने की कोशिश कर रहे हैं और पुलिस भीड़ को हटाने के लिए टीयर-गैस का इस्तेमाल कर रही है। यह सच है कि शरणार्थियों को बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता है। दिल्ली की कड़ाके की सर्दी में खुले सोना बड़ा कठिन है। जब पानी गिरता है, तब खेमों में काफी हिफाजत नहीं हो सकती। अगर शरणार्थी मुस्लिम घरों को अपना निशाना न बनावें, तो मैं उनके मकानों के लिए शोर मचाने को समझ सकता हूँ। मिसाल के तौर पर वे बिड़ला-भवन में आ सकते हैं और मुझे और एक बीमार महिला के साथ घर के मालिकों को बाहर निकाल कर उसपर कब्जा कर सकते हैं। यह खुली और सीधी बात होगी, हालांकि भले आदमियों को शोभा देने वाली नहीं होगी। आज मुसलमानों को जिस तरह दबाया और अपने घरों से निकाला जा रहा है, वह बेइमानी और असभ्यता का काम है। पहले से डरे हुए मुसलमानों को धमकाकर घरों से बाहर निकालना और फिर उनके घरों पर कब्जा कर लेना किसी के लिए अच्छी बात नहीं होगी। इससे किसी को फायदा नहीं होगा। मैंने सुना है कि आज सरकार ने दूसरी जगह शरणार्थियों को थोड़े मकान देने का सुझाव किया है, लेकिन वे मुसलमानों के घरों पर कब्जा करने की जिद करते हैं। इससे साफ़ जाहिर होता है कि शरणार्थी अपनी ज़रूरत के कारण मुसलमानों के घरों पर कब्जा नहीं करते, बल्कि वे चाहते हैं कि दिल्ली से मुसलमानों को साफ कर दिया जाय। अगर आप लोग यही चाहते हैं, तो मुसलमानों को टेढ़े तरीके से भगाने के बजाय उनसे ऐसा साफ़

कह देना कहीं बेहतर होगा। यूनियन की राजधानी में ऐसा काम करने का नतीजा उन्हें समझ लेना चाहिये।

हड़तालों का रोग

बंबई की खबर है कि वहां जहाज़ गोदाम के और दूसरे मज़दूर हड़ताल करने की बात सोच रहे हैं। मैं सारे लोगों से अपील करता हूँ कि वे हड़ताल न करें, फिर भले वे कांग्रेसी हों, सोशलिस्ट पार्टी के हों—अगर सोशलिस्ट कांग्रेस से अलग माने जा सकें—या कम्युनिस्ट पार्टी के हों। आज हड़तालों का वक्त नहीं है। ऐसी हड़तालें हड़ताल करने वालों को और सारे देश को नुकसान पहुँचाती हैं।

सच्चा लोक-राज

औंध के राजा साहब ने अपनी प्रजा को कई बरस पहले उत्तरदायी शासन दे दिया था। उनके पुत्र अप्पा साहब ने भी अपनी प्रजा की सेवा में जिन्दगी लगादी है। राजा साहब और दूसरे कुछ लोगों ने यूनियन में मिल जाने की योजना को करीब करीब मान लिया है। सरदार पटेल ने कहा है कि राजाओं को पेन्शन मिलेगी, लेकिन मेरा विश्वास है कि औंध के राजा साहब प्रजा पर बोझ नहीं बनेंगे। जो उन्हें मिलेगा, उसे वे प्रजा की सेवा करके कमाना चाहेंगे। राजा साहब ने मुझे लिखा है कि उन्होंने अपने राज में जो पंचायत तरीका चालू किया है, वह क्या राज के यूनियन में मिल जाने पर भी जारी नहीं रह सकेगा? राजा साहब से यह कहा गया है कि उनके राज के यूनियन में मिल जानेपर यहाँ की हकूमत का ढाँचा बाकी के हिन्दुस्तान के ढांचे से मिलना चाहिये। मेरी राय में जहाँ लोग पंचायत राज चाहते हैं, वहाँ उसे काम करने से रोक सकने के लिए कोई कानून बिधान में नहीं है। औंध एक रियासत के नाते भले खतम हो जाय, लेकिन वहाँ औंध नाम से पुकारा जाने वाला गाँव का खास ग्रूप तो

कायम रहेगा। ऐसा हर ग्रूप या उसका कोई मेम्बर अपने यहाँ पंचायत राज रख सकता है, भले बाकी के हिन्दुस्तान में वह हो या न हो। सच्चे हक फ़र्ज़ अदा करने से मिलते हैं। ऐसे हकों को कोई छीन नहीं सकता। ऑंध में पंचायत लोगों की सेवा करने के लिए है। हिन्दुस्तान के सच्चे लोकराज में शासन की इकाई गाँव होगा। अगर एक गाँव भी पंचायत राज चाहता है, जिसे अंग्रेजी में रिपब्लिक कहते हैं, तो कोई उसे रोक नहीं सकता। सच्चा लोक-राज केन्द्र में बैठे हुए २० आदमियों से नहीं चल सकता। उसे हर गाँव के लोगों को नीचे से चलाना होगा।

आवक-जावक में समतोल होना चाहिये

एक दोस्त ने मुझे खत लिखा है। उसमें उन्होंने कहा है कि किसी भी सुखी और खुशहाल देश में माल की आवक और जावक में समतोल होना चाहिये। इसलिए उन्होंने सुझाया है कि हिन्दुस्तान को माल की आवक इतनी सीमित कर देनी चाहिये कि वह उसकी जावक से कुछ कम रहे। अगर आजकी तरह चलता रहा, तो हिन्दुस्तान के साधन जल्दी ही खतम हो जायंगे। इसलिए उन्होंने सुझाया है कि खिलौने और दूसरी ऐसी गैर-ज़रूरी चीज़ें बाहर से मँगाना बंद कर दी जायं। इसके अलावा, हिन्दुस्तान आज तक अपना कच्चा माल बाहर भेजता रहा है और बाहर से तैयार माल मगाता रहा है। इससे आवक-जावक के समतोल को ज़रूर धक्का पहुँचेगा और हिन्दुस्तान कई तरह से गरीब हो जायगा। मैं ख़त लिखने वाले भाई की यह बात मानता हूँ कि हिन्दुस्तान को ज़्यादा से ज़्यादा स्वावलंबी बनना चाहिये, और हिन्दुस्तान और दूसरे देशों के बीच का व्यापार हमेशा आपसी मदद के उसूल पर टिकना चाहिये, शोषण पर कभी नहीं।

—❀—

: ७ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, ७–१–'४८

गलत उपवास

मेरे पास बहुत सी चिट्ठियां आ गई हैं। मुझे अपना भाषण १५ मिनट में पूरा करना चाहिये। इसलिए हो सकेगा उतनी चिट्ठियों का जवाब देने की कोशिश करूंगा।

एक भाई लिखते हैं कि वे उपवास कर रहे हैं और उनका उपवास चालू रहेगा। ऐसा उपवास अधर्म है। जो आदमी अधर्म करना चाहे, उसे कौन रोक सकता है? मैंने काफी उपवास किये हैं। इस बारे में मैं काफी जानता हूँ। इसलिए मैं मानता हूँ कि मुझे पूछकर उपवास करना चाहिये।

विद्यार्थियों की हड़ताल

अखबारों में आया है कि ९ तारीख से विद्यार्थी लोग हड़ताल करनेवाले हैं। यह बड़ी गलत बात है। हड़ताल करके अपना काम निकालना ठीक नहीं। मैंने काफी हड़तालें करवाई हैं और उनमें सफलता भी पाई है। लेकिन मैं जानता हूँ कि हर एक हड़ताल सच्ची नहीं होती, अहिंसक नहीं होती। विद्यार्थी-जीवन में इस तरह हड़तालें करना ठीक नहीं।

पाकिस्तान से आये शरणार्थियों की शिकायतें

आज मेरे पास कई दुःखी लोग आये थे। वे पाकिस्तान से आये हुए लोगों के प्रतिनिधि थे। उन्होंने अपने दुःख की कहानी

सुनाई। मुझ से कहा कि आप हम में दिलचस्पी नहीं लेते। लेकिन उन्हें क्या पता कि मैं आज यहां इसीलिए पड़ा हूं। मगर आज मेरी दीन हालत है। मेरी आज कौन सुनता है? एक ज़माना था, जब लोग मैं जो कहूं सो करते थे। सबके सब करते थे, यह मेरा दावा नहीं। मगर काफी लोग मेरी बात मानते थे। तब मैं अहिंसक सेना का सेनापति था। आज मेरा जंगल में रोना समझो। ,मगर धर्मराज ने कहा था कि अकेले हो तो भी जो ठीक समझो, वही करना चाहिये। सो मैं कर रहा हूं। जो हकूमत चलाते हैं, वे मेरे दोस्त हैं। मगर मैं कहूं उसके मुताबिक सब चलते हैं ऐसा नहीं है। वे क्यों चलें? मैं नहीं चाहता कि दोस्ती के खातिर मेरी बात मानी जाय। दिल को लगे तभी माननी चाहिये। अगर मैं कहूं उसी तरह सब चलें, तो आज हिन्दुस्तान में जो हुआ और हो रहा है, वह नहीं हो सकता था। मैं कोई परमेश्वर तो हूं नहीं। तो भी मुझसे दुःखी भाई पूछते हैं कि हमारे रहने, खाने और पहनने का कुछ प्रबन्ध तो होना चाहिये।

शरणार्थियों का फ़र्ज़

बात सही है। शरणार्थियों ने क्या गुनाह किया? वे तो बेगुनाह हैं। हमारे भाई हैं। मुझे जो मिलता है, वह उन्हें न मिले, यह इन्साफ नहीं। उन्हें शिकायत करने का हक है। मैं कहूंगा कि वे मकान भले माँगें, मगर साथ साथ मैं उनसे यह भी कहूंगा कि उन्हें जो काम दिया जाय और उनसे हो सके, सो उन्हें करना चाहिये। जो घर मिले उसमें रहना चाहिये। घास-फूस की झोपड़ी मिले, तो उसमें भी आनन्द से रहना चाहिये। वे ऐसा न कहें कि हमें महल ही चाहिये जो खाना-कपड़ा मिले, उसमें उन्हें सन्तोष मानना चाहिये। घास के बिछौने से रुई की गादी का काम चल जाता है। अगर हम ऐसे सीधे

रहें, तो ऊंचे चढ़ सकते हैं। मज़दूर लिखना पढ़ना नहीं कर सकता, मगर लिखने-पढ़ने वाला मज़दूरी तो कर सकता है।

कराची की वारदातें

कराची में क्या हो गया, आपने देखा ही होगा। सिन्ध में हिन्दू और सिक्ख आज रह नहीं सकते। जिस गुरुद्वारे में वे लोग सिन्ध से आने के लिये रुके थे, उसी गुरुद्वारे पर हमला हुआ। हकूमत कहती है कि वह लाचार हो गई है। रोक नहीं सकी। पर दबाने की कोशिश करती है। इस तरह हकूमत वाले लाचार हो जाते हैं, तो उन्हें हकूमत छोड़ देनी चाहिये। फिर भले ही लोग लुटेरे बन जायँ। यह बात मैं दोनों हकूमतों से कहता हुँ। मेरी निगाह में दोनों हकूमतों में कोई फ़र्क़ नहीं है। पाकिस्तानी हकूमत लोगों को मरने दे, उसके पहले तो उसे खुद मरना है।

—※—

: ८ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, ८–१–'४८

एक भाई लिखते हैं कि उन्होंने कल साढ़े तीन बजे एक पत्र मुझे भेजा था। लेकिन अभी तक उन्हें जवाब नहीं मिला। मेरे पास इतने ख़त आते हैं कि मैं सब पढ़ नहीं सकता। फिर वे अलग अलग भाषाओं में रहते हैं। दूसरे लोग पढ़कर जो मुझे बताने जैसा होता है, सो बता देते हैं। किसी आवश्यक बात का जवाब रह गया हो, तो इन भाई को अपनी बात दोहरानी चाहिये थी।

हरिजन और शराब

एक भाई पूछते हैं कि मैंने पिछले हफ़्ते कहा था कि हरिजनों को शराब छोड़नी चाहिये। तो क्या हरिजन ही छोड़ें और पैसे वाले या सोलजर लोग न छोड़ें? सब के लिये एक कानून क्यों न बने? यह प्रश्न पूछने जैसा नहीं है। दूसरे पाप करें, तो क्या हम भी पाप करें? जो समझदार है, उनके लिये कानून क्यों चाहिये? उनको सोच-समझकर अपने आप ही शराब छोड़ देनी चाहिये। हरिजन अनपढ़ हैं, वे मज़दूरी करते हैं। उनको आराम या मनबहलाव का कोई साधन नहीं मिलता। इसलिए वे शराब पीकर अपना दुःख भूलना चाहते हैं। मगर पैसे वालों और सोलजरों को तो शराब पीने का इतना भी कारण नहीं। फ़ौजी लोग कहेंगे कि शराब के बिना उनका काम कैसे चल सकता है? मगर मैं फ़ौज को ही ठीक नहीं मानता, तो फिर शराब को ही क्या मानने वाला हूँ? मगर फ़ौजियों में भी मेरे काफ़ी दोस्त हैं। उनमें हिन्दुस्तानी भी हैं

और काफ़ी अंग्रेज भी, जो शराब नहीं पीते । शराबबन्दी का कानून ऐसा नहीं कहेगा कि पैसे वाले सराब पीयें और हरिजन मज़दूर न पियें ।

विद्यार्थियों में सब पार्टियां हैं

एक भाई लिखते हैं कि विद्यार्थियों की हड़ताल होने की जो बात है, उसमें कांग्रेसी विद्यार्थी शामिल नहीं हैं । यह तो कम्युनिस्ट विद्यार्थियों की हड़ताल है । विद्यार्थियों में भी सब पार्टियां होती हैं । कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट वगैरा । मेरी सलाह तो सब के लिए है । कांग्रेस के विद्यार्थी हड़ताल में शामिल नहीं हैं, तो वे बधाई के पात्र हैं । मगर कम्युनिस्ट पार्टी के विद्यार्थी हड़ताल कर सकते हैं, यह बात थोड़े ही है । कम्युनिस्ट भाई होशियार हैं, वे देश की सेवा करना चाहते हैं । मगर इस तरह देश की सेवा नहीं होती । फिर विद्यार्थी किसी भी पार्टी का पक्ष क्यों लें ? विद्यार्थियों का तो एक ही पक्ष है । वह है विद्या सीखना । और वह भी देश के खातिर, अपना पेट भरने के लिए नहीं । हड़ताल उनके लिए और देश के लिए घातक है । काम निकालने के दूसरे बहुत से रास्ते हैं । पहले जब आज़ादी नहीं मिली थी, तब हड़तालें होती थीं । मैंने खुद कई हड़तालों में हिस्सा लिया और उन्हें सफल बनाया है । मगर सब हड़तालें सचाई के खातिर होती हैं, सब अहिंसक होती हैं ऐसा भी नहीं । आज हकूनत हमारे हाथ में है । यह हड़तालों का मौका नहीं । आज देश को ज़्यादा विद्यार्थी और सच्चे विद्यार्थी चाहियें । इसलिए मेरी उनसे बिनती है कि वे हड़ताल न करें ।

सत्याग्रह क्यों नहीं ?

एक प्रश्न आया है। अच्छा है। उस में लिखा है कि आप बुरी वस्तुओं का त्याग करवाना चाहते हैं। खुद भी ऐसा करते हैं यह अच्छा है। तब आप पाकिस्तान जाकर वहाँ वालों से बुराई क्यों नहीं छुड़ाते ? वहाँ जाकर आप सत्याग्रह क्यों नहीं करते ? यहाँ तो आपने काफी काम कर दिया। अब वहाँ भी जाइये। मैंने इसका जवाब दे दिया है। आज मैं किस मुंह से पाकिस्तान जा सकता हूँ ? यहाँ हम पाकिस्तान की चाल चलें, तो वहाँ के लोगों को जाकर मैं क्या कहूँ ? वहाँ मैं तभी जा सकता हूँ, जब हिन्दुस्तान ठीक बन जाय और यहाँ के मुसलमानों को कुछ शिकायत न रह जाय। मुझे तो यही करना है या मरना है। दिल्ली में हिन्दू और सिख पागल हो गये हैं। वे चाहते हैं कि यहाँ के सब मुसलमानों को हटा दिया जाय। बहुत से तो चले गये। जो बाकी हैं उन्हें भी हटा दें, तो हमारे लिए लज्जा की बात होगी। पाकिस्तान से हिन्दू-सिक्ख आ जाना चाहते हैं, तो वहाँ सत्याग्रह कौन करे ? आज सत्याग्रह कहाँ रहा है ? सत्याग्रह नहीं है, तो अहिंसा भी नहीं है। अहिंसा भी आज कौन मानता है ? आज सबको मिलिटरी चाहिये। हमने मिलिटरी को ईश्वर की जगह दे दी है। इसका मतलब है कि सब अहिंसा के पुजारी बन गये हैं। हिंसा के पुजारी सत्याग्रह कैसे चला सकते हैं ? मेरी सुनें, तो आज अखबारों की भी शकल बदल जाय। आज अखबारों में कितनी गन्दगी भरी रहती है ? हम सत्याग्रह को भूल गये हैं। सत्याग्रह हमेशा चलने वाली चीज़ है। मगर चलाने वाले सत्याग्रही भी तो चाहियें।

यूनियन में साम्प्रदायिकता को जगह नहीं

फिर वह भाई कहते हैं कि जब तक यहाँ से मुसलमानों को

नहीं निकालेंगे, तब तक पाकिस्तान से जो हिन्दू और सिक्ख आये हैं, उनके लिए जगह कहाँ से आयेगी ? मैं मानता हूँ कि जितने हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तान से आये हैं, करीब करीब उतने मुसलमान यहाँ से चले गये हैं। बाकी जो पड़े हैं, उन्हें हटाने की चेष्टा हो रही है। यह सब पागलपन की बात है हिन्द में मुसलमानों की काफ़ी ताकाद पड़ी है। इसलिए मौलाना साहब ने लखनऊ में कान्फरेन्स बुलाई थी। उसमें ७० हजार लोग आये थे। इस जमाने में इतनी बडी मुसलमानों की सभा कहीं नहीं हुई। उसके बारे में अच्छी बुरी बातें सुनी हैं। उन्हें मैं छोड़ देना चाहता हूँ। यहाँ जो मुसलमान हैं, उनके प्रतिनिधि उस कान्फरेन्स में गये थे। क्या हम इन मुसलमानों को मार डालें या पाकिस्तान भेज दें ? मेरी जबान से ऐसी चीज़ कभी नहीं निकलनेवाली हैं। हमें दुनिया की बुराइयों की नकल थोड़े ही करनी है !

बहावलपुर का डेपुटेशन

आज मेरे पास बहावलपुर के लोग आये थे। मीरपुर (काश्मीर) के लोग भी आये थे। वे परेशान हैं। वे लोग अदब से बातें करते थे। वे बैठे थे, इतने में पंडित जी आ गये। पंडित जी से भी उनकी बातचीत हुई। मुझे उम्मीद है कि कुछ न कुछ हो जायगा। पूरा हो जायगा, यह मैं नहीं समझता। आज लड़ाई छिड़ तो नहीं गई है। मगर एक किस्म की लड़ाई चल रही है। जैसी हालत में रास्ता निकालना, सबको वहाँ से निकालकर लाना बहुत कठिन है। जितना हो सकेगा, उतना करेंगे। इतना करने पर भी कोई न बच सका या न लाया जा सका, तो क्या किया जाय ?, हमारे पास जितनी चाहिये उतनी गाड़ियाँ नहीं हैं। काश्मीर का रास्ता खुला नहीं है।

थोड़ा सा रास्ता है, उससे इतनी बड़ी तादाद को लाना मुश्किल है। बहावलपुर की बात सुनने लायक है। वहाँ के लोगों को भी यही कहूँगा कि एक इन्सान जो कर सकता है, मैं कर रहा हूँ। वे लोग कहते हैं कि जो लोग दूसरे सूबों से आये हैं, वे यहाँ नौकरी वगैरा के लिये दरख़ास्त कर सकते हैं; लेकिन रियासत वाले नहीं। सरदार पटेल ने कहा है कि ऐसा फ़र्क़ नहीं होंगा, फिर भी होता है। मैं समझता हूँ कि ऐसा नहीं हो सकता। हाना नहीं चाहिये। मैं पता लगाऊँगा। इसमें कुछ ग़ैरसमझ होगी। अगर ऐसा है, तो हुकूमत वालों को उसे तुरन्त सुधारना होगा।

: ६ :

बिड़ला भवन, नई दिल्ली, ६–१–'४८

बहादुरी और धीरज की जरूरत

कल मैंने बहावलपुर के बारे में बात की थी । बहावलपुर में जो मन्दिर था—मन्दिर तो आज भी है पर किसी हिन्दू के हाथों में नहीं है, न हिन्दू की वहां चल सकती है—उस मन्दिर के मुखिया आज मेरे पास आये थे। उन्होंने देखा था किस तरह वहां हिन्दू जान बचाने के लिए भागे थे। उन्होंने आकर मन्दिर में शरण ली, पर वहां भी वे सुरक्षित नहीं थे । आखिर वहां से पिछले दरवाजे से भागे। साथ मुखिया भी भागे। कितने ही मर गये । कई औरतों को बचाया। सबको नहीं बचा सके । जो वहाँ पड़े हैं, उनको बचाने के लिए वे कहते थे। मैंने कहा कि इन्सान से जो हो सकता है, वह हो रहा है। मगर दो हुकूमतें बन गई हैं। देश के दो टुकड़े हो गये हैं। एक राज में दूसरे राज को दखल देने का हक़ नहीं । फिर भी जो हो सकता है, वह सब कर रहे हैं। आज ऐसा मौका है कि हममें बहुत धीरज और बहादुरी होनी चाहिये । मौत [redacted]ना नहीं चाहिये । जो आदमी अपने मान और धर्म को बचाने के लिए मरने को तैयार है, उसका अपमान हो नहीं सकता। मरना सबको है—आज [redacted]ा कल। इसलिए मौत से डरना क्या ? आखिर हमें ईश्वर पर ही भरोसा रखना चाहिए। उसकी इच्छा के बिना कुछ हो ही नहीं सकता।

रहने के घरों की समस्या

आज मेरे पास कुछ दुःखी बहनें और भाई आये थे। वे भिखारी नहीं हैं। उनके पास थोड़ा पैसा है। पास ही किसी मुसलमान की कोठी में वे तीन चार महीनों से हैं। मुसलमान डर से भाग गया है। जहाँ मुसलमान भाई गये हैं, वहाँ से ये हिन्दू भाई आये हैं। मुसलमान

ने कहा मेरी कोठी में जाकर रहो, सो रहने लगे। अभी हुकूमत का हुक्म आया कि कोठी खाली कर दो। किसी दूसरी हुकूमत के ऐलची के लिये उसकी ज़रूरत है। मैं मानता कि उन्हें बाहर के ऐलची वग़ैरा के लिए मकान चाहिए, तो वह खाली करना चाहिये। पर बदले में उन्हें रहने की जगह मिलनी चाहिये। रामायण वग़ैरा में पढ़ा है कि उन दिनों मन्त्र के ज़ोर से शहर खड़े हो जाते थे। आज वह हो नहीं सकता। वह मन्त्र हमारे पास नहीं है। पहले भी था या नहीं, वह भी मैं नहीं जानता हूँ। इसलिये जो मकान हुकूमत को चाहिये, वह ले; लेकिन जिनसे ले, उनके लिये दूसरा इन्तज़ाम तो होना चाहिये। उन्हें सड़क पर बैठने को कोई हुकूमत नहीं कह सकती। पर मैं उन्हें पूरी तसल्ली नहीं दे सका। मैंने कहा, मैं हुकूमत नहीं चलाता हूँ, हुकूमत का सिपाही भी नहीं हूँ। मेरा अपना घर भी नहीं। मैं मानता हूँ कि उनकी बात सही नहीं है। अगर है, तो बड़े दुःख की बात है। जो आदमी कानून से किसी मकान में रहते हैं, उनको ऐसा नोटिस नहीं दिया जा सकता। जो लुटेरा होकर किसी के घर में घुस बैठता है, उसे तो निकालें नहीं तो क्या करें? पर कानून से रहने वालों को ऐसे नहीं निकाल सकते।

एक ग़लतफ़हमी

एक भाई लिखते हैं कि पहले मैंने कहा था कि बम्बई में एक आदमी को एक सेर चावल रोज़ मिलता है। मैंने एक दिन का नहीं कहा था, एक हफ़्ते का कहा था। एक सेर रोज़ का बहुत हुआ। वे कहते हैं एक सेर नहीं, पाव सेर रोज़ मिलता है। मेरी निगाह में वह भी अच्छा है। पहले इतना नहीं मिलता था। एक हफ़्ते का एक सेर मिलता था। अगर मैंने एक दिन का कहा है, तो वह भूल है। यह समझना चाहिये कि आज एक सेर चावल रेशन में कैसे दिये जा सकते हैं?

बिड़ला-भवन में क्यों ?

दूसरे भाई लिखते हैं—बिड़ला-भवन में आप हैं, प्रार्थना होती है, पर ग़रीब नहीं आ सकते। पहले आप भङ्गी-बस्ती में रहते थे। अब वहाँ क्यों नहीं रहते ? यह ठीक है कि यहां ग़रीब नहीं आ सकते। मैं जब दिल्ली आया था, उस समय दिल्ली में मारपीट चल रही थी। दिल्ली मरघट-सा लगता था। शरणार्थियों से भङ्गी-बस्ती भरी थी। सरदार पटेल ने कहा, आपको वहां नहीं रख सकता। बिड़ला-भवन में रहना है। सो यहाँ रहा। मेरे लिये शरणार्थियों को हटाना ठीक न था। और मैं एक कमरे में तो रह नहीं सकता। मेरे ऑफिस के काम के लिये, साथियों वग़ैरा के लिये भी जगह चाहिये। मैं नहीं जानता कि अभी भङ्गी-बस्ती खाली है या नहीं। अगर हो, तो भी मेरा धर्म नहीं है कि मैं वहाँ चला जाऊँ। उसे दुःखियों को लिये खाली रखना चाहिये। यहाँ रहने का मुझको शौक़ नहीं है। वहाँ रहने का शौक ज़रूर है। यहाँ जितने ग़रीब आ सकते हैं आवें। आज यहाँ पड़ा हूँ, जिससे मुसलमानों को जितनी तसल्ली दे सकूँ दूँ। उसके लिये भी यहाँ पर आना अच्छा है। यहाँ मुसलमान ज़्यादा दिल-जमाई से आ जा सकते हैं। शहर में इतनी बेफ़िक्री नहीं रहती। हम ऐसे पागल बन गये हैं। हुकूमतों वालों के लिये भी यहाँ मेरे पास आना आसान है। भङ्गी-बस्ती में जाने में कुछ समय तो लगता है।

सफ़ेदपोश लुटेरे

एक भाई लिखते हैं कि यहाँ सफ़ेदपोश लुटेरे बहुत बढ़ गये हैं। बाइसिकिल वग़ैरा लूटते हैं। ऐसी लूट राजधानी में हो, यह शर्म की बात है।

—❀—

: १० :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, १०–१–'४८

निज़ाम की ज़रूरत

भाषण से पहले साधु के कपड़े पहने हुये एक भाई ने ज़िद की कि वे अपना ख़त गांधीजी को पढ़कर सुनावेंगे । गांधीजी को काफ़ी दलील करके उन्हें रोकना पड़ा । प्रार्थना के बाद गांधीजी ने भाषण में कहा; यह देखने लायक़ बात है कि आज हम कहाँ तक गिर गये हैं । साधु होने का; संयम का; गीता आदि पढ़ने का जो दावा करते हैं; वे इतना संयम क्यों न रखे ? उन्हें एक बार कहने से ही बैठ जाना चाहिये । इतनी दलील भी क्यों ? आजकल प्रार्थना-सभा में आम तौर से सब लोग इतनी शान्ति रखते हैं; वह अच्छा लगता है ।

बहावलपुर के भाइयों से

बहावलपुर के भाइयों की भी ऐसी ही बात है । अपने दुःख की बात कहिये; फिर प्रार्थना में शान्त रहिये । मुझसे किसी ने कहा था कि बहावलपुर वाले भाई आज हमला करने वाले हैं । प्रार्थना में चीखते ही रहेंगे । मैंने कहा ऐसा हो नहीं सकता । उनका नमूना सबके सामने रखता हूँ । उनके दुःख का मैं साक्षी हूँ । वे इतमीनान रखें कि वहाँ के सब हिन्दू-सिक्ख आ जायेंगे । नवाब साहब का वचन है— अगरचे मैं नहीं जानता कि राजा लोगों के वचन पर कितना भरोसा रखा जा सकता है । पर नवाब साहब कहते हैं; जो हो चुका सो हो चुका । अब यहाँ पर हिन्दुओं और सिक्खों को कोई दिक़ नहीं करेगा । जो जाना ही चाहेंगे; उन्हें भेजने का इन्तज़ाम होगा ।

जो रहेंगे; उन्हें कोई इस्लाम क़बूल करने की बात नहीं कहेगा। हो सकता है; वहाँ सब सही सलामत हों। यहाँ की हुकूमत भी बेफ़िकर नहीं है। मैं आशा रखता हूँ; अभी वहाँ सब लोग आराम से हैं। आप कहेंगे; वे आज ही क्यों नहीं आते? आपको समझना चाहिये; कि पहले मुल्क एक था। अब हम दो हो गये हैं! वह भी एक दूसरे के दुश्मन। अपने देश में परदेशी से बन गये हैं। सो जो हो सकता है; सो करते हैं। वहाँ तो सत्तर हजार हिन्दू-सिक्ख पड़े हैं। सिन्ध में और भी ज़्यादा हैं। वे वहाँ सुरक्षित नहीं। कराची से एक तार आया है। वह मैंने यहाँ आने से पहले पढ़ा। उसमें लिखते हैं कि अख़बारों में जो आया; उससे बहुत ज़्यादा नुकसान वहाँ हुआ है। आज ऐसा ज़माना है कि हमें शान्ति और धीरज रखना है। हम धीरज खो दें, तो हम हार जायेंगे। हार शब्द हमारे कोष में होना ही नहीं चाहिये। उसके लिये यह ज़रूरी है कि हम गुस्से में न आवें। गुस्से से काम बिगड़ता है। ऐसे मौके पर क्या करना चाहिये, सो हमें सोचना है। मैं तो आपको वह बताता ही रहता हूँ।

ईरान और हिन्दुस्तान

मेरे पास आज ईरान के एलची आये थे। वह यहाँ की हुकूमत के मेहमान हैं। वे मिलने आये और कहने लगे कि एक काम है, "ईरान और हिन्द में बड़ी पुरानी दोस्ती रही। ईरानी और हिन्दी दोनों आर्य हैं। हम तो एक ही हैं।" यह है भी ठीक। ज़ेन्द-अवस्ता को देखें, उसमें बहुत संस्कृत शब्द हैं। हमारा व्यवहार भी साथ साथ रहा है। वे कहते हैं कि "ऐशिया में आप सबसे बड़े हैं। आपकी बदौलत हम भी चमक सकते हैं। हम दिल से एक होना चाहते हैं।" गुरुदेव वहाँ गये थे। वे ईरान को देखकर खुश हो गये। उन्होंने कहा—हमारे ही लोग वहाँ रहते हैं।

ईरान के एलची ने कहा, ईरान और हिन्द का सम्बन्ध नहीं बिगड़ना चाहिये। मैंने कहा, कैसे बिगड़ सकता है? उन्होंने बम्बई का एक किस्सा सुनाया। वहाँ काफ़ी ईरानी हैं। चाय की दूकान रखते हैं। वहाँ काफ़ी हिन्दू, मुसलमान, पारसी ईसाई जाते हैं। उनकी चाय में कुछ खूबी है। वहाँ कुछ फ़साद हुआ होगा। मैं नहीं जानता। सुनता हूँ कुछ ईरानी मारे गये। ईरानी मुसलमान तो हैं ही। ईरानी टोपी पहनते हैं। आज हम दीवाने बन गये हैं। किसी के दिल में हुआ होगा कि वे मुसलमान हैं, तो काटो उनको। अगर ऐसा हुआ है, तो बुरी बात है। मैंने पूछा, वहाँ की हुकूमत के बारे में क्या कुछ कहना है? उन्होंने कहा, वहाँ की हुकूमत तो शरीफ़ है। उन्होंने जल्दी से सब ठीक कर लिया। यहाँ की हुकूमत भी बड़ी शरीफ़ है, जैसा वह कहते थे। यहाँ जो मुसलमान भाई हैं, उनके लिये गार्ड रखे गये हैं। उन्हें आदर से रखते हैं। हुकूमत से हमें कोई शिकायत नहीं। उन्होंने कहा कि ईरान में भी हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान सौदागर मिल-जुलकर रहतेहैं। हिन्द से बढा चढ़ाकर ख़बरें जाती हैं। उससे आगे क्या होगा, सो पता नहीं; मगर हम इस बारे में होशियार हैं।

खुद निर्णय कीजिये

एक भाई लिखते हैं—"अनाज वग़ैरा का अंकुश हटवा दिया और हटवाने की कोशिश करते हैं। कई लोग कहते हैं, यह अच्छा है। पर दरअसल ऐसा नहीं। मैं आपको जताये देता हूँ।" मैं इन भाई को जानता हूँ। मैंने उन्हें लिखा है—आपने कहा, तो अच्छा किया; पर मुझ तक लिखकर ही मौक़ूफ़ रखेंगे, तो हारेंगे। एक तरफ़ से मुझे इतने मुबारक़बादी के तार आते हैं। उनको मैं फेंक नहीं सकता। मैं भविष्यवेत्ता नहीं और न मेरे दिव्यचक्षु हैं। जितना

इन आँखों से देख सकूँ, कानों से सुन सकूँ, वही मेरे पास है । मेरे हाथ, पाँव, कान, आँख जनता है। आप अपने विचार सबसे कहें। धन्यवाद देने वाले बहुत हैं, मगर मैं दूसरा पहलू भी जानना चाहता हूँ। मैं कहूँ इसलिए आप कोई बात न मानें। अपनी आँखों से देखें, सो करें; मेरे कहने से नहीं। २० महात्मा कहें, तो भी नहीं। तजरबे से गलती करके आप सीखेंगे। जो ठीक लगे, सो करें। ऐसा करेंगे, तभी आप आज़ादी को रख सकेंगे। और उसके लायक़ बन सकेंगे।

—❀—

: ११ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, ११–१–'४८

प्रार्थना-सभा में शान्ति

कल ही मैंने आप लोगों को धन्यवाद दिया कि प्रार्थना में आप आवाज़ नहीं करते हैं। आवाज़ से झगड़े का मतलब नहीं। मगर बहनें आपस में बातें करें, बच्चे चीखें, तो उन्हें प्रार्थना में आना नहीं चाहिये। मातायें यदि बच्चों को शान्त रहने की तालीम नहीं दें, तो उन्हें दूर खड़े रहना चाहिये। ईश्वर सब जगह है, ऐसा मानें। वह सब सुनता है, सर्वशक्तिमान है। हमारी बरदाश्त करता है। उसकी दया का हम दुरुपयोग न करें। बहनों से मैं कहूँगा कि वे बूढ़े को देखकर क्या करेंगी! उसकी आवाज़ सुनने को भी क्या आना था! मगर वह जो कहता है, उसमें कुछ तथ्य है, तो उसके मुताबिक सब चलें।' तब तो कुछ फायदा हो सकता है।

आन्ध्र का खत

मेरे पास आन्ध्र देश से एक करुण ख़त आया है। एक नौजवान और एक बूढ़े का ख़त है। बूढ़े को मैं जानता हूँ, पर नौजवान को नहीं जानता। वे नौजवान भाई लिखते हैं कि जब से १५ अगस्त को आज़ादी आ गई है, तब से लोगों को लगने लगा है कि वे मनमानी कर सकते हैं। पहले तो अंग्रेजों का डर था। अब किसका डर? आन्ध्र के लोग तगड़े हैं। अब आज़ाद हो गये, तो क़ाबू के बाहर हो गये हैं। आज़ादी पाने में उन्होंने भी काफी बलिदान तो दिया है, मगर कांग्रेस आज गिरती जाती है। आज

सबको नेता बनना है। पैसे पैदा करने के प्रयत्न करते हैं। वे लिखते हैं कि तुम यहाँ आकर रहो। मुझे वह अच्छा लगता। मगर कैसे जाऊँ? आन्ध्र के लोगों को मैं जानता हूं। मेरे लिये सब जगहें एकसी हैं। सारा हिन्दुस्तान मेरा है। मैं हिन्दुस्तान का हूं। मगर आज दूसरे काम में पड़ा हूं। मेरी आवाज़ जल्दी से जल्दी वहाँ पहुंच जाय, इसलिए यहाँ यह सब कह रहा हूं। वे लिखते हैं, एम० एल० ए० और एम० एल० सी० लोग गन्दगी फैला रहे हैं। उस गन्दगी को कम करने के लिए मेम्बरों की संख्या कम करनी चाहिए। गन्दगी कम होगी, तो उसे हटाना आसान होगा।

सब पार्टियों से अपील

कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट भाई भी वहाँ पड़े हैं। वे लोग कांग्रेस पर हमला करके हिन्दुस्तान का कब्जा लेना चाहते हैं। अगर सब हिन्दुस्तान का कब्जा लेने की कोशिश करें, तो हिन्दुस्तान का क्या हाल होगा? हिन्दुस्तान सबका है। हिन्द हमारा न बने, हम हिन्द के बनें। हम सब हिन्द की सेवा करें और वह निस्वार्थ भाव से। यह हमारा पहले नम्बर का काम है। हम अपना पेट भरने को न सोचें। अपने रिश्तेदारों को नौकरी दिलाने की कोशिश करें, तो काम बिगड़ जायगा।

आत्मघाती वृत्ति

मेरे पास चन्द मुसलमान भाई आये थे। उन्होंने कहा, पहले कांग्रेस हमें ऊपर रखती थी, मगर अब हम कहाँ जांय और कहाँ तक ये तकलीफें सहन करें? इस से बेहतर क्या यह न होगा कि हम चले

। मारपीट और तौहीन से तो बच जावेंगे। मैंने कहा, आप खामोश रहें। हुकूमत सब कोशिश कर रही है। अगर कुछ न हुआ, तो देखा खायगा। आख़िर में हम सबको भूलना है कि हम हिन्दु हैं, मुसलमान हैं, या सिक्ख हैं या पारसी हैं। हम सब हिन्दुस्तान के रहने वाले हिन्दी हैं। धर्म अपनी निजी बात है। उसे राजनीतिक क्षेत्र में न लावें। अगर हिन्दू बिगड़ते ही रहते हैं, तो वे अपने आप मर जायेंगे किसी को उन्हें मारने की जरूरत नहीं पड़ेगी। उन्हें आत्म हत्या करनी है, तो करें। आज मुसलमानों को दबायें, कल किसी और को; यह चल नहीं सकता। जो किसी को दबाने की कोशिश करता, वह खुद दब जाता है, यह जीवन का कानून है। हम सब हिन्दी हैं। हिन्दकी और हिन्दियों की रक्षा करते करते मर जावेंगे।

—※—

: १२ :

बिड़ला भवन, नई दिल्ली, १२-१-'४८

ऊपरी शान्ति बस नहीं

लोग सेहत सुधारने के लिये सेहत के कानूनों के मुताबिक उपवास करते हैं। जब कभी कोई दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है, तब प्रायश्चित के रूप में भी उपवास किया जाता है। इन उपवासों में करने वाले को अहिंसा में विश्वास रखने की ज़रूरत नहीं। मगर ऐसा मौका भी आता है, जब अहिंसा का पुजारी समाज के किसी अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिये उपवास करने पर मजबूर हो जाता है। वह ऐसा तब ही करता है, जब अहिंसा के पुजारी की हैसियत से उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नहीं रह जाता। ऐसा मौका मेरे लिये आ गया है।

जब ९ सितम्बर को मैं कलकत्ते से दिल्ली आया था, तब मैं पश्चिमी पंजाब जा रहा था। मगर वहां जाना नसीब में नहीं था। खूबसूरत रौनक से भरी दिल्ली उस दिन मुर्दों के शहर के समान दिखती थी। जैसे मैं ट्रेन से उतरा, मैंने देखा हर एक के चेहरे पर उदासी थी, सरदार जो हमेशा हंसी-मजाक करके खुश रहते हैं, वह भी उदासी से बचे नहीं थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नहीं था। वह स्टेशन पर मुझे लेने के लिये आये हुये थे। उन्होंने सब से पहली ख़बर मुझे यह दी कि यूनियन की राजधानी में झगड़ा फूट निकला है। मैं फौरन समझ गया कि मुझे दिल्ली में ही करना या मरना होगा। मिलिटरी और पुलिस के कारण आज दिल्ली में ऊपर से शान्ति है।

मगर दिल के भीतर तूफान उछल रहा है। वह किसी भी समय फूटकर बाहर आ सकता है। इसे मैं अपनी करने की प्रतिज्ञा की पूर्ति नहीं समझता, जो ही मुझे मृत्यु से बचा सकती है। मृत्यु से, जिसके समान दूसरा मित्र नहीं, मुझे बचाने के लिये पुलिस या मिलिटरी के द्वारा रखी हुई शान्ति ही बस नहीं। मैं हिन्दू, सिक्ख और मुसलमानों में दिली दोस्ती देखने के लिए तरस रहा हूँ। कल तो ऐसी दोस्ती थी। मगर आज बड़े-से बड़े मुसलमान की ज़िन्दगी हिन्दू या सिक्ख की छुरी, गोली, या बम से सुरक्षित नहीं है। यह ऐसी बात है जिसको कोई हिन्दुस्तानी देशभक्त (जो इस नाम के लायक है) शान्ति से सहन नहीं कर सकता।

उपवास का निर्णय

मेरे अन्दर से आवाज़ तो कई दिनों से आ रही थी। मगर मैं अपना कान बन्द कर रहा था। मुझे लगता था कि कहीं यह शैतानकी यानी मेरी कमजोरी की आवाज़ तो नहीं है! मैं कभी लाचारी महसूस करना पसन्द नहीं करता। किसी सत्याग्रही को नहीं करना चाहिये। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरों की तलवार की जगह लेता है। मुसलमान भाइयों के इस सवाल का कि 'अब वे क्या करें' मेरे पास कोई जवाब नहीं। कुछ समय से मेरी यह लाचारी मुझे खाये जा रही थी। उपवास शुरू होते ही यह मिट जावेगी। मैं पिछले तीन दिनों से इस बारे में विचार कर रहा हूँ। आखिरी निर्णय बिजली की तरह मेरे सामने चमक गया है, और मैं खुश हूँ। कोई भी इन्सान जो पवित्र है, अपनी जान से ज़्यादा कीमती चीज़ कुरबान नहीं कर सकता। मैं आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि मुझमें उपवास करने लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नीबू के साथ या

इन चीज़ों के बगैर पानी पीने की छूट मैं रखूंगा। उपवास कल सुबह पहले खाने के बाद शुरू होगा। उपवास का अरसा अनिश्चित है। और जब मुझे यकीन हो जायगा कि सब कौमों के दिल मिल गये हैं, और वह बाहर के दबाव के कारण नहीं मगर अपना अपना धर्म समझने के कारण, तब मेरा उपवास छुटेगा।

हिन्दुस्तान के मान में कमी

आज हिन्दुस्तान का मान सब जगह कम हो रहा है। ऐशिया के हृदय पर और उस के द्वारा सारी दुनिया के हृदय पर हिन्दुस्तान का साम्राज्य आज तेजी से गायब हो रहा है। अगर इस उपवास के निमित्त हमारी आंख खुल जाय, तो यह सब वापिस आ जायगा। मैं यह विश्वास करता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान की आत्मा खो गई तो तूफ़ानी से दुःखी और भूखी दुनिया की आशा की आंखकी किरण का लोप हो जायगा।

ईश्वर एकमात्र सलाहकार

कोई मित्र या दुश्मन, अगर ऐसे कोई हैं, तो मुझपर गुस्सा न न करें। कई ऐसे मित्र हैं जो मनुष्य-हृदय को सुधारने के लिये उपवास का तरीका ठीक नहीं समझते। वे मेरी बरदाश्त करेंगे और जो आज़ादी वे अपने लिये चाहते हैं, वह मुझे भी देंगे। मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है। मुझे किसी और की सलाह के बिना यह निर्णय करना चाहिये। अगर मैंने भूल की है, और मुझे उस भूल का पता चला जाता है, तो मैं सब के सामने अपनी भूल स्वीकार करूँगा और अपन कदम वापस लूँगा। मगर ऐसी संभावना बहुत कम है। अगर मेरी

अन्तरात्मा की आवाज़ स्पष्ट है, और मैं दावा करता हूँ कि ऐसा है, तो उसे रद नहीं किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है। कि मेरे साथ इस बारे में दलील न की जाय और जिस निर्णय को बदला नहीं जा सकता उसमें मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिन्दुस्तान पर या कम-से-कम दिल्ली पर इसका ठीक असर हुआ, तो उपवास जल्दी भी छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देर से छूटे या कभी न छूटे, ऐसे मौके पर किसी को कमज़ोरी नहीं बतानी चाहिये।

मेरे जीवन में कई उपवास आये हैं। मेरे पहले उपवासों के वक्त टीकाकारों ने कहा है कि उपवास ने लोगों पर दबाव डाला और अगर मैं उपवास न करता, तो जिस मकसद के लिये मैंने उपवास किया, उसके स्वतंत्र गुण-दोषके विचार से निर्णय विरुद्ध जाने वाला था। अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है, तो विरुद्ध निर्णय की क्या कीमत है? शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्मपालन की तरह है। उसका बदला अपने आप मिल जाता है। मैं कोई परिणाम लाने के लिए उपवास नहीं करना चाहता। मैं उपवास करता हूँ क्योंकि मुझे करना ही चाहिये।

मृत्यु सुन्दर रिहाई

मेरी सब से यह प्रार्थना है कि वे शान्त चित्त से इस उपवास का तटस्थ वृत्ति से विचार करें, और अगर मुझे मरना ही है, तो शान्ति से मरने दें। मैं आशा रखता हूँ कि शान्ति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिन्दुस्तान का, हिन्दू धर्म का, सिक्ख धर्मका और इस्लाम का बेबस बनकर नाश होते देखने के बनिस्बत मृत्यु मेरे लिए सुन्दर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तान में दुनिया के सब धर्मों के लोगों को समान हक़ न

मिलें, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहें और यूनियन भी पाकिस्तान की नकल करे, तो दोनों का नाश निश्चत है। उस हालत में इस्लाम का तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ही नाश होगा—बाकी दुनिया में नहीं—मगर हिन्दू धर्म और सिक्ख धर्म तो हिन्दुस्तान के बाहर हैं ही नहीं।

जो लोग दूसरे विचार रखते हैं, वे मेरा जितना भी कड़ा विरोध करेंगे, उतनी मैं उनकी इज्ज़त करूंगा। मेरा उपवास लोगों की आत्मा को जागृत करने के लिये है, उसे मार डालने को नहीं। जरा सोचिये तो सही, आज हमारे प्यारे हिन्दुस्तान में कितनी गन्दगी पैदा हो गई है। तब आप खुश होंगे कि हिन्दुस्तान का एक नम्र पूत, जिसमें इतनी ताकत है, और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गन्दगी को मिटाने के लिए कदम उठा रहा है। और अगर उसमें ताकत और पवित्रता नहीं है। तब वह पृथ्वीपर बोझ रूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाय और हिन्दुस्तान को इस बोझ से मुक्त करे, उतना ही उसके लिये और सबके लिये अच्छा है।

मेरे उपवास की खबर सुनकर लोग दौड़ते हुये मेरे पास न आवें सब अपने आसपास का वातावरण सुधारने का प्रयत्न करें, तो बस है।

आन्ध्र के दो पत्र

मैंने कल आपसे आन्ध्र से आये हुये दो खतों का जिक्र किया था। पत्र लिखने वाले वृद्ध मन्त्र देश भक्त कोंडा वेंकटप्पैया गारू हैं। मैं उनके खत से कुछ हिस्सा यहां देता हूँ—

"राजनीतिक और आर्थिक प्रश्नों के सिवा, एक बड़ा पेचीदा सवाल यह है कि कांग्रेस के लोगों का नैतिक पतन हो गया है। दूसरे प्रान्तों

के बारे में तो मैं बहुत कुछ नहीं कह सकता, मगर मेरे प्रान्त में हालत बहुत खराब है। राजनीतिक सत्ता पाकर लोगों के दिमाग़ ठिकाने नहीं रहे। लेजिस्लेटिव असेम्बली और लेजिस्लेटिव कौंसिल के कई मेम्बर इस मौके का अपने लिये पूरा-पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

वे अपनी जान-पहचान का फ़ायदा उठाकर पैसा बना रहे हैं और मजिस्ट्रेटों की कचहरियों में पहुंच कर न्याय के रास्ते में भी रुकावट डालते हैं। डिस्ट्रिक्ट कलक्टर और दूसरे माल-अफ़सर भी आज़ादी से अपना फ़र्ज़ अदा नहीं कर सकते। कौंसिल के मेम्बर उसमें दखल-अन्दाजी करते हैं। कोई ईमानदार अफसर लम्बे वक्त तक अपनी जगह पर रह नहीं सकता—उसके बरख़िलाफ़ मिनिस्टरों के पास रिपोर्ट पहुँचाई जाती है और मिनिस्टर ऐसे बेउसूल और खुदग़रज़ लोगों की बातें सुनते हैं। स्वराज्य की लगन एक ऐसी चीज़ थी कि जिसके कारण सभी स्त्री-पुरुष आपके नेतृत्व को मानने लगे थे। मगर मकसद हल हो जाने पर अधिकतर कांग्रेसी लड़वैयों के नैतिक बन्धन छूट गये हैं। बहुत से पुराने योद्धा, जो लोग हमारी हलचल के कट्टर विरोधी थे, आज उनका साथ दे रहे हैं। अपना मतलब निकालने के लिए वे लोग आज कांग्रेस में अपना नाम लिखा रहे हैं। मसला दिन-ब-दिन ज़्यादा पेचीदा बनता जा रहा है। नतीजा यह है कि काँग्रेस की और काँग्रेस सरकार की बदनामी हो रही है। लोगों का कांग्रेस पर से विश्वास उठ रहा है। अभी अभी यहां म्युनिसिपैलिटी के चुनाव हुये थे। ये चुनाव बताते हैं कि कितनी तेजी से जनता कांग्रेस के काबू से बाहर जा रही है। चुनाव की पूरी तैयारी करने के बाद गुंटूर में लोकल बोर्डस् (स्थानीय संस्थाओं) के मंत्री का फौरी संदेशा आने से चुनाव रोक लिए गये।

"मैं समझता हूँ कि करीब दस साल से यहाँ सब सत्ता एक नियुक्त की हुई कौंसिल के हाथ में रही है। और अब करीब एक साल से म्युनिसिपैलिटी का काम काज एक कमिश्नर के हाथ में है। अब ऐसी बात चलती है कि सरकार शहर की म्युनिसिपैलिटी का कारोबार सँभालने के लिए कौंसिल नियुक्त करेगी।

"मैं बूढ़ा हूँ। टांग टूट गई है। लकड़ी के सहारे लंगड़ाते-लंगड़ाते घर में थोड़ा बहुत चलता फिरता हूँ। मुझे अपना कोई स्वार्थ नहीं साधना है। इसमें शक नहीं कि जिले की और प्रान्तकी कांग्रेस कमेटी जिन दो पार्टियों में बँटी हुई है, उनके मुख्य मुख्य कांग्रेस वालों के सामने मैं कड़े विचार रखता हूँ। और मेरे विचार सब लोग जानते हैं। कांग्रेस में फिरकेबाज़, लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बरों की पैसे बनाने की प्रवृत्ति और मंत्रियों की कमजोरी के कारण जनता में बलवे की वृत्ति पैदा हो रही है। लोग कहते हैं कि इस से तो अङ्गरेज़ी हुकूमत बहुत अच्छी थी, और वे कांग्रेस को गालियां भी देते हैं।"

आन्ध्र के और दूसरे प्रांतों के लोग इस त्यागी सेवक के कहने की कीमत करें। वह ठीक कहते हैं कि जिस बेईमानी का ज़िक्र उन्होंने किया है, वह सिर्फ आन्ध्र में ही नहीं पाई जाती। मगर वे आन्ध्र के बारे में ही अपना निजी अभिप्राय दे सकते हैं। हम सब सावधान बनें।

बहावलपुर वाले धीरज रखें

अपने बहावलपुर के मित्रों को मुझे यह कहना है कि वे धीरज रखें। सरदार पटेल आज दोपहर को मेरे पास आये थे। मेरा मौन था और मैं बहुत काम में था। इस लिये उनसे बात न कर सका। उनके आफिस के श्री शंकर मेरे पास आने वाले थे। मगर काम के कारण न आ सके। इस लिए मैं आपका केस उनके सामने न रख सका।

—❀—

: १३ :

बिड़ला-भवन नई दिल्ली, १३–१–'३८

मेरी उम्मीद है कि मैं १५ मनट में जो कहना है कह सकूंगा। बहुत कहना है, इस लिए शायद कुछ ज़्यादा समय भी लगे।

आज तो मैं यहां आ सका। पहला दिन है और आज तो खाना भी खाया है। सुबह साढ़े नौ बजे खाना शुरू किया, मगर बहुत लोग आये थे, सो ११ बजे पूरा कर सका। मगर कल से शायद मैं यहां तक नहीं पहुँच सकूँगा। अगर आप चाहते हैं कि प्रार्थना तो होनी ही चाहिये, तो आप आवें। लड़कियां या कम से कम एक लड़की आ जायेगी और प्रार्थना करेगी।

बहावलपुर के शरणार्थी

कल मैंने लिखा था कि सरदार के वहां से श्रीशँकर काम के बोझके कारण मेरे पास नहीं आ सके, उसमें गैर-समझी थी। वे बहावलपुर के बारे में मेरे पास आने वाले थे। मगर मणी बहन ने मुझे बताया कि नहीं आ सकेंगे। आज उन्होंने कहा कि उनका मतलब इतना ही था कि श्रीशँकर दो बजे नहीं आ सकते। दूसरे समय आ सकते थे। मैं यह नहीं समझा था। इसमें कोई बड़ी बात नहीं। मैं आशा नहीं रखता कि सरकारी नौकर प्राइवेट व्यक्तियों के पास आवें। मगर उन्हें यह चीज़ चुभी, इसलिए यह स्पष्टीकरण कर दिया।

कौन गुनहगार है ?

मेरे पास आज सारे दिन में काफ़ी लोग आये थे। सब एक ही सवाल पूछते हैं कि किसने गुनाह किया है ? किसके विरोध में फाका

है ? कहाँ तक चलेगा ? किस पर इलज़ाम है ? मैं इलज़ाम देने वाला कौन ? किसी पर इलज़ाम नहीं है। अगर मैं इस फाके में से ज़िन्दा न उठ सका, तो इलज़ाम मुझपर ही है। मैं नालायक सिद्ध होऊँ और ईश्वर मुझे उठा ले, तो उसमें बड़ी बात क्या ? मगर आज हिन्दू अपने धर्म का पालन नहीं करते, उसका मुझे दुःख है। अगर सब मुसलमानों को यहां से हटाने की आबोहवा पैदा कर दें, तब हिन्दू-सिक्खों ने अपने धर्म को और हिन्द को दगा दिया ऐसा समझना चाहिये। यह समझने लायक बात है। लोग मुझे पूछते हैं, क्या मुसलमानों के लिए यह फाका है ? बात ठीक है। मैंने तो हमेशा अक़लियतों का, दबे हुओं का पक्ष लिया है। आज यहां के मुसलमानों को मुसलिम लीग का सहारा नहीं रहा। हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हुये। जहां भी थोड़े लोग बिना सहारे के रह जाते हैं, उनको मदद करना मनुष्य मात्र का धर्म है। यह फाका दर असल आत्म-शुद्धि के लिये है। सबको शुद्ध होना है। सब शुद्ध नहीं होते हैं, तो मामला बिगड़ जाता है। मुसलमानों को भी शुद्ध होना है। ऐसा नहीं कि हिन्दू-सिक्ख शुद्ध हो जायँ और मुसलमान नहीं। मुसलमान भी शुद्ध और सच्चे नहीं बनेंगे, तो मामला बिगड़ेगा। यहां के मुसलमान भी बेगुनाह नहीं हैं। सबको अपना गुनाह कबूल कर लेना चाहिये। मैं मुसलमानों की खुशामद करने के लिये फ़ाका नहीं करता हूँ। मैं तो सिर्फ ईश्वर की ही खुशामद करने वाला हूँ। जब देश के टुकड़े नहीं हुए थे। उस से पहले ही हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों के दिलों के टुकड़े हो गये थे। मुसलिम लीग तो गुनहगार है, पर दूसरे मुसलमानों ने, हिन्दुओं ने और सिक्खों ने भी गलतियां की हैं। तीनों को अगर दिली दोस्त बनना है, तो उन्हें साफ़ दिल बनना होगा। इनके बीच में सिर्फ ईश्वर ही साक्षी रहेगा। आज हम धर्म के नाम से अधर्मी बन गये हैं हम तीनों धर्म से गिर चुके हैं।

फ़ाका मुसलमानों के नाम से शुरू हुआ है। सो उनपर ज़्यादा ज़िम्मेदारी आती हैं। उनको निश्चय करना है कि उन्हें हिन्दू-सिक्खों के साथ दोस्त बनकर, भाई बनकर रहना है। यूनियन के प्रति बफ़ादार रहना है। वफ़ादार हैं, ऐसा कहने से काम नहीं होता। मैं तो उनके कामों से देख लेता हूँ।

सरदार की बातें मेरे पास आती हैं। मुझे मुसलमान लोग कहते हैं कि "आप और जवाहरलाल जी तो अच्छे हैं; मगर सरदार अच्छे नहीं हैं।" यह कहाँ की बात है? ऐसी बात करेंगे, तो काम कैसे चलेगा? वे हाकिम हैं। सब मिलकर हकूमत चलाते हैं। वे आपके नौकर हैं। सब की साथ ज़िम्मेदारी हैं, तभी तो कैबिनेट बनती थे। सरदार अगर कोई गलती करते हैं, तो मुझ से कहिये। मैं तो उनको सब कुछ कह सकता हूँ। सरदार ने क्या कहा है, यह बताने में अर्थ नहीं। सरदार ने क्या गुनाह किया, सो बताइये। जितनी जवाबदारी पूरी कैबिनेट की है, उतनी ही आपकी भी है; क्योंकि कैबिनेट आपके प्रतिनिधियों की है।

मुसलमानों को निर्भय और बहादुर बनना है—एक खुदा का ही भरोसा रखना है। न गांधी का, न जवाहरलाल का, न सरदार का, न कांग्रेस और न लीग का। खुदा के नाम से वे यहाँ रहेंगे और खुदा के नाम पर मरेंगे। हिन्दू-सिक्ख कितना भी बुरा काम करें, मगर वे बुराई न करें। मैं तो आपके साथ पड़ा हूँ। आप के साथ मरूँगा। आज मरने के लिए तो पड़ा ही हूँ। मुझको सुनाते हैं कि सरदार काफ़ी कड़वी बातें कह देते हैं। मैंने उनको कई दफ़ा कहा है कि आपकी ज़बान में काँटा है। मगर मैं जानता हूँ कि उनके दिल में काँटा नहीं है। उनका हृनय शुद्ध है। वे खरी बात सुनाने वाले हैं।

कलकत्ते में और लखनऊ में उन्होंने कहा है कि "मुसलमान यहाँ रह सकते हैं, मगर मैं लीगी मुसलमानों पर एतबार नहीं कर सकता।" वह कहते हैं कि कल तक जो मुसलमान दुश्मन थे वे आज दोस्त बन गये, यह मैं कभी नहीं मानूँगा। उन्हें शक लाने का पूरा अधिकार है। उस शक का आप सीधा अर्थ करें। मैंने कहा है कि शक जब साबित होता है, तब उसको काटें—मगर पहले से उन्हें बुरा मान कर कुछ न करें।

हिन्दू-सिक्खों का फ़र्ज़

तब हिन्दू-सिक्ख क्या करें? कैबिनेट क्या करें? मैं अकेला रहूँगा, तब भी एक ही बात करूँगा। जो बंगाली भजन 'एकला चलो रे', अभी गाया गया वह गुरुदेव का बनाया हुआ है। मुझे वह बहुत प्रिय है। नोआखाली की यात्रा में वह क़रीब क़रीब रोज गाया जाता था। उसका अर्थ है, "तेरे साथ कोई भी नहीं आता है, तो तू भी अकेला ही चला जा। तेरे साथ ईश्वर तो है।" हिन्दू-सिक्ख अगर सच्चे नहीं बनते हैं और उनमें इतनी बहादुरी नहीं है कि इतने थोड़े मुसलमानों को हिफ़ाज़त से रखें, तो मैं जी कर क्या करूँगा? मैं तो यही कहूँगा कि पाकिस्तान में अगर सभी सिक्खों और हिन्दुओं को काट डालें तो भी यहाँ एक भी मुसलमान को हम न काटें। कमज़ोर को मारना बुज़दिली है।

दिल्ली की जाँच

तब फाका छूटने की शर्त क्या है? शर्त यह है कि हिन्दुस्तान के और हिस्सों में कुछ भी हो, मगर दिल्ली-बुलन्द रहे, शान्त रहे। दिल्ली का जाहोजलाल आबाद रहे। मुसलमान बेखटके दिल्ली में घूम

सकें। सुहरावर्दी साहब, जो गुण्डों के सरदार माने जाते हैं, वह भी अकेले बेखटके घूम सकें। रात को भी चले जायँ, तो उन्हें कुछ डर न रहे। ऐसा हो जाय, तो मेरा फाका छूट जायेगा। आज तो सुहरावर्दी साहब को मैं प्रार्थना में नहीं ला सकता। उनका कोई अपमान करे, तो वह मेरा अपमान होगा। यह मुझसे सहन नहीं होगा। इसलिए मैं उन्हें नहीं लाता। सुहरावर्दी कैसे भी हों, इतना मैं कह सकता हूँ कि कलकत्ते में उन्होंने मेरा पूरा साथ दिया। मुसलमान हिन्दुओं के मकान दबाकर बैठ गये थे, वहाँ से उन्होंने मुसलमानों को खींच खींच कर निकाला था।

मैं हिन्दुस्तान की, हिन्दुओं की, मुसलमानों की पारसियों की, ईसाइयों की,—किसी की भी नदामत (शर्मिन्दगी) नहीं चाहता हूँ। हम सब सच्चे बनें, तब हिन्द ऊँचा उठेगा।

—❀—

: १४ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली १४-१-'४८

तारों का ढेर

हिन्दुस्तान से और दूसरे देशों से मेरे पास तार पर तार आ रहे हैं। मेरी राय में उनमें से कई वज़नदार हैं, और मुझे अपने निश्चय पर मुबारकबाद देते हैं और ईश्वर के हाथ में सौंपते हैं। कुछ दूसरे लोग बहुत मीठी भाषा में प्रार्थना करते हैं कि उपवास छोड़ दीजिये। हम अपने पड़ोसियों के प्रति, चाहे उनका कोई भी धर्म हो, मित्रभाव रखेंगे और आपने उपवास करते समय जो संदेश दिया है, उस पर पूरी तरह अमल करने की कोशिश करेंगे। तारों का ढेर हर घंटे बढ़ता ही जाता है। मैंने प्यारेलाल जी से कहा है कि उनमें से कुछ तार चुनकर प्रेस को देदें। तार भेजने वाले हिन्दू, मुसलमान सिक्ख और दूसरे जिन लोगों ने मुझे आश्वासन दिया है—उनमें से, कई तो गिरोहों और ऐसोशियेशनों (समाजों) के प्रतिनिधि हैं—वे सब अच्छी तरह अपना बचन पूरा करेंगे, तो मेरे उपवास को छोटा करने में काफ़ी मदद करेंगे। मृदुलाबहन, जो लाहौर में, पाकिस्तान के सत्ताधीशों और सामान्य मुसलमानों के संपर्क में हैं, मुझे पूछती हैं कि "यहाँ लोग कहते हैं कि इस तरफ़ क्या किया जा सकता है? आप पाकिस्तान में अपने मुसलमान मित्रों से क्या आशा रखते हैं? इनमें पोलिटिकल पार्टियों के मेम्बर और सरकारी नौकर भी शामिल हैं।" मुझे खुशी है कि ऐसे मुसलमान मित्र भी हैं, जिन्हें मेरी सेहत की चिन्ता है, और वे मृदुलाबहन ने जो सवाल पूछा है, वैसी जिज्ञासा रखते हैं। सब सन्देश भेजनेवालों को और पाकिस्तान से

सवाल पूछने वाले भाइयों को मैं कहना चाहता हूँ कि यह उपवास तो आत्म-शुद्धि के लिए है। जो लोग उपवास के मकसद के साथ हमदर्दी रखते हैं, वे सब आत्म-शुद्धि करें, चाहे वे पाकिस्तान के सरकारी नौकर हों, किसी पोलिटिकल पार्टी के मेम्बर हों, या दूसरे लोग हों।

पाकिस्तान से एक शब्द

पाकिस्तान में मुसलमानों ने गुनाह किया है। कराची में जो हुआ, सो तो आप सुन ही चुके हैं। सिक्खों पर मुसलमानों ने हमला किया और बहुत से बेगुनाह सिक्ख भाई मारे गये। कई लूटे गये और कइयों को अपने घर छोड़कर भागना पड़ा। अब खबर आई है कि गुजरात स्टेशन पर ग़ैर-मुस्लिम शरणार्थियों की गाड़ी पर हमला हुआ। वे बेचारे सरहदी सूबे से अपनी जान बचाने को आ रहे थे। बहुत से मारे गये। कई लड़कियाँ उड़ा ली गईं। यह सब दुःखद समाचार है। पाकिस्तान में ऐसा होता ही रहे, तो यूनियन कहाँ तक उसको बरदाश्त करेगा? मेरे जैसा एक आदमी फ़ाका करे या १०० महात्मा फ़ाका करें, तो भी यूनियनवालों के दिल में गुस्सा पैदा हो जायगा। पाकिस्तान में मुसलमानों की परिस्थिति को सुधारना है। वे हिम्मत के साथ कहें कि हम तब तक चैन नहीं लेंगे, जब तक हिन्दू और सिक्ख वापिस आकर आराम से हमारे बीच में नहीं रहते। यह उनके (पाकिस्तान के) गुनाह का प्रायश्चित या कफ्फारा होगा।

मान लीजिये कि हिन्दुस्तान में चारों तरफ आत्म-शुद्धि की लहर दौड़ जाय, तो पाकिस्तान पाक बन जायगा। तब वह एक ऐसा

राज्य बनेगा, जिसमें पुराने दोष और बुराइयाँ लोग भूल जायँगे। पुराने भेदभाव दफना दिये जायँगे। एक अदना-से-अदना इन्सान भी पाकिस्तान में वही इज़्ज़त पायेगा; और उसी तरह उसकी जान और माल सुरक्षित होगा, जैसे कि क़ायदे आज़म जिन्ना का। ऐसा पाकिस्तान कभी मर नहीं सकता। तब, उसके पहले नहीं, मुझे अफसोस होगा कि मैंने पाकिस्तान को एक 'पाप' कहा। मुझे डर है कि आज तो मुझे जोरों से यह कहना ही होगा कि पाकिस्तान 'पाप' है। मैं इस पाकिस्तान का दुश्मन हूँ। मैं उस 'पाक' पाकिस्तान को कागज़ पर नहीं, पाकिस्तान के भाषण देनेवालों के भाषणों में नहीं, बल्कि हरएक मुसलमान के रोजाना जीवन में देखने के लिए जिन्दा रहना चाहता हूँ। जब ऐसा होगा तब यूनियन के रहने वाले भूल जायँगे कि कभी पाकिस्तान में और यूनियन में दुश्मनी थी। और अगर मैं भूल नहीं करता, तो यूनियन गर्व के साथ पाकिस्तान की नकल करेगा। अगर मै तब ज़िन्दा हुआ, तो यूनियन वालों से कहूँगा कि वे भलाई करने में पाकिस्तान से आगे बढ़ें। हम यूनियनवालों को आज शर्म के साथ कहना पड़ता है कि हमने पाकिस्तान की बुराई की झट से नकल की। उपवास तो एक बाज़ी है। और वह इसी बात के लिए है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान भलाई करने में एक दूसरे के साथ मुकाबला करें।

मेरा सपना

जब मैं नौजवान था और पॉलिटिक्स (राजनीति) के बारे में कुछ नहीं जानता था, तब से मैं हिन्दू-मुसलमान वग़ैरा के हृदयों के ऐक्य का स्वप्न देखता आया हूँ। मेरे जीवन के सन्ध्या काल में अपने उस स्वप्नको सिद्ध होते देखकर मैं छोटे बच्चे की तरह नाचूँगा।

तब पूरी ज़िन्दगी तक, जिसे हमारे बुज़र्गों ने १२५ साल कहा है, जीने की मेरी ख़ाहिश फिर से जिन्दा हो जायगी। ऐसे स्वप्न की सिद्धि के लिए अपना जीवन कुरबान करना कौन पसन्द नहीं करेगा? मेरा स्वप्न सिद्ध होगा, तब हमें सच्चा स्वराज मिलेगा। तब कानून की नज़र से और भूगोल की नज़र से हम भले दो राज्य रहें, मगर हमारे रोज़ के जीवन में हम दो नहीं होंगे। हमारा दिल एक होगा। यह नज़ारा मेरे लिए और आपके लिए भी इतना भव्य है कि वह सच्चा हो नहीं सकता। तो भी एक मशहूर चित्रकार के एक मशहूर चित्र में बताये हुए बच्चे की तरह मुझे तब तक सन्तोष नहीं होगा, जब तक मैं उसे पा न लूँ। इससे कम के लिए मैं ज़िन्दा नहीं हूँ और न ज़िन्दा रहना चाहता हूं। पाकिस्तान से सवाल पूछने वाले भाई जहाँ तक हो सके, इस मकसद के नजदीक पहुंचने में मेरी मदद करें। जब हम मक़सद पर पहुँच जाते हैं, तब वह मक़सद नहीं रहता। मगर उसके नजदीक ज़रूर जा सकते हैं। हर एक इन्सान इस मक़सद तक पहुँचने के लायक बनने के लिए आत्म-शुद्धि कर सकता है।

जब मैं १८९६ में दिल्ली या आगरे का किला देखने गया था, तब मैंने वहां एक दरवाज़े पर यह शेर पढ़ा था, "अगर कहीं जन्नत है, तो यहाँ है, यहाँ है, यहाँ है।" किला अपने जाहोजलाल के बावजूद मेरी राय में जन्नत न था। मगर मुझे निहायत खुशी होगी, अगर पाकिस्तान इस लायक बने कि उसके हर एक दरवाज़े पर यह शेर लिखा जा सके। ऐसी जन्नत में, चाहे वह पाकिस्तान में हो या यूनियन में, न कोई गरीब होगा, न भिखारी; न कोई ऊँचा होगा, न नीचा। न कोई करोड़पति मालिक होगा, न आधा भूखा नौकर। न शराब होगी, न कोई दूसरी नशीली चीज़। सब अपने आप खुशी से और गर्व से अपनी रोटी कमाने के लिए मेहनत मज़दूरी करेंगे। वहाँ

औरतों की भी वही इज्जत होगी, जो मर्दों की, और औरतों और मर्दों की अस्मत और पवित्रता की रक्षा की जायेगी। अपनी पत्नी के सिवा हर एक औरत को उसकी उमर के मुताबिक़ हर एक धर्म के पुरुष माँ, बहन और बेटी समझेंगे। अस्पृश्यता नहीं होगी और सब धर्मों के प्रति समान आदर रखा जायगा। मैं आशा रखता हूँ कि जो यह सब सुनेंगे या पढ़ेंगे, वे मुझे क्षमा करेंगे कि जीवन देनेवाले सूर्य देवता की धूप में पड़े पड़े मैं इस काल्पनिक आनन्द की लहर में बह गया। जो शंकाशील हैं, उन्हें मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मेरे मन में ज़रा भी इच्छा नहीं कि उपवास जल्दी छूटे। अगर मे जैसे मूर्ख के खयाली सब्ज़बाग कभी फलित न हों, और उपवास कभी भी न छूटे, तो उसमें ज़रा भी हर्ज नहीं। जहाँ तक ज़रूरी हो, वहाँ तक इन्तज़ार करने की मुझ में धीरज है। मगर मुझे बचाने के ही लिए लोग कुछ भी करेंगे, तो मुझे दुःख होगा। मेरा यह दावा है कि उपवास ईश्वर की प्रेरणा से शुरू हुआ है, और अगर और जब ईश्वर की बच्छा होगी, तभी छूटेगा। उसकी इच्छा को कोई आज तक टाल सका है, न कभी टाल सकेगा।

—❀—

: १५ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, १५-१-'४८

मौत दुःखों से छुटकारा दिलाती है

गांधीजी ने अपने बिस्तर पर लेटे हुए जो मौखिक सन्देश दिया, वह इस प्रकार है:—

मेरे लिए यह एक नया अनुभव है। मुझको इस तरह से लोगों को सुनाने का कभी अवसर नहीं आया है न मैं चाहता था। मैं इस वक्त जिस जगह पर प्रार्थना हो रही है, वहां नहीं जा सकता। इसलिए प्रार्थना में जो लोग आये हैं, वहां तक मेरी आवाज़ यहां से नहीं पहुँच सकती। फिर भी मैंने सोचा कि आप लोगों तक, जिधर आप बैठे, मेरी आवाज़ पहुँच सके, तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझको बड़ा आनन्द होगा। जो मैंने लोगों के सामने कहने को तैयार किया है, वह तो लिखवा दिया है ऐसी हालत कल रहेगी कि नहीं, मैं नही जानता।

आप लोगों से मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हर एक आदमी, दूसरे क्या करते हैं, उसे न देखे और जितनी आत्म-शुद्धि कर सकता है, करे। मुझे विश्वास है कि जनता बहुत प्रमाण में आत्म-शुद्धि कर लेगी, तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा। हिन्दुस्तान का हित होगा और सम्भव है कि मैं जल्दी से, जो उपवास चल रहा है, उसे छोड़ सकूं। मेरी फ़िक्र किसी को नही करना है। फ़िक्र अपने लिये की जाय—हम कहाँ तक आगे बढ़ रहे हैं और देश का कल्याण कहां तक हो सकता है, इसका ध्यान रखें। आखिर में सब इन्सानों को मरना है। जिसका जन्म हुआ है, उसे मृत्यु से मुक्ति मिल नहीं

सकती। ऐसी मृत्यु का भय क्या, शोक भी क्या करना ? मैं समझता हूँ कि हम सब के लिये मृत्यु एक आनन्द दायक मित्र, हमेशा धन्यवाद के लायक है; क्योंकि मृत्यु से अनेक प्रकार के दुखों में से हम एक समय तो निकल जाते हैं।

रुला रुलाकर मारना

अपने लिखित सन्देश में गाँधीजी ने कहा:—

कल शाम की प्रार्थना के दो घंटे बाद अखबार वालों ने मुझे सन्देश भेजा कि उन्हें मेरे भाषण के बारे में कुछ बातें पूछनी हैं। वे मुझसे मिलना चाहते थे, मगर मैंने दिन भर काम किया था। प्रार्थना के बाद भी काम में फंसा रहा। इसलिए थकान और कमज़ोरी के कारण उन्हें मिलने की मेरी इच्छा नहीं हुई। इसलिए मैंने प्यारेलाल जी से कहा कि उनसे कहो कि मुझे माफ करें और जो सवाल पूछने हों वे लिखकर कल सुबह नौ बजे बाद मुझे दे दें। उन्होंने ऐसा ही किया है।

पहला सवाल यह है—"आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है, जब कि यूनियन के किसी हिस्से में कुछ झगड़ा हो ही नहीं रहा।"

लोग ज़बरदस्ती मुसलमानों के घरों का कब्जा लेने की बाकायदा निश्चय पूर्वक कोशिश करें यह क्या झगड़ा नहीं कहा जायगा ? यह झगड़ा तो यहाँ तक बढ़ा कि फौज को इच्छा न रहते हुए भी अश्रु गैस इस्तेमाल करनी पड़ी और भले हवा में हो, मगर कुछ गोलियां भी चलानी पड़ीं; तब कहीं लोग हटे। मेरे लिये यह सरासर बेवकूफी होती कि मैं मुसलमानों का ऐसे टेढ़ी तरह से निकाला जाना आखिर तक देखता रहता। इसे मैं रुला रुलाकर मारना कहता हूँ।

सरदार पटेल

दूसरा प्रश्न यह है—"आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डर की और अपनी असुरक्षितता की कहानी लेकर आपके पास आते हैं, तो आप उन्हें कोई जवाब नहीं दे सकते। उनकी शिकायत यह है कि सरदार, जिनके हाथों में गृह-विभाग है मुसलमानों के खिलाफ़ है आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी हाँ में हाँ मिलाया करते थे, जी-हुजूर कहलाते थे; मगर अब ऐसी हालत नहीं रही। इस से लोगों के मन पर यह असर होता है कि आप सरदार का हृदय पलटने के लिये उपवास कर रहे हैं। आपका उपवास गृह-विभाग की नीति की निन्दा करता है। अगर आप इस चीज़ को साफ करेंगे, तो अच्छा होगा।"

मैं समझता हूँ कि इस बात का साफ़ साफ़ जवाब दे चुका हूँ। मैंने जो कहा है उसका एक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है वह मेरी कल्पना में भी न आया। अगर मुझे पता होता कि ऐसा अर्थ किया जा सकता है, तो मैं पहले से इस चीज़ को साफ़ कर देता।

कभी मुसलमान दोस्तों ने शिकायत की थी कि सरदार का रुख मुसलमानों के ख़िलाफ़ है। मैंने कुछ दुःख से उनकी बात सुनी, मगर कोई सफ़ाई पेश न की। उपवास शुरू होने के बाद मैंने अपने ऊपर जो रोक थाम लगाई हुई थी, वह चली गई। इसलिए मैंने टीकाकारों को कहा कि सरदार को मुझ से और पं० नेहरू से अलग करके और मुझे और पंडित नेहरू को ख़ामख़ाह आस्मान पर चढ़ाकर वे गलती करते हैं। इससे उनको फायदा नहीं पहुँच सकता। सरदार के बात करने के ढंग में एक तरह का अक्खड़पन है, जिससे कभी कभी लोगों

का दिल दुख जाता है, अगरचे सरदार का इरादा किसी को दुःखी बनाने का नहीं होता। उनका दिल बहुत बड़ा है। उसमें सबके लिये जगह है। सो मैंने जो कहा उसका मतलब यह था कि अपने जीवन भर के वफ़ादार साथी को एक बेजा इलज़ाम से बरी कर दूँ। मुझे यह भी डर था कि सुनने वाले कहीं यह न समझ बैठें कि मैं सरदार को अपना जी-हुजूर मानता हूँ। सरदार को प्रेम से मेरा जी-हुजूर कहा जाता था, इसलिए मैंने सरदार की तारीफ़ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्ति शाली और मन के मज़बूत हैं कि वे किसी के जी-हुजूर हो ही नहीं सकते। जब वे मेरे जी-हुजूर कहलाते थे, तब वे ऐसा कहने देते थे, क्योंकि जो कुछ मैं कहता था, वह अपने आप उनके गले उतर जाता था। वे अपने क्षेत्र में बहुत बड़े थे। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी में उन्होंने शासन चलाने में बहुत काबलियत बताई थी। मगर वह इतने नम्र थे कि उन्होंने अपनी राजनीतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की उन्होंने इसका कारण मुझे बताया था कि जब मैं हिन्दुस्तान में आया था, उन दिनों जिस तरह का राज काज हिन्दुस्तान में चलता था, उस में हिस्सा लेने का उनका मन नहीं होता था। मगर अब जब सत्ता उनके गले आ पड़ी, तब उन्होंने देखा कि जिस अहिंसा को वे आज तक सफलता पूर्वक चला सके, अब नहीं चला सकते। मैंने कहा है कि मैं समझ गया हूँ कि जिस चीज़ को मैं और मेरे साथी अहिंसा कहा करते थे वह सच्ची अहिंसा नहीं थी। वह तो नकली चीज़ थी और उसका नाम है मन्द विरोध। हाँ किनके हाथों में मन्द विरोध किसी काम की चीज़ है? ज़रा सोचिये तो सही कि एक कमज़ोर आदमी जनता का प्रतिनिधि बने, तो वह अपने मालिकों की हँसी और बेइज्जती करवा सकता है। मैं जानता हूँ कि सरदार कभी उन्हें सौंपी हुई ज़िम्मेदारी को दगा नहीं दे सकते। वे उसका पतन बरदाश्त नहीं कर सकते।

उपवास का मक़सद

मैं उम्मीद करता हूँ कि यह सब सुनने के बाद कोई ऐसा ख़याल नहीं करेंगे कि मेरा उपवास गृह-विभाग की निन्दा करने वाला है। अगर कोई ऐसा ख़्याल करने वाला है, तो मैं उस से कहना चाहता हूँ कि वह अपने आपको नीचे गिराता है और अपने आपको नुकसान पहुँचाता है, मुझे या सरदार को नहीं। मैं ज़ोरदार लफ़्ज़ों में कह चुका हूँ। कि कोई बाहरी ताकत इन्सान को नीचे नहीं गिरा सकती। इन्सान को नीचे गिराने वाला इन्सान खुद ही बन सकता है। मैं जानता हूँ कि मेरे जवाब के साथ इस वाक्यका कोई ताल्लुक नहीं है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि उसे हर मौके पर दोहराया जा सकता है।

मैं साफ़ लफ़्ज़ों में कह चुका हूँ कि मेरा उपवास यूनियन के मुसलमानों की खातिर है। इसलिए वह यूनियन के हिन्दू और सिक्खों और पाकिस्तान के मुसलमानों के सामने है। इस तरह से यह उपवास पाकिस्तान की अक़लियत की खातिर भी है। जो विचार मैं पहले समझा चुका हूँ, उसी को यहां थोड़े में दोहराने की कोशिश कर रहा हूँ।

मैं यह आशा नहीं रख सकता कि मेरे जैसे अपूर्ण और कमज़ोर इन्सान का फ़ाक़ा दोनों तरफ़ की अक़लियतों को सब तरह के ख़तरोंसे पूरी तरह बचाने की ताक़त रखे। फ़ाक़ा सब की आत्म-शुद्धि के लिए है। उसकी पवित्रता के बारे में किसी तरह का शक लाना ग़लती होगी।

उलटे अर्थ की गुंजाइश नहीं

तीसरा सवाल यह है—"आपका उपवास ऐसे वक्त पर शुरू हुआ है, जब संयुक्त राष्ट्रीय संघ की सुरक्षा-समिति बैठने वाली है। साथ ही अभी ही कराची में फ़साद हुआ है और गुजरात (पंजाब) में क़त्लेआम

हुआ है। हम नहीं जानते कि विदेश के अख़बारों में इन वाक़यात की तरफ़ कहां तक ध्यान दिया गया है। इसमें शक नहीं कि आप के उपवास के सामने ये वाक़यात छोटे लगने लगे हैं। पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के पिछले कारनामों से हम समझ सकते हैं कि वे ज़रूर इस चीज़ का फ़ायदा उठायेंगे और दुनियाँ को कहेंगे कि गांधीजी अपने हिन्दू अनुयायियों से, जिन्होंने हिन्दुस्तान में मुसलमानों की ज़िन्दगी आफ़त में डाल रखी है, पागलपन छुड़वाने के लिए उपवास कर रहे हैं। सारी दुनियां में सच्ची बात पहुँचने में तो देर लगेगी। इस दरमियान आपके उपवास का यह नतीजा आ सकता है कि संयुक्त राष्ट्रीय संघपर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।"

इस सवाल का लम्बा चौड़ा जवाब देने की ज़रूरत थी। दुनियां की हुकूमतों और दुनिया के लोगों पर, जहाँ तक मैं जानता हूँ, मैं यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि उपवास का असर अच्छा ही हुआ है। बाहर के लोग, जो, हिन्दुस्तान के वाक़यात को निष्पक्षपात से देख सकते हैं, मेरे फ़ाक़े का उल्टा अर्थ नहीं लगायेंगे। फ़ाक़ा यूनियन के और पाकिस्तान के रहने वालों से पागलपन को छुड़वाने के लिए है।

अगर पाकिस्तान में मुसलमानों की अक़्लसरियत सीधी तरह न चले, वहां के मर्द और औरतें शरीफ़ न बनें, तो यूनियन के मुसलमानों को बचाया नहीं जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुला बहन के कलके सवाल पर ऐसा लगता है कि पाकिस्तान के मुसममानों की आंखें खुल गई हैं और वे अपना फ़र्ज़ समझने लगे हैं।

संयुक्त राष्ट्रीय संघ यह जानता है कि मेरा फ़ाक़ा उसे ठीक निर्णय करने में मदद देने वाला है, ताकि वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का उचित पथ-प्रदर्शक कर सके।

: १६ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, १६–१–'४८

ईश्वर की कृपा

गांधीजी ने बिस्तर पर लेटे हुए जो मौखिक सन्देश दिया, वह इस प्रकार है:—

मुझे आशा तो नहीं थी कि आज भी मैं बोल सकूंगा। लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाज़ में जितनी शक्ति थी, उससे आज मैं ज़्यादा महसूस करता हूँ। इसका मतलब तो यही किया जाय कि ईश्वर की बड़ी कृपा है। चौथे रोज मुझ में, जब मैंने फाक़ा किया है, तब इतनी शक्ति नहीं रहती है। लेकिन आज तो रहती है। मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि अगर आप सब लोग आत्म-शुद्धि करने का यज्ञ करते रहेंगे, तो बोलने की शक्ति आख़िर तक रह सकती है। मैं इतना तो कहूंगा कि मुझे किसी प्रकार की जल्दी नहीं है। जल्दी जल्दी करने से हमारा काम नहीं बनता है। मैं परम शान्ति में हूं। मैं नहीं चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा का सारा जब यहां ठीक होगा, तो सारे हिन्दुस्तान में ठीक होगा। इसलिये मैं समझता हूं कि जब इर्द-गिर्द में, सारे हिन्दुस्तान में और सारे पाकिस्तान में शान्ति नहीं हुई, तो मुझे जिन्दा रहने में दिलचस्पी नहीं है। ये इस यज्ञ के मानी हैं।

सच्ची सद्भावना

गांधीजी का लिखित सन्देश:—किसी जिम्मेदार हुकूमत के लिए सोच-समझ कर किये हुए अपने किसी फैसले को बदलना आसान नहीं

होता। मगर तो भी हमारी हुकूमत ने, जो हर माने में जिम्मेदार हुकूमत है, सोच समझ कर और तेजी से अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है। उसको काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और करांची से लेकर आसाम की हद तक सारे मुल्क को मुबारकबाद देना चाहये। मैं जानता हूँ कि दुनियां के सब लोग भी कहेंगे कि ऐसा बड़ा काम हमारी हुकूमत के जैसी बड़े दिल वाली हुकूमत ही कर सकती थी। इसमें मुसलमानों को सन्तुष्ट करनेकी बात नहीं है। यह तो अपने आपको सन्तुष्ट करने की बात है। कोई भी हुकूमत, जो बहुत बड़ी जनता की प्रतिनिधि है, बेसमझ जनता से तालियाँ पिटवाने के लिए कोइ कदम नहीं उठा सकती। जहां चारों तरफ पागलपन फैला हुआ है, वहां आपके बड़े से बड़े नेता बहादुरी से अपना दिमाग़ ठण्डा रख कर जो जहाज चला रहे हैं, उसे क्या वे डूबने से न बचावें ?

हमारी हुकूमत ने क्यों यह कदम उठाया ? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवास से उनकी विचार धारा ही बदल गई। उपवास के बिना वे, कानून उनसे जितना करवाता, उतना ही करने वाले थे। मगर हिन्दुस्तान की हुकूमत का यह क़दम सच्चे मानों में दोस्ती बढ़ाने और मिठास पैदा करने वाली चीज़ है। इससे पाकिस्तान की भी परीक्षा हो जायगी। नतीजा यह आना चाहिने कि न सिर्फ़ काश्मीरका बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने मतभेद हैं, उन सब का बाइज़्जत आपस आपस में फैसला हो जावे। आज की दुश्मनी की जगह दोस्ती ले। न्याय कानून से बढ़ जाता है। अङ्गरेज़ी में एक घरेलू कहावत है, जो सदयों से चलती आई है। उसमें कहा है कि जहां मामूली कानून काम नहीं देता, वहां न्याय हमारी मदद करता है। बहुत वक्त नहीं हुआ जब कानून के लिये और न्याय के लिये वहां अलग अलग कचहरियां हुआ करती थीं। इस तरह से देखा जाय, तो

इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान की हुकूमत ने जो किया है वह सब तरह से ठीक है। अगर मिसाल की जरूरत है, तो मैकडोनल्ड ऐवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडोनल्ड का निर्णय न था, बल्कि सारे ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल का और दूसरी गोलमेज़-परिषद् के अधिकतर सदस्यों का भी निर्णय था। मगर यरवदा के उपवास ने रातों रात वह निर्णय बदल दिया। मुझे कहा गया है कि यूनियन की हुकूमत के इस बड़े काम के कारण तो अब मैं अपना उपवास छोड़ दूं। काश कि मैं अपने दिल को ऐसा करने के लिए समझा सकता!

उपवास का अच्छे से अच्छा जवाब

मैं जानता हूँ कि उन डॉक्टर लोगों की, जो अपनी इच्छा से काफ़ी त्याग करके मेरी देखभाल कर रहे हैं, चिन्ता, जैसे उपवास लम्बा होता जाता है, वैसे बढ़ती जाती है। मेरे गुरदे ठीक तरह से काम नहीं करते। उन्हें इस चीज़ का खतरा नहीं कि मैं आज मर जाऊँगा। मगर उपवास लम्बा चला, तो हमेशा के लिए शरीर की मशीन को जो नुकसान पहुँचेगा, उससे वे डरते हैं। मगर डॉक्टर लोग कितने ही होशियार क्यों न हों, मैंने उनकी सलाह से उपवास शुरू नहीं किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एक मात्र ईश्वर रहा है। वह कभी गलती नहीं करता और सर्व शक्तिमान है। अगर उसे मेरे इस कमज़ोर शरीर से कुछ और काम लेना होगा, तो डॉक्टर लोग कुछ भी कहें, वह मुझे बचा लेगा। मैं ईश्वर के हाथों में हूँ। इसलिए मैं आशा रखता हूँ कि आप विश्वास रखेंगे कि मुझे न मौत का डर है, न अपंग होकर ज़िन्दा रहने का। मगर मुझे लगता है कि अगर देश को मेरा कुछ भी उपयोग है, तो डॉक्टरों की इस चेतावनी के परिणाम-स्वरूप लोगों को तेजी के साथ मिलकर काम करना चाहिये।

इतनी मेहनत से आज़ादी पाने के बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिये। बहादुर लोग, जिन पर दुश्मनी का शक होता है, उन पर भी विश्वास रखते हैं। बहादुर लोग अविश्वास को अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। अगर दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों में ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बाकी हिस्सों में आग भड़के, तो भी दिल्ली शान्त रहे, तब मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी। खुशकिस्मती से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों तरफ के लोग अपने आप समझ गये लगते हैं कि उपवास का अच्छे से अच्छा जवाब यही है कि दोनों उपनिवेशों में ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्म के लोग दोनों तरफ बिना किसी खतरे के आ-जा सकें और रह सकें। आत्म-शुद्धि के लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिये।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिए दिल्ली पर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। यूनियन के रहने वाले भी आखिर तो इन्सान हैं। हमारी हुकूमत ने लोगों के नाम से एक बहुत बड़ा उदार कदम उठाया है और उसको उठाते समय उसकी कीमत का खयाल तक नहीं किया। इसका जवाब पाकिस्तान क्या देगा? इरादा हो तो रास्ते तो बहुत हैं, मगर क्या इरादा है?

—❀—

: १७ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, १७–१–'४८

मेरी जिन्दगी भगवान के हाथ में है

गांधीजी ने बिस्तर में लेटे लेटे माइक्रोफ़ोन पर ३ मिनट भाषण दिया। उन्होंने कहा :

ईश्वर की ही कृपा है कि आज पाँचवाँ दिन है तो भी मैं बगैर परिश्रम के आपको दो शब्द कह सकता हूँ। जो मुझको कहना है, वह तो मैंने लिखवा दिया है, जिसे प्रार्थना-सभा में सुशीला बहन सुना देंगी।

इतना है कि जो कुछ भी आप करें, उसमें परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिये। अगर यह नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। अगर आप मेरा खयाल रखें कि इसे कैसे ज़िन्दा रखा जाय, तो बड़ी भारी गलती करनेवाले हैं। मुझको जिन्दा रखना या मारना किसी के हाथ में नहीं है। वह ईश्वर के हाथ में है, इसमें मुझे कोई शक नहीं है; किसी को भी शक नहीं होना चहिये।

इस उपवास का मतलब है कि अन्तःकरण स्वच्छ हो और जागृत हो। ऐसा करें, तभी सबकी भलाई है। मुझपर दया कर आप कुछ न कीजिये। जितने दिन उपवास के काट सकता हूं, काटूँगा। ईश्वर की इच्छा होगी, तो मर जाऊँगा।

मैं जानता हूँ कि मेरे काफ़ी मित्र दुःखी हैं और सब कहते हैं कि आज ही उपास क्यों न छोड़ा जाय। आज मेरे पास ऐसा सामान नहीं है। ऐसा मिल जाय, तो नहीं छोड़ने का आग्रह नहीं करूँगा। अहिंसा का नियम है कि मर्यादापर कायम रहना चाहिये। अभिमान नहीं करना.

चाहिये। नम्र होना चाहिये। मैं जो कह रहा हूँ उसमें अभिमान नहीं है, शुद्ध प्यारसे कह रहा हूँ। ऐसा जो जानता है, वही रहने वाला है।

दिल की सफ़ाई

गांधी जी ने अपने लिखित संदेश में कहाः—मैं पहले भी कह चुका हूं और फिर से दोहराता हूं कि फ़ाक़े के दबाव के नीचे कुछ भी न किया जाय। मैंने देखा है कि फ़ाक़े के दबाव के नीचे कई बातें कर ली जाती हैं। और फ़ाक़ा खत्म होने के बाद मिट जाती हैं। अगर ऐसा कुछ हुआ तो बहुत बुरी बात होगी। ऐसा कभी होना ही नहीं चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है; वह है दिलकी सफ़ाई। अगर दिलकी सफ़ाई ईमानदारी से की जाय, तो जिस कारण से सफ़ाई की गई थी, वह कारण मिट जाने पर भी सफ़ाई नहीं मिटती। किसी प्रियजन के आने के कारण कमरे में सफेदी की जाती है, तो जब वह आकर चले जाते हैं तो सफेदी मिट नहीं जाती। यह तो जड़ वस्तु की बात है। कुछ अर्से के बाद सफेदी मिटने लगती है और फिर से करवानी पड़ती है। दिलकी सफ़ाई तो एक दफा हो गई, तो मरने तक कायम रहती है। फ़ाक़े का कोई दूसरा योग्य मक़सद नहीं हो सकता।

पाकिस्तान से दो शब्द

राजा, महाराजा और आम लोगों के तारों का ढेर बढ़ रहा है। पाकिस्तान से भी तार आ रहे हैं। वे अच्छे हैं। मगर पाकिस्तान के दोस्त और शुभचिन्तक की हैसियत से मैं पाकिस्तान के रहने वालों और जिनको पाकिस्तान का भविष्य बनाना है, उनको कहना चाहता हूँ कि अगर उनका ज़मीर जागृत न हुआ और अगर वे पाकिस्तान के गुनाह को कबूल नहीं करते, तो पाकिस्तान को कभी कायम नहीं रख सकेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान के दोनों टुकड़े अपनी खुशी से फिरसे एक हों। मगर मैं यह साफ

करना चाहता हूँ कि ज़बरदस्ती से मिटाने का मुझे खयाल तक नहीं आ सकता। मैं उम्मीद रखता हूँ कि मृत्यु शैया पर पड़े मेरे ये वचन किसी को चुभेंगे नहीं। मैं उम्मीद रखता हूँ कि सब पाकिस्तानी समझ जायेंगे कि अगर कमज़ोरी की वजह से या उनका दिल दुखाने के डर से मैं उनके सामने अपने दिल की सच्ची बात न रखूँ, तो मैं अपने प्रति और उनके प्रति झूठा साबित होऊँगा। अगर मेरे हिसाब में कुछ गलती रही हो, तो मुझे बताना चाहिये। मैं वादा करता हूँ कि अगर मैं गलती समझ गया, तो अपना वचन वापस ले लूँगा। मगर जहाँ तक मैं जानता हूँ, पाकिस्तान के गुनाह के बारे में दो विचार हो ही नहीं सकते।

फ़ाक़े से मैं खुश हूं

मेरे उपवास को किसी तरह से भी राजनीतिक न समझा जाय। यह तो अन्तरात्मा की ज़बरदस्त आवाज़ के जवाब में धर्म समझकर किया गया है। महायातना भुगतने के बाद मैंने फ़ाक़ा करने का फ़ैसला किया। दिल्ली के मुसलमान भाई इस बात के साक्षी हैं। उनके प्रतिनिधि करीब करीब रोज मुझे दिन भर की रिपोर्ट देने आते हैं। इस पवित्र मौके पर मेरा उपवास छुड़वाने के हेतु मुझको धोखा देकर राजा-महाराजा, हिन्दू-सिक्ख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेंगे, न हिन्दुस्तान की। वे सब समझ लें कि मैं कभी इतना खुश नहीं रहता, जितना कि आत्मा की ख़ातिर उपवास करते वक्त। इस फ़ाक़े से मुझे हमेशा से ज़्यादा खुशी हासिल हुई है। किसी को इसमें विघ्न डालने की ज़रूरत नही है। विघ्न इसी शर्त पर डाला जा सकता है कि ईमानदारी से आप यह कह सकें कि आपने सोच-समझकर शैतान की तरफ़से अपना मुँह फेर लिया है और ईश्वर की तरफ़ चल पड़े हैं।

: १८ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, १८–१–'४८

आगे का काम

मैंने थोड़ा तो लिखवा दिया है। वह सुशीला बहन आप लोगों को पढ़कर सुना देंगी।

आज का दिन मेरे लिए तो है, आपके लिए भी मंगल-दिन माना जाय। कैसा अच्छा है कि आज ही गुरु गोबिन्दसिंह की जन्म-तिथि है। उसी शुभ तिथि पर मैं आप लोगों की दया से फ़ाक़ा छोड़ सका हूं। जो दया आप लोगों से, दिल्ली के निवासियों से, दिल्ली में जो दुःखी शरणार्थी पड़े हैं उनसे और यहाँ की हुकूमत के सब कारोबार से मुझे मिली है उसे, मुझे लगता है कि मैं जिन्दगी भर भूल नहीं सकूँगा। कलकत्ते में ऐसे ही प्रेम का अनुभव मैंने किया। यहाँ पर मैं यह कैसे भूल सकता हूं कि शहीद साहब ने कलकत्ते में बड़ा काम किया। अगर वे मदद न करते, तो मैं वहाँ ठहरने वाला न था। शहीद साहब के लिए हम लोगों के दिल में बहुत शक़ूक़ अभी भी हैं। उससे हमें क्या? आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उसके साथ हमें दोस्ताना तौर से काम करना है। हम किसी के साथ, किसी हालत में दुश्मनी नहीं करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड़ मुसलमान यूनियन में पड़े हैं, वे सब के सब फरिश्ते तो हैं नहीं। ऐसे ही सब हिन्दू और सिक्ख भी थोड़े ही फरिश्ते हैं? हममें अच्छे लोग भी हैं और बुरे भी हैं, लेकिन बुरे कम हैं। हमारे यहाँ हम जिन्हें जुरायमपेशा जातियाँ कहते हैं, वे

लोग भी पड़े हैं। उन सबके साथ मिलजुल कर हमें रहना है। मुसलमान बड़ी क़ौम है, छोटी क़ौम नहीं है। यहीं नहीं, सारी दुनिया में मुसलमान हैं। अगर हम ऐसी उम्मीद करें कि सारी दुनिया के साथ हम मित्र-भाव से रहेंगे, दोस्ताना तौर से रहेंगे, तो क्या वजह है कि हम यहाँ के मुसलमानों से दुश्मनी करें? मैं भविष्यवेता नहीं हूं, फिर भी मुझे ईश्वर ने अक़्ल दी है, मुझे ईश्वर ने दिल दिया है। उन दोनों को टटोलता हूं और आपको भविष्य सुनाता हूं कि अगर किसी न किसी कारण से हम एक दूसरे से दोस्ती न कर सके, वह भी यहाँ के ही नहीं बल्कि पाकिस्तान के और सारी दुनिया के मुसलमानों से हम दोस्ती न कर सके, तो हम समझ लें—इसमें मुझे कोई शक नहीं—कि हिन्दुस्तान हमारा नहीं रहेगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आज़ादी हमने पाई है, वह आज़ादी हम खो बैठेंगे।

आज मुझे इतने लोगों ने आशीर्वाद दिये हैं, सुनाया है, यक़ीन दिलाया है कि हम सब हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी भाई भाई बनकर रहेंगे; और किसी भी हालत में, कोई कुछ भी कहे, दिल्ली के हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान पारसी, ईसाई सब जो यहाँ के बाशिन्दे हैं और सब शरणार्थी भी दुश्मनी नहीं करने वाले हैं। यह थोड़ी बात नहीं है। इसके मानी ये हैं कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने लोग पड़े हैं, वे सब मिलकर रहेंगे। हमारी कमज़ोरी के कारण हिन्दुस्तान के टुकड़े हो गये, लेकिन वे भी दिल से मिलने हैं। अगर इस फ़ाक़े के छूटने का यह अर्थ नहीं है, तो मैं बड़ी नम्रता से कहूंगा कि फ़ाक़ा छुड़ाकर आपने कोई अच्छा काम नहीं किया। कोई काम ही नहीं किया। अब फ़ाक़े की आत्मा का भली भाँति पालन होना

चाहिये। दिल्ली में और दूसरी जगह में भेद क्यों हो ? जो दिल्ली में हुआ और होगा, वही सारे यूनियन में होगा, तो पाकिस्तान में भी होना ही है। इसमें आप शक न रखें। आप न डरें, एक बच्चे को भी डरने का काम नहीं। आज तक हम, मेरी निगाह में, शैतान की तरफ़ जाते थे। आज से मैं उम्मीद करता हूं कि हम ईश्वर की ओर जाना शुरू करते हैं। लेकिन हम तय करें कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुँह ईश्वर की ओर घुमाया, तो वहाँ से कभी नहीं हटेंगे। ऐसा हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिलकर हम सारी दुनिया को ढँक सकेंगे, सारी दुनिया की सेवा कर सकेंगे और सारी दुनिया को ऊँची ले जास केंगे। मैं और किसी कारण से जिन्दा नहीं रहना चाहता। इन्सान जिन्दा रहता हैं, तो इन्सानियत को ऊँचा उठाने के लिए। ईश्वर और खुदा की तरफ़ जाना ही इन्सान का फ़र्ज़ है। जबान से ईश्वर, खुदा, सत श्री अकाल, कुछ भी नाम लो, वह सब झूठा है, अगर दिल में वह नाम नहीं है। सब एक ही हस्ती है, तो फिर कोई कारण नहीं है कि हम उस चीज़ को भूल जायँ और एक दूसरे को दुश्मन मानें।

आज मैं आप से ज़्यादा कुछ कहने वाला नहीं हूं। लेकिन आजके दिन से हिन्दू निरर्णय कर लें कि हम लड़ेंगे नहीं। मैं चाहूंगा कि हिन्दू कुरान पढ़ें, जैसे वे भगवद्गीता पढ़ते हैं। सिक्ख भी वही करें। और मैं चाहूंगा कि मुस्लिम भाई-बहन भी अपने घरों में ग्रन्थसाहब पढ़ें, गीता पढ़ें, उनके मायने समझें। जैसे हम अपने धर्म को मानते हैं, वैसे दूसरों के धर्म को भी मानें। उर्दू फ़ारसी किसी ज़बान में भी बात लिखी हो, अच्छी बात तो अच्छी ही बात है। जैसे कुरान सरीफ, वैसे गीता और ग्रन्थसाहब हैं। मेरा मकसद यही है। चाहे आप मानें या न मानें अभी तक मैं ऐसा करता रहा हूं। मैं आपको

कहूंगा, और दावे के साथ कहूंगा कि मैं पत्थर की पूजा नहीं करता, मगर मैं सनातनी हिन्दू हूं। पत्थर की पूजा करने वालों से मैं नफ़रत नहीं करता। खुदा पत्थर में भी पड़ा है। जो पत्थर की पूजा करता है, वह उसमें पत्थर नहीं, खुदा देखता है। पत्थर में ईश्वर न मानें तो कुरान शरीफ खुदाई किताब है, यह क्यों माना जायगा? वह क्या बुतपरस्ती नहीं है? दिलों में भेद न रखें तो हम सब यह सीख सकते हैं। ऐसा हो तो फिर यह नहीं होगा कि यह हिन्दू है, यह सिक्ख है, यह मुसलमान है। सब भाई भाई हैं, सब मिलजुल कर रहने वाले हैं। पीछे ट्रेनों में आज जो अनेक क़िस्म की परेशानी होती है—लड़कियों को फेंक दिया जाता है, आदमी फेंक दिये जाते हैं, औरतें फेंक दी जाती हैं। वह सब मिट जायगा। हर कोई आसानी से हर जगह रह सकेंगे। कहीं किसी को डर न होगा। यूनियन ऐसा बने। पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिये। तभी मुझे शान्ति मिलेगी।

मुझको तब तक परम शान्ति नहीं मिलने वाली है, जब तक यहाँ के शरणार्थी, जो पाकिस्तान से दुःखी होकर आये हैं, अपने घरों को वापस न जा सकें और जो मुसलमान यहां से हमारे डरसे और मारपीट से भागे हैं और वापस आना चाहते हैं, वे आराम से यहाँ न रह सकें।

बस इतना ही, कहूंगा। ईश्वर हम सबको, सारी दुनिया को अच्छी अकल दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी तरफ खींच ले, जिससे हिन्दुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।

—❀—

: १६ :

बिरला-भवन, नई दिल्ली, १६-१-'१६४८

धन्यवाद

सारी दुनिया से हिन्दुस्तानियों और दूसरे लोगों ने मेरी सेहत के बारे में चिन्ता और शुभेच्छा बताने वाले अनेक तार भेजे हैं। उनके लिऐ मैं सब भाई-बहनों का आभार मानता हूं। ये तार ज़ाहिर करते हैं कि मेरा क़दम ठीक था। मेरे मन में तो इस बारे मैं कोई शक था ही नहीं। जिस तरह से मेरे मन में कोई शक नहीं कि ईश्वर है और उसका सब से तादृय नाम सत्य है, उसी तरह से मेरे दिल में कोई शक नहीं है कि मेरा फ़ाका सही था। अब मुबारकबाद के तारों का तांता लगा है। चिन्ता का बोझ हल्का होने से लोग आराम की सांस लेने लगे हैं। मित्रगण मुझे क्षमा करेंगे कि मैं सब को अलग-अलग पहुँच नहीं भेजा सकता, ऐसा करना नामुमकिन है। मैं यह भी आशा रखता हूं कि तार भेजने वाले पहुँच की आशा भी नहीं रखते होंगे।

दो चुने हुए तार

तारों के ढेर में से मैं दो तार यहाँ देता हूं। एक पश्चिमी पंजाब के प्रधान मंत्री का है और दूसरा भोपाल के नवाब साहब का। उन लोगों का आज लोग काफ़ी अविश्वास करते हैं। तार तो आप सुनेंगे ही। उस बारे में मैं कुछ कहना नहीं चाहता। अगर ये तार उनके दिलों के सच्चे भाव को ज़ाहिर करने वाले न होते तो क्यों वे उपवास जैसे पवित्र और गम्भीर मौके पर मुझे तार भेजने की तकलीफ़ उठाते?

भोपाल के नवाब साहब अपने तार में लिखते हैं: "सब कौमों दिली मेल के लिए आपकी अपील का हिन्दुस्तान के दोनों हिस्सों के सब शान्ति प्रिय लोग ज़रूर साथ देंगे। इसी तरह से हिन्दुस्तान के दोनों हिस्सों में दोस्ती और समझौता हो, सब लोग इस अपील का भी ज़रूर साथ देंगे। ख़ुश किस्मती से इस रियासत में, पिछले साल में हमारी कठिनाइयों का सामना हम सब क़ौमों के समझौते, प्रेम और मेल के उसूलों पर कर सके हैं। नतीजा यह है कि इस रियासत की शांति भंग करने वाला एक भी क़िस्सा नहीं बना। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हम अपनी पूरी ताकत से इस मेल-जोल और-भाव को बढ़ाने की कोशिश करेंगे।"

मैं पश्चिमी पंजाब के प्रधान मंत्री का तार भी पूरा-पूरा देता हूं। वे लिखते हैं:

"पश्चिमी पंजाब की वज़ारत, आपने एक भले काम को बढ़ाने के लिए जो क़दम उठाया है, उसकी तहे दिल से तारीफ़ करती है और सच्चे हृदय से उसकी क़दर करती है। इस वज़ारत ने अकलियतों की जान-माल और इज्जत बचाने के लिए, जो भी हो सके वह करने का उसूल हमेशा अपने सामने रखा है। वह वज़ारत मानती है कि अकलियतों को अन्य नागरिकों के बराबर हक़ मिलने चाहिएँ। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि यह वज़ारत इस नीति पर, अब और दुगने ज़ोर से अमल करेगी। हमें यही फ़िक्र है कि हिन्दुस्तान के भूखण्ड में एक जगह फौरन हालत सुधरे ताकि आप अपना उपवास छोड़ सकें। आपके जैसी क़ीमती ज़िन्दगी को बचाने के लिए इस सूबे में हमारी कोशिश में कोई क़सर नहीं रहेगी।"

उपवास की शर्तें

आज कल लोग बिना सोचे-समझे नक़ल करने लगते हैं। इस लिए मुझे चेतावनी देनी होगी कि कोई इतने ही समय में इस तरह के परिणाम की आशा रखकर इस तरह का उपवास शुरू न करें। अगर कोई करेगा तो उसे निराश होना पड़ेगा और ऐसे अचूक और शाश्वत उपाय की बदनामी होगी। उपवास की शर्तें कड़ी हैं। अगर ईश्वर में जीता-जागता विश्वास नहीं है और अन्तर्रात्मा से आवाज़, ईश्वरीय हुक्म नहीं निकलता तो उपवास करना फ़िज़ूल है।

तीसरी शर्त भी लगाने की इच्छा होती है मगर इसकी ज़रूरत नहीं है। ईश्वर का हुक्म तभी मिल सकता है जब उपवास का मकसद सच्चा हो, सही हो और बामौका हो। इसमें से यह भी निकलता है कि ऐसे क़दम के लिए पहले से लम्बी तैयारी करनी पड़ती है, इसलिए कोई झट से उपवास करने न बैठे।

देहली के शहरियों के सामने और पाकिस्तान से आये हुए दुःखी लोगों के सामने बहुत बड़ा काम है। उनको चाहिए कि पूरे विश्वास के साथ आपस-आपस में मिलने के मौके ढूँढें।

मुस्लिम महिलाओं से भेंट

कल बहुत सी मुसलमान बहनों से मिलकर मुझे निहायत खुशी हुई, मेरे साथ की लड़कियों ने मुझे बताया कि वे बिरला हाउस में बैठी हुई हैं, मगर जानती नहीं कि अन्दर आयें या न आयें। उनमें से अधिकतर पर्दे में थीं। मैंने उन्हें लाने के लिए कहा और वे आयीं। मैंने उनसे कहा कि अपने पिता और भाई के सामने पर्दा नहीं रखती तो मेरे सामने क्यों?

फ़ौरन हर एक ने पर्दा निकाल दिया। यह पहला मौक़ा नहीं है कि मेरे सामने पर्दा निकाला गया है। मैं इस बात का ज़िकर यह बताने के लिए करता हूं कि सच्चा-प्रेम और मैं दावा करता हूं कि मेरा प्रेम सच्चा है, क्या कर सकता है।

मेल मिलाप बढ़ाओ

हिन्दू और सिक्ख बहनों को मुसलमान बहनों के पास जाना चाहिए और उनसे दोस्ती करना चाहिए। खास खास मौकों पर, त्यौहारों पर उनको निमन्त्रण देना चाहिए और उनका निमन्त्रण स्वीकार करना चाहिए।

मुसलमान लड़के लड़कियाँ आम स्कूलों की तरफ़ खिचें, साम्प्रदायिक स्कूलों की नहीं, वे स्कूलों के खेलों में हिस्सा लें।

मुसलमानों का बहिष्कार न हो

मुसलमानों का बहिष्कार नहीं होना चाहिए, इतना ही नहीं लल्कि उन्हें अनुरोध करना चाहिए कि वे जो धंधे करते थे वह फिर से करने लगेंगे। मुसलमान कारीगर को खोकर दिल्ली ने नुकसान उठाया है। हिन्दू और सिक्खों के लिए यह ख्वाहिश रखना कि वे मुसलमनों से उनकी रोटी कमाने का ज़रिया छीन लें। बहुत बुरी कंजूसी होगी। एक तरफ़ से तो कोई चीज़ या काम पर किसी एक का इजारा नहीं होना चाहिए, दूसरी तरफ़ से किसी को बाहर करने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। हमारा देश बड़ा है, इसमें सब के लिए जगह है।

शान्ति कमेटियाँ जागती रहें

जो शांति कमेटियाँ बनी हैं वे सो न जायें, सब हल्कों में बहुत सी कमेटियाँ दुर्भाग्य से सो जाया करती हैं। मुझे आप लोगों को जिन्दा रखने की शर्त यह है कि हिन्दुस्तान की सब क़ौमें शांति से साथ रहें। और वह शांति तलवार के ज़ोर से नहीं, बल्कि मुहब्बत के ज़ोर से हो। मुहब्बत से बढ़ कर जोड़ने वाली चीज़ दुनिया में दूसरी कोई नहीं है।

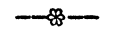

: २० :

बिरला-भवन, नई दिल्ली, २०–१–'१९४८

समझदार बनिए

पहली बात तो यह कह दूँ कि अगर्चे दिल्ली में अमन हो गया और उम्मेद है अच्छा ही होगा और रहेगा—

दस्तख़त करने वालों ने भी सत्यरूप भगवान को गवाह रखकर दस्तख़त किये हैं। फिर भी कलकत्ते से आवज़ आ रही है कि दिल्ली में जो हुआ है उसमें गोल मोल तो नहीं। यहाँ के दुःखी लोग भी अगर साबित क़दम रहेंगे, बाहर कुछ भी हो, इस से यहाँ मेल बिगड़ने न देंगे; तो आप सारे हिन्द को बचा लेंगे। पाकिस्तान को भी बचा लेंगे। दिल्ली छोटी जगह नहीं है। पुराना शहर है यहाँ आप सचाई से, अहिंसा से काम करें तो आपका असर सारी दुनिया पर पड़ेगा। सरदार ने जो बम्बई में कहा है, वह आपने पढ़ा होगा। अगर न पढ़ा हो तो ग़ौर से पढ़ें। सरदार और पंडित जी अलग नहीं हैं। करने की चीज़ एक ही है, कहने का ढंग अलग-अलग है। सरदार मुसलमानों के दुश्मन नहीं हैं। जो मुसलमानों का दुश्मन है वह हिन्द का दुश्मन है। यह समझना चाहिए। अमरीका में कुछ गोरे लोग हबशियों को मार डालते हैं फिर न्याय की बात करते हैं। उसे वे बुरा नहीं समझते, पर हम पसन्द नहीं करते, वहशीपन मानते हैं। हमारे अख़बारवालों ने उनकी बुराई की है। हम इतना तो कह दें कि कोई दूसरा ग़ैर इन्साफ़ी करेगा तो उसका बदला आप खुद न लेंगे। हुकूमत पर छोड़ देंगे। तब सबका काम आराम से चल सकता है।

मैंने कहा है कि शायद मैं पाकिस्तान जाऊँ वह तभी होगा जब पाकिस्तान की हुकूमत मुझे बुलावे, कहे कि तू भला आदमी है, मुसलमान, हिन्दू, सिख किसी का बुरा नहीं कर सकता। पाकिस्तान की कमज़ोर हुकूमत या दोनों तीनों सूबे मुझे बुलावें और जब डाक्टर इजाज़त दें। डाक्टरों ने कहा है कि पन्द्रह दिन तो मुझे ठीक होते लगेंगे। सूखी खुराक़ अभी मैं नहीं खा सकता। फलों का रस या दूध ही ले सकता हूँ।

प्रधान मंत्री का श्रेष्ठ रुख़

पंडित जी को मैं जानता हूं। उनके पास अगर एक गीला और एक सूखा दो बिछौने होंगे तो वह सूखे पर किसी दुःखी को सुलायेंगे और गीला खुद लेंगे या कसरत करके अपने शरीर को गरम रखेंगे। मैं यह पढ़कर बहुत खुश हुआ कि उनका घर मेहमानों से भरा रहता है, फिर भी वह कहते हैं कि अपने घर में दो कमरे निकाल दूँगा उन में दुखियों को रखूँगा। ऐसा ही दूसरे बड़े बड़े धनी लोग और फ़ौज़ी अफ़सर भी करें तो कोई दुखी न रहेगा, उसका बड़ा असर होगा। ऐसे ख़ूबसूरत मुल्क में हमारे पास रत्न हैं। दुखी जब देखेगा कि वह अकेला नहीं है, उसके साथ और भी हैं तो दुखी का दुख दूर होगा, और वह मुसलमानों के साथ दुश्मनी नहीं करेगा।

मेरे उपवास के मौक़े पर कुछ बदमाशों ने कमाने के लिए नोटों का व्यापार किया। ग़रीबों के हाथ नोट बेचे। उनसे मैं कहूंगा कि आप ऐसे नोट क्यों निकालते हैं? क्या पेट भरने के लिए कोई सच्चा रास्ता नहीं मिलता और अपने करोड़ों भोले लोगों से कहूंगा कि आप ऐसे भोले न बनें।

ऐसे ही भोले रहेंगे तो हमारा काम नहीं चलेगा। इसलिए हमें होशियार रहना है।

काश्मीर का प्रश्न

मेरे पास एक तार लाहौर से आया है। प्रेसीडैन्ट काश्मीर फ्रीडम लीग लिखते हैं कि आपने यह तो बुलन्द काम किया है पर यह कामयाब न होगा, जब तक काश्मीर का मामला तय न हो। हिन्द की सरकार अपनी फ़ौज वहाँ से हटा ले। काश्मीर जिसका है उसे मिल जाये।

मैं कहता हूँ कि अगरकाश्मीर का फ़ैसला न हुआ तो क्या काश्मीर के हिन्द, मुस्लमान, सिख एक दूसरे के दुश्मन रहेंगे ? हमारी फ़ौज ने काश्मीर पर हमला नहीं किया। वहाँ तो तब गई जब काश्मीर के मुसलमान अगुआ शेख़ अबदुल्ला और वहाँ के महाराज ने लिखा कि काश्मीर में फ़ौज भेजो, नहीं तो वह गया। यह ठीक है काश्मीर जिनका है उनको मिले। मगर किन को ? वहाँ से बाहर के सब लोग निकाल दिये जायें कोई भी न रहे, तब ही हो सकता है। पर महाराज तो हैं—उन्हें कोई नहीं निकाल सकता। जब महाराज बिल्कुल निकम्मे हों तो ही उन्हें निकाल सकते हैं। वह जो लिखा है ठीक नहीं है। मैं अभी उपवास से उठा हूँ, किसी का दुश्मन नहीं हूँ। आप आकर अपना केस मुझे समझा दें।

ग्वालियर, भावनगर और काठियावाड़ की रियासतें

ग्वालियर से मुसलमानों का तार आया है कि हमें लूटा मारा और अनाज की लूट मचाई गई। यह अगर सच है तो सब को कहूँगा

कि दिल्ली का काम भी आप बिगाड़ने वाले हैं और उससे हुकूमत को शरमिन्दा होना पड़ेगा।

अख़बार में पढ़ा है कि काठियावाड़ में जितने राजा हैं उन्होंने फ़ैसला किया है कि हम सब मिलकर एक राज बनेंगे। यह सच है तो बहुत बड़ी बात है। उन्हें मैं बधाई देता हूँ। भावनगर ने पहल की और प्रजा के हाथों में राज सौंप दिया। वह धन्यवाद और बधाई के लायक़ हैं।

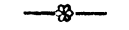

: २१ :

बिरला-भवन, नई दिल्ली, २१-१-'४८

पहले तो मैं माफ़ी मांग लूँ कि मैं दस मिनट देर से आया हूँ। बीमार हूँ, इसलिए समय पर नहीं आ सका।

प्रार्थना में बम

कल के बम फूटने की बात कर लूँ। लोग मेरी तारीफ़ करते हैं और तार भी भेजते हैं। पर मैंने कोई बहादुरी नहीं दिखाई। मैंने तो यही समझा था कि फ़ौज वाले कहीं पर प्रेक्टिस करते हैं। बाद में सुना कि बम था। मुझे कहा गया कि आप मरने वाले थे, पर ईश्वर की कृपा से बच गये। अगर सामने बम फटे और मैं न डरूं, तो आप देखेंगे और कहेंगे कि वह तो बम से मर गया, तो भी हँसता ही रहा। आज मैं तारीफ़ के क़ाबिल नहीं हूं। जिस भाई ने यह काम किया, उस से आप को या किसी को नफ़रत नहीं करनी चाहिए। उसने जो यह मान लिया कि मैं हिन्दू धर्म का दुश्मन हूँ। क्या गीता के चौथे अध्याय में यह नहीं कहा गया कि जहाँ कहीं दुष्ट धर्म को नुक़सान पहुँचाते हैं वहाँ उन्हें मारने के लिए भगवान किसी को भेज देता है। उसने बहादुरी से जवाब दिया। हम सब ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह उसे संमति दे। जिसे हम दुष्ट मानते हैं और वह दुष्ट है तो उसकी ख़बर ईश्वर लेगा।

वह जवान शायद किसी मस्जिद में बैठ गया था। जगह नहीं थी तो वह हुकूमत को दोषी ठहराये पर पोलिस का या किसी का कहना न माने, यह तो ठीक नहीं।

हिन्दू धर्म की सेवा

इस तरह हिन्दू धर्म नहीं बच सकता। मैंने बचपनसे हिन्दू धर्म को पढ़ा और सीखा है। मैं छोटा सा था और डरता था तो मेरी दाई कहती थी कि डरता क्यों है? राम नाम ले। फिर मुझसे ईसाई, मुसलमान, पार्सी सब मिले मगर मैं जैसा छोटी उमर में था वैसा ही आज भी हूं। अगर मुझे हिन्दू धर्म का रक्षक बनना है तो ईश्वर मुझे बनायेगा।

बम फेंकने वाले पर दया

कुछ सिखों ने आ कर मुझ से कहा कि हम नहीं मानते कि इस काम में कोई सिख शामिल था। सिख होता तो भी क्या? हिन्दू और मुसलमान होता तो भी क्या? ईश्वर उसका भला करे। मैंने इन्सपैक्टर जनरल से कहा कि उस आदमी को सताया न जाये, उसका मन जीतने की कोशिश की जाये। उसे छोड़ने को मैं नहीं कह सकता अगर वह इस बात को समझ ले कि उसने हिन्दू धर्म, हिन्दुस्तान, मुसलमान और सारे जगत के सामने अपराध किया है तो उस पर गुस्सा न करें, रहम करें। अगर सबके मन में यही है कि बूढ़े का उपवास निकम्मा था। पर इसे मरने कैसे दें? कौन इसका इल्ज़ाम ले? तो आप गुनहगार हैं, न कि बम फेंकने वाला नौजवान। अगर ऐसा नहीं है तो उस आदमी का दिल अपने आप बदलेगा ही। क्यों कि इस जगत में पाप अपने आप रह नहीं सकता। वह किसी के साहरे ही टिक सकता है। फिर भगवान और मगवान के भक्त हो अपने साहरे रह सकते हैं। इसमें से हमारा असहयोग निकला, अहिंसात्मक असहयोग यहाँ भी ठीक है।

आप भी भगवान का नाम लेते हैं। हमला भी हो, कोई पुलिस भी मदद पर न आये, गोलियाँ भी चलें और तब भी मैं स्थिर रहूं

और राम नाम लेता और आप से लिवाता रहूँ। ऐसी शक्ति ईश्वर मुझे दे, तब मैं धन्यवाद के लायक़ हूँ।

कल एक अनपढ़ बहन ने इतनी हिम्मत दिखाई कि बम फेंकने वाले को पकड़वा दिया यह मुझे अच्छा लगा। मैं मानता हूँ कि कोई मसकीन हो या अनपढ़ हो या पढ़ा लिखा हो, मन है तो सब कुछ है। मन चंगा तो कठौती में गंगा। मुझपर तो सब ने प्रेम ही बरसाया है।

बहावलपुर और सिंध

बहावलपुर वालों ने लिखा है कि हमको जल्दी निकालो नहीं तो सब मरने वाले हैं। मैं कहता हूं कि वे घबरायें नहीं। वहाँ के नवाब साहब ने आज भी मुझे तार दिया हैं कि वे सब कशिश करेंगे। मैं इस चीज़ को भूल नहीं गया हूं।

बम्बई से सिंधी सिख भाइयों की तरफ़ से एक तार आया है। वे कहते हैं कि सिंध में १५००० सिख हैं। कुछ को तो मार डाला है। ये १५००० इधर उधर पड़े हैं। उनकी जान और उनका ईमान ख़तरे में है। उन्हें वहां से निकालने की तजवीज़ कीजिए।

हवाई जहाज़ से ही कोशिश कीजिए, मैं यहाँ जो कहता हूं वह बात उन तक रेडियो द्वारा जल्दी से पहुंचेगी, तार देर से पहुँचते हैं। मुझे यह बर्दाश्त नहीं होगा कि १५००० सिख कांटे जायें या उनके धर्म और इज्जत पर हमला हो, तो मैं एक इन्सान जो कर सकता है। वह करूंगा। दूसरे पंडित जी तो सब का ध्यान रखते ही हैं। सिंध और पाकिस्तान की हकूमत को मैं कहूंगा कि वे सिखों को इतमीनान दिला दें कि जब तक वे वहाँ हैं उनको किसी तरह का ख़तरा नहीं। अगर वे यह नहीं कर सकते, तो सब को एक जगह रखें या हिफ़ाज़त

के साथ भेज दें। सिख बहादुर हैं। उनके धर्म पर हमला कौन करने वाला है? तो सिख भाई इतमीनान रखें। मैंने कुछ पारसी भाई वहाँ देखने को भेजे हैं।

ग़लत मुकाबला

एक भाई लिखते हैं कि जब आप सन् १९४२ में जेल में थे, तब हमने हिंसा का भी काम कर लिया था। उपवास में अगर कहीं आपका अंत हो गया, तो देश में ऐसी हिंसा फूटेगी कि आपका ईश्वर भी रो उठेगा। इसलिए आपका उपवास हिन्सक होगा। आप उपवास छोड़ दीजिए। यह बात प्रेम से लिखी है और अज्ञान से भी। यह सही है कि मेरे जेल जाने के बाद हिंसा हुई। इसका यह नतीजा है। उस वक्त सारा हिन्द हिंसक रहता तो उसका आज का जैसा हाल कभी न होता। मेरे मरने से सब आपस में लड़ेंगे, इस बारे में भी मैंने सोच लिया है। ईश्वर को बचाना होगा तो बचायेगा।

अहिंसा से भरा आदमी भी मरता है, तो उसका नतीजा अच्छा ही होगा। पर कृष्ण भगवान् के मरने के बाद यादव ज़्यादा भले या पवित्र नहीं हुए, सब कट कट कर मर गये तो मैं उस पर रोने वाला नहीं। भगवान ने इरादा कर लिया है कि उन्हें मरने दो तो ऐसा होगा हम यादव तो भले। मैं दीन मसकीन आदमी हूँ। मेरे मरने से क्या लड़ना मरना? पर भगवान मसकीन को भी निमित्त बना कर न मालुम क्या क्या कर सकता है? कहते हैं अब यहाँ के हिन्दू मुसलमान नहीं लड़ेंगे। मुसलमान औरतें भी दिल्ली में घर से बाहर आने लगी हैं। मुझे खुशी है। मैं सब से कहता हूं कि अपने अपने दिल को भगवान् का मंदिर बना लो।

: २२ :

बिरला-भवन, नई दिल्ली, २२–१–'४८

आप देखते हैं कि आहिस्ता आहिस्ता ईश्वर की तरफ़ से मुझ में ताक़त आ रही है। उम्मेद है कि जल्दी पहले जैसा हो जाऊँगा। पर यह सब ईश्वर के हाथों में है।

एक भाई लिखते हैं कि जवाहर लाल जी और दूसरे वज़ीर और फ़ौज़ी अफ़सर वग़ैरा सब अपने अपने घरों में से कुछ जगह शरणार्थियों के लिए निकालें तो भी उसमें कितने लोग बस सकेंगे। कहने वाले ज़्यादा हैं, करने वाले कम।

ठीक है कुछ हज़ार ही उनमें रह सकेंगे। काम इतना बड़ा नहीं पर करने वाले एक मिसाल क़ायम करेंगे। इंग्लैंड के राजा कुछ भी त्याग करते हैं एक प्याला शराब भी छोड़ें तो भी उनकी क़दर होती हैं, सभ्य देशों में ऐसा होता है। सब दुखी लोगों पर अच्छा असर होता है। अगर दूसरे लोग भी उनकी तरह करेंगे, तो उन के लिए मकान वग़ैरा बनाने वालों को तस्ली मिलेगी। अगर नतीजा यह होगा कि दूसरी जगहों से भी लोग दिल्ली आने लगें तो काम बिगड़ेगा। लोगों ने समझा कि दिल्ली में हमारी पूँछ ताँछ ज़्यादा होगी।

ग़रीबी लज्जा की बात नहीं है

दूसरी कठिनाई यह है। लोग कहते हैं कि पहले कांग्रेस को एक लाख रुपये जमा करने में भी मुसीबत थी, लोग देते तो थे, पर हम भिकारी थे। आज करोड़ों रुपये हमारे हाथ में आ गये हैं करोड़ों लेने

की ताक़त आ गई है। लोग कहते हैं ताक़त भले आई पर खर्च तो वही अंग्रेज़ी ज़माने वाला है। जितना रुपया उड़ाना है, उड़ायें, शान से क्यों न रहें, तब उसका असर देश से बाहर भी पड़ेगा। उन्हें समझना चाहिए कि पैसा शौक़ के लिए ख़र्च करना चाहिए, या देश के काम के लिए ? यदि यह बात ठीक है कि हम इंग्लैंड के साथ मुक़ाबला करें तो कर सकते हैं पर वहां एक आदमी की जो आमदनी है उस से यहां बहुत कम है। ऐसा ग़रीब मुल्क दूसरे मुल्कों के साथ पैसे का मुक़ाबला करे, तो वह मर जायगा। दूसरे देशों में हमारे प्रतिनिधि भी यह बात समझें। अमरीका का मुक़ाबला रहने दो। खाने में, पीने में और पार्टियां देने में वह जो दवा करते थे कि हमारी हुकूमत आयेगी तो हमारा भी रंग ढंग बदल जायेगा, वह उन्हें भुला देना चाहिए। हमारे त्यागी कांग्रेसी भी ऐसी ग़लती करें तो यह सोचने की बात है।

फिर लोग कहते हैं कि यह लोग इतने पैसे लेते हैं तब अगर हम हुकूमत की नौकरी करें, तो हमें भी ज़्यादा पैसे मिलने चाहिएँ। सरदार पटेल को अगर १२०० रु० मिलें तो हमें ५०० तो मिलने ही चाहिएँ। यह हिन्दुस्तान में रहने का तरीक़ा नहीं है। जब हर एक आत्म-शुद्धि का प्रयत्न करता हो तब यह सब सोचना कैसा ? पैसे से किसी की क़ीमत नहीं होती।

फिर ग्वालियर

ग्वालियर रियासत के एक गांव में मुसलमानों पर जो गुज़री है, उसे बताने वाले तार की बात मैंने की थी। इस बारे में मुझे वहां के एक कार्यकर्त्ता ने सुनाया कि 'आपको मैं एक खुशख़बरी देने आया हूँ। ग्वालियर के महाराजा ने सब सत्ता प्रजा को दे दी है। थोड़ी जो रखी है, उसमें भी हमारा बहुमत होगा'। उन्होंने मुझसे कहा

कि लोगों को जो सत्ता मिलनी चाहिये वह मिला, यह सुनकर आप खुश होंगे। हाँ, मगर प्रजा मंडल वाले में भेद भाव आजाये और वह मुसलमानों को निकालें, तो मुझे क्या खुशी ? अगर आप कहें कि भेद भाव नहीं होगा। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या पारसी, क्या ईसाई, किसी के हाथ में नहीं करेंगे, तब तो वह मेरा ही काम हुआ। उसमें मेरा धन्यवाद और आशीर्वाद मिलेगा ही।

महाराजा को लोगों का सेवक बनाना है। इस आत्मशुद्धि के यज्ञ में राजा प्रजा सबको अच्छी तरह भाग लेना है। तब तो हम सारी दुनियाँ के सामने खड़े रह सकते हैं। अगर हमें दुनियाँ की चाल को ठीक रखना है और उसके रक्षक बनना है, तो इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं।

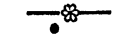

: २३ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, २३-१-'४८

नेता जी का जन्म दिन

आज मेरे पास काफ़ी चीज़ें पड़ी हैं । जितना हो सकेगा, उतना कहूँगा ।

आज सुभाष बाबू की जन्म तिथि है । मैंने कह दिया है कि मैं तो किसी की जन्म तिथि या मृत्यु तिथि याद नहीं रखता । वह आदत मेरी नहीं है । सुभाष बाबू की तिथि मुझे याद दिलाई गई, इससे मैं राज़ी हुआ । इसका भी एक ख़ास कारण है । वह हिंसा के पुजारी थे । मैं अहिंसा का पुजारी हूँ । पर इससे क्या ? मेरे पास गुण की ही क़ीमत है । तुलसीदास जी ने कहा है न :

"जड़-चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार ।
संत-हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार ॥"

हँस जैसे पानी को छोड़ कर दूध ले लेता है, वैसे ही हमें भी करना चाहिये । मनुष्य-मात्र में गुण और दोष दोनों भरे पड़े हैं हमें गुणों को ग्रहण करना चाहिये । दोषों को भूल जाना चाहिये । सुभाष बड़े देश प्रेमी थे । उन्होंने देश के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा दी थी और वह करके भी बता दिया । सेनापति बने । उनकी फ़ौज में हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सिक्ख सब थे । सब बङ्गाली ही थे ऐसा भी न था । उनमें न प्रान्तीयता थी, न रङ्ग भेद, न ज़ात भेद, वह सेनापति थे, इसलिए उन्हें ज़्यादा सहूलियत लेनी या देनी चाहिए ऐसा भी न था ।

एक सज्जन जो एक बड़े वकील थे, उन्होंने मुझसे पूछा कि हिन्दू धर्म की व्याख्या क्या है ? मैंने कहा मैं हिन्दू धर्म की व्याख्या नहीं जानता । मैं आप जैसा वकील कहाँ हूँ ? अपने हिन्दू धर्म की व्याख्या मैं दे सकता हूँ । वह यह है कि जो सब धर्मों को समान माने वही हिन्दू धर्म है । सुभाष बाबू ने सबका मन हरण करके अपना काम किया, इस चीज़ को हम याद रखें ।

सावधानी की ज़रूरत

दूसरी चीज़ ग्वालियर से ख़बर आई है कि रतलाम से जो आपको एक गांव के झगड़े के बारे में खबर मिली थी, वहां कुछ दङ्गा हुआ तो सही, लेकिन आपस में उसमें हिन्दू, मुसलमान की कोई बात न थी । मुझे इससे बड़ी खुशी होती है । इस पर से मैं मुसलमान भाइयों को जागृत करना चाहता हूँ । मैं तो जो चीज़ मेरे सामने आती है, उसे जनता के सामने रख देता हूँ । अगर ऐसी बनी बनाई बात कहते रहेंगे तो सबके दिल में ग़लतफ़हमी हो जायेगी । कोई भी चीज़ ज़्यादा करके न बतायें । अपनी ग़लती बढ़ा कर बतावें, दूसरों की कम करके । यह माना जायगा कि तब हम आत्म शुद्धि के नियम का पालन करते हैं ।

मैसूर, जूनागढ़ और मेरठ

मैसूर से एक तार आया है कि आपने जो व्रत लिया उसका मैसूर की जनता पर असर नहीं पड़ा । वहाँ झगड़ा हो गया है । मैं मैसूर के हिन्दू-मुसलमानों को जानता हूँ । मैंने मैसूर सरकार को लिखा है कि वहाँ जो कुछ हुआ है उसे साफ़ साफ़ दुनियाँ को बता दें ।

जूनागढ़ से मुसलमान भाइयों का तार आया है, वे लिखते हैं कि जब से कमीश्नर और सरदार ने हुकूमत ले ली है, तब से हमें यहाँ न्याय ही मिल रहा है। अब कोई हममें फूट नहीं डाल सकेगा। यह मुझे बड़ा अच्छा लगता है।

मेरठ से एक तार आया है, उसमें लिखा है कि आपके उपवास का नतीजा ठीक आ रहा है। यहां पर जो नैशनलिस्ट मुसलमान हैं, उनसे हमें कोई नफ़रत नहीं है पर लीगी मुसलमान सीधे हो गये हैं, या हो जायेंगे, ऐसा मानोगे तो आपको पछताना पड़ेगा। आपकी अहिंसा अच्छी है, मगर राजनीति में नहीं चल सकती। फिर भी हम आपको कहना चाहते हैं कि आज की हुकूमत है, वह अच्छी है। उस में किसी तरह की तब्दीली नहीं होनी चाहिए।

मैं तो नहीं समझता तब्दीली का सवाल उठता कहाँ है ? मगर तब्दीली की गुन्जायश हो, तो जिनके हाथ में हुकूमत है, उन्हें निकालना आपके हाथों में है। मैं तो इतना ही जानता हूँ कि उन के बिना आज आप काम नहीं चला सकेंगे।

गद्दारों से कैसे निपटा जाये

आज कहना कि राजनीति में अहिंसा चल नहीं सकती, निकम्मी बात है। आज जो काम हम कर रहे हैं, वह हिंसा का है। मगर वह चल नहीं सकता। मेरठ के मुसलमानों ने आज़ादी की लड़ाई में काफ़ी हिस्सा लिया है। आजकल की राजनीति अविश्वास से चल ही नहीं सकती। इसलिए हमें मुसलमानों पर विश्वास दिखाना ही होगा। यदि हमने तय कर लिया है कि भाई भाई बन के रहना है, तो फिर हम किसी मुसलमान पर खामख्वाह अविश्वास न करेंगे, फिर भले वह

लीगी हो। मुसलमान कहें कि हिन्दू, सिख बदमाश हैं, तो यह निकम्मी बात है। ऐसे ही हर एक लीगी के लिए यह मान लेना भी बुरा है। अगर कोई लीगी या कोई भी कोई बुरी बात करता है, तो आप उसकी ख़बर सरकार को दें। अपना परम धर्म हमने सब को बता दिया है कि न्याय हुकूमत के हाथों में रहने दें। अपने हाथ में न ले लें। वह वहशियाना काम होगा। मेरे पास बहुत से तार आ रहे हैं—सब का जवाब नहीं दे सकता, इसलिए सभा की मारफ़त मैं आप सबका अहसान मानता हूँ। आप की दुआ सफल हो।

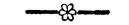

: २४ :

बिरला-भवन, नई दिल्ली, २४–१–'४८

मैंने आप से प्रार्थना तो की है कि प्रार्थना के समय सब को शान्त रहना चाहिए। लेकिन बच्चे चीखते थे और बहनें आपस में बातें करती थीं। अभी भी ऐसा ही है। जो बच्चों को नहीं सँभाल सकते, उन्हें बच्चों को दूर ले जाना चाहिए।

क़ैदियों और भगाई हुई औरतों की अदला बदली

एक तार है। उसपर मुझे कल ही कहना था। वह लम्बा है, उस में लिखा है, दोनों हुकूमतों के बीच यह समझौता हो गया है कि पश्चिमी पंजाब में जो हिन्दू या सिख क़ैदी हैं और पूर्वी पंजाब में जो मुसलमान क़ैदी हैं उनका अदल बदल कर देंगे। उसी तरफ़ की भगाई हुई औरतों और लड़कियों की भी अदल बदल कर देंगे। मगर वह थोड़े दिन चलने के बाद अब बन्द हो गया है। इसकी वजह यह बताई जाती है कि पश्चिमी पंजाब की सरकार कहती है कि पूर्वी पंजाब में जितने देशी राज हैं, उनके सारे क़ैदियों को भी साथ साथ वापस करना ही चाहिए। पूर्वी पंजाब की सरकार का कहना है कि तबादले के समझौते के समय देशी राजों के क़ैदियों का सवाल इसके सामने रखा ही नहीं गया था। अब पश्चिमी-पंजाब की सरकार की तरफ़ से एक नई शर्त डाली जाती है। अगर यह बात सच है तो ठीक नहीं है मगर मैं तो कहूँगा कि पश्चिमी पंजाब के राजों में भले थोड़े ही क़ैदी हों, इस से हमें क्या? मेरी निगाह में तो यह नहीं हो सकता कि पश्चिमी पंजाब से अगर १० लड़कियाँ आती हैं तो पूर्वी पंजाब से भी १० ही जानी चाहिएँ, ग्यारह नहीं। जितनी लड़कियाँ पूर्वी पंजाब में पड़ी हैं, औरतें हैं, पुरुष हैं या दूसरे क़ैदी हैं उन सब को वापस कर देना चाहिए।

लेकिन हम से यह नहीं होता है, क्यों कि हमारे में वैमनस्य भरा है। पश्चिमी पंजाब वालों को भी मेरा यही कहना है कि माना कि कहीं कम या ज़्यादा लड़कियाँ या औरतें भगाई गईं या लोग क़ैद करके रखे गये। लेकिन इरादे की कमी तो कहीं भी नहीं थी। हमें चाहिए कि गिनती किये बिना सब को छोड़ दें। कोई एक लड़की को ले गये वह भी ग़लती है और सौ को ले गये वह भी ग़लती है। आज तो हम सब बिगड़े हैं।

बुराई का मुक़ाबला क्या करना? भगाई हुई औरतों या क़ैदियों के तबादले का जो काम चलता है उसमें रुकावट नहीं आनी चाहिए। दोनों मित्रता से काम कर सकें तो हमारा रास्ता साफ़ हो जाता है। दोनों को मैं कहना चाहता हूँ कि जो कुछ हो गया उसे भूल कर चलना है। हमें अपने धर्म का पालन करना ही चाहिए। अगर हम समझ गये हैं कि हमें अब झगड़ा करना ही नहीं है और हमने आत्म शुद्धि कर ली है तो हमारे बीच ऐसे सवाल उठने ही नहीं चाहिएँ। मेरे पास शिकायत आ रही है कि पश्चिमी पंजाब में जो औरतों को उड़ा ले गये हैं वे उनको जितनी संख्या में चाहिए उतनी संख्या में लौटा नहीं रहे हैं। मैं तो यह बात पूरी पूरी जानता नहीं हूँ, लेकिन अगर यह सच है तो शर्म की बात है। ऐसा ही पूर्वी पंजाब के लिए भी है। अगर वे कहते एक बात हैं और करते दूसरी बात हैं तो यह ठीक नहीं। इसमें दोस्ती होनी चाहिए, नहीं होती तो इतिहास गवाही देगा कि जो उपवास मैंने किया उसकी शर्त के शब्दों का पालन तो दिल्ली वालों ने किया लेकिन उसके रहस्य का नहीं।

अभी भी बहनें बहुत बातें कर रहीं हैं। ऐसे तो मेरा काम आगे नहीं चल सकता। हमेशा प्रार्थना में आना और इस तरह आवाज़ करना ठीक नहीं। मैं कहाँ तक शांति रखने के लिए कहता रहूँ। अगर आप शांत रहें तो मैं क़ाफ़ी कह सकता हूँ। मगर आज वह नहीं होगा।

: २५ :

बिरला-भवन, नई दिल्ली, २५–१–'४८

दिल्ली में पूर्ण शान्ति

अभी हमारे में दिल का समझौता हो गया है, ऐसा लोग कहते हैं। मुसलमानों से पूछता हूँ और हिन्दुओं से भी। सब यही कहते हैं कि हम सब समझ गये हैं कि अगर आपस में लड़ते रहेंगे, तो काम हो नहीं सकेगा। इसलिए आप सब बेफ़िकर रहें। मैं यह पूछना तो नहीं चाहता कि इस सभा में कितने मुसलमान हैं। अगर मैं सब को भाई भाई बनने को कहूंगा। आप किसी भी मुसलमान को अपना दोस्त बना लें या यह मानिए कि जो मुसलमान आपके सामने आता है, वह आपका दोस्त है और उससे कहें कि चलो वहाँ आराम से बैठो। यहाँ किसी से नफ़रत तो है ही नहीं। दो दिन से यहाँ काफ़ी आदमी आ रहे हैं। अगर सब अपने साथ एक एक मुसलमान लाते हैं, तो बहुत बड़ा काम हो जाता है। इससे हम यही बता सकते हैं कि हम भाई भाई हैं।

महरौली का उर्स

महरौली में जो दरगाह है, वहां कल से उर्स शुरू होगा, वैसे तो हर वर्ष होता है। लेकिन इस वर्ष तो हमने दरगाह ढा दिया या बिगाड़ दिया था। जो पत्थर की पच्चीकारी का काम था वह भी ढा दिया गया था। अब कुछ ठीक कर लिया है। इसलिए उर्स जैसे पहले मनता था, वैसा ही अब मनेगा। वहाँ कितने मुसलमान आते हैं, इसका मुझे कोई पता नहीं है। लेकिन इतना तो मुझे मालूम है

कि वहाँ दरगाह में मुसलमान भी काफ़ी जाते थे और हिन्दू भी। मेरी तो उम्मेद है कि आप सब हिन्दू इस बार भी शांति से और पक्की भावना से वहां जायें तो बड़ा अच्छा हो। मुझको पता तो लग जायेगा कि कितने हिन्दू गये और कितने नहीं। लेकिन वे वहाँ जाने वाले मुसलमानों का मज़ाक़ न करें और किसी तरह की निन्दा न करें। पोलीस के लोग वहाँ होंगे तो सही, लेकिन कम से कम होने चाहिएँ। आप सब पोलीस बन जायें और सब काम ऐसी खुशी से हो कि वह चीज़ सारी दुनिया में चली जाये। इतना तो हो गया कि आप बड़े मशहूर हो गये हैं। अख़बारों में भी आता है और मेरे पास तो तार और ख़त दुनियां के हर हिस्से से आते हैं। चीन से तथा एशिया के हर हिस्से से आ रहे हैं, और अमरीका और यूरोप से भी—दुनिया का कोई भी देश बाक़ी नहीं है, और सब यही कहते हैं कि यह तो बहुत बुलन्द काम हो गया है। हम तो मानते थे कि अँग्रेज़ तो वहां से आ गये। अब वे तो जाहिल आदमी हैं और जानते हो नहीं हैं कि अपना राज कैसे चलाना चाहिये। वे तो आपस में लड़ते हैं। १५ अगस्त को हमने आज़ादी तो ले ली। हम तारीफ़ भी कर रहे थे कि हम आज़ादी की लड़ाई में तलवार के ज़ोर से नहीं लड़े। हमने शांति से लड़ाई की या ठंडी ताक़त की लड़ाई की और उसका नतीजा यह हुआ कि हमारी गोद में आकर आज़ादी की देवी रमण करने लगी। १५ अगस्त को ऐसी घटना हो गई। लेकिन बाद में हम उस ऊँचाई से नीचे गिरे और हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों ने एक दूसरे के साथ यह वहशियाना बरताव किया। लेकिन मुझे आशा है कि वह पागलपन कुछ दिन का था। आपके दिल मज़बूत हैं। मालूम होता है मेरे उपवास ने इस पागलपन को दूर करने का काम किया है। मुझे आशा है कि यह हमेशा का इलाज साबित होगा।

"अब मुझे छोड़ दें"

मैं २ फरवरी को वर्धा चला जाऊँगा। राजेन्द्र बाबू भी मेरे साथ जायेंगे। लेकिन मैं वहां से जल्दी ही लौटने की कोशिश करूँगा अख़बारों में छपा यह समाचार ग़लत है कि मैं वहां एक महीने तक ठहरूँगा। लेकिन मैं वर्धा तभी जा सकता हूं, जब आप लोग आशीर्वाद देंगे और यह कहेंगे कि अब आप आराम से जा सकते हैं। हम यहाँ आपस में लड़ने वाले नहीं हैं बाद में मैं पाकिस्तान भी जाऊँगा। लेकिन उसके लिये पाकिस्तान सरकार को मुझे कहना है कि तू आ सकता है और अपना काम कर सकता है। अगर पाकिस्तान के एक भी सूबे की हुकूमत मुझे बुलायेगी, तो भी मैं वहाँ चला जाऊँगा।

भाषावार प्रान्त

जब जब कॉंग्रेस कार्यसमिति की बैठक मेरी हाज़िरी में होती है, तब तब मैं आपको उसके बारे में कुछ न कुछ बता देता हूं। आज कार्यसमिति की दूसरी बैठक हुई और उसमें काफ़ी बातें हुईं। सब बातों में तो आपको दिलचस्पी भी नहीं होगी, लेकिन एक बात आप को बताने लायक़ है। कॉंग्रेस ने २० साल से यह तय कर लिया था कि देश में जितनी बड़ी बड़ी भाषाएँ हैं, उतने प्रान्त होने चाहिएँ। कॉंग्रेस ने यह भी कहा था कि हुकूमत हमारे हाथ में आते ही ऐसे प्रान्त बनाये जायेंगे। वैसे तो आज भी नौ या दस प्रान्त बने हुये हैं और वे भी एक केन्द्र के मातहत हैं। इसी तरह से अगर नये प्रान्त बनें और दिल्ली के मातहत रहें, तब तक कोई हरज की बात नहीं। लेकिन अगर वे सब अलग-अलग होकर आज़ाद हो जायें, और एक

केन्द्र के मातहत न रहें, तो फिर वह एक निकम्मी बात हो जाती है। अलग-अलग प्रान्त बनने के बाद वे यह न समझ लें कि बम्बई का महाराष्ट्र से कोई सम्बन्ध नहीं महाराष्ट्र का करनाटक से नहीं और करनाटक का आन्ध्र से कोई सम्बन्ध नहीं। तब तो हमारा काम बिगड़ जाता है। इसलिए सब आपस में भाई भाई समझें। इसके अलावा भाषावार प्रान्त बन जाते हैं, तो प्रान्तीय भाषाओं की भी तरक्की होती है। वहाँ के लोगों को हिन्दुस्तानी में तालीम देना वाहियात बात है और अँग्रेज़ी में देना तो और भी वाहियात है।

सीमा कमीशन की ज़रूरत नहीं

अब सीमा बन्दी कमीशनों की बात तो हमें भूल जानी चाहिए। लोग आपस में मिल जुल कर नक़शे बना लें और उन्हें पंडित जवाहर लाल के सामने रख दें। वह हुकूमत की तरफ़ से उन पर दस्तख़त दे देंगे। वास्तव में इसी का नाम तो आज़ादी है।

अगर आप केन्द्रिय सरकार को सीमाएँ तय करने के लिए कहें तब तो काम बहुत कठिन हो जायेगा।

—※—

: २६ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, २६-१-'४८

स्वन्तत्रता-दिवस

आज १५ जनवरी स्वतन्त्रता का दिन है। जब तक हमारी आज़ादी की लड़ाई जारी थी और आज़ादी हमारे हाथ में नहीं आई थी, तब तक उसका उत्सव मनाना जरूर मायने रखता था। किन्तु अब आज़ादी हमारे हाथ में आ गई है और हमने उसका स्वाद चखा है तो हमें लगता है कि आज़ादी का हमारा सपना एक भरम ही था जो कि अब ग़लत साबित हुआ है। कम से कम मुझे तो ऐसा लगा है।

आज हम किस चीज का उत्सव मनाने बैठे हैं? हमारा भरम ग़लत साबित हुआ उसका नहीं। मगर हमारी इस आशा का उत्सव मनाने का हमें जरूर हक़ है कि काली से काली घटा अब टल गई है और हम उस रास्ते पर हैं जिस पर आते जाते हुए तुच्छ से तुच्छ ग्रामवासी की गुलामी का अंत आयेगा और वह हिन्दुस्तान के शहरों का दास बनकर नहीं रहेगा बल्कि देहातों के विचार में उद्योगों के माल की बिक्री और बिक्री के लिए शहर के लोगों का उपयोग करेगी। वह यह सिद्ध करेगा कि वह सचमुच हिन्दुस्तान की भूमि का फ़ायदा है।

इस रास्ते पर आगे जाते हुए अंत में सब वर्ग और सम्प्रदाय एक समान होंगे। यह हरगिज न होगा कि बहुसंख्या अल्पसंख्या पर चाहे वह कितनी ही कम या तुच्छ क्यों न हो अपना प्रभुत्व जमाये या

उसके प्रति ऊँच नीच का भाव रखे । हमें चाहिए कि उस आशा के फलीभूत होने में हम ज़्यादा देरी न होने दें कि जिससे लोगों के दिल खट्टे हो जायें ।

दिन प्रतिदिन की हड़तालें और तरह तरह की बदमनी जो देश में चल रही है वह क्या उसी चीज़ की निशानी नहीं कि आशायें पूरी होने में बहुत देर लग रही है ? यह हमारी कमजोरी और रोगसूचक है । मज़दूर वर्ग को अपनी शक्ति और गौरव को पहचानना चाहिए । उनके मुक़ाबिले में वह शक्ति और गौरव पूंजीपतियों में कहाँ है जो कि हमारे आम वर्ग में भरा है । सुव्यवस्थित समाज में हड़तालों का बदमनी के लिए अवसर या अवकाश ही नहीं होना चाहिए । ऐसे समाज में न्याय हासिल करने के लिए काफ़ी कानूनी रास्ते होंगे । खुली या छिपी जोरावरी के लिए स्थान हो न होगा । कारख़ानों या कोयलों की कानों में या और कहीं भी हड़तालें होने से सारे समाज और खुद हड़तालियों को आर्थिक नुक़सान उठाना पड़ता है । मुझे यह याद दिलाना निकम्मा होगा कि यह लम्बा लैक्चर मेरे मुँह में शोभा नहीं देता जबकि मैंने खुद इतनी सफल हड़तालें कराई हैं । अगर कोई ऐसे टीकाकार हैं तो उन्हें याद रखना चाहिए कि उस वक्त न तो आज़ादी थी और न ही इस किस्म के क़ानूनी ज़ाब्ते थे जो कि आजकल हैं । कई बार तो मुझे ताज्जुब होता है कि क्या हम सचमुच ताक़त की सियासी शतरंज और सत्ता पर चंगुल मारने की वजह से जो कि पूर्व और पश्चिम के सब देशों में फैल रही है, बच सकते हैं । इससे पहले कि मैं इस विषय को यहाँ छोड़ूँ, मैं यह आशा प्रकट किए बिना नहीं रह सकता कि यद्यपि हिन्दुस्तान भूगोलिक और राजनैतिक दृष्टि से दो भागों में बट गया । हमारे दिल जुदा नहीं हुए और हम हमेशा के दोस्त बनकर भाइयों की तरह एक दूसरे

को इज़्ज़त की निगाह से देखेंगे। जहाँ तक दुनिया का वाल्लुक़ है हम एक ही रहेंगे।

कन्ट्रोल हटाना और यातायात

कपड़े पर से अंकुश उठाने के फैसले का सब तरफ स्वागत किया गया था। देश में कपड़े की कभी कमी थी ही नहीं। और हो भी कैसे सकती है जबकि देश में इतनी रुई और कातने वाले और बुनने वाले मौजूद हैं। कूटने और जलाने की लकड़ी पर से अंकुश उठने पर भी उतना ही सन्तोष प्रकट किया गया है। यह बड़ी देखने की चीज़ है कि अब बाज़ार में गुड़ ज़रूरत से ज़्यादा आकर जमा हो रहा है और गुड़ ही ग़रीब आदमी की खुराक में गरमी देने वाली चीज़ है कि अंश को पूरा कर सकता है। गुड़ के उन जमे हुए ढेरों को घटाने या जहाँ गुड़ बनता है वहाँ से गुड़ पहुँचाने की कोई सूरत नहीं, अगर तेज़ी से सामान ढोने का बन्दोबस्त न हो। एक मित्र जो इस विषय को खूब समझते हैं, अपने पत्र में लिखते हैं। वह ध्यान देने लायक़ है:—

यह कहने की ज़रूरत नहीं कि अंकुश उठाने की नीति की सफलता का ज़्यादा आधार इस चीज़ पर ही है कि रेलगाड़ी या सड़क से सामान के नकल व हरकत का ठीक ठीक बन्दोबस्त किया जाये। अगर रेल से माल इधर उधर ले जाने के तन्त्र में सुधार न हुआ तो देश भर में कहत फैलने और अंकुश उठाने की सब योजना अस्तव्यस्त हो जाने का डर हैं। 'आज जिस तरह से माल ले जाने का हमारा तन्त्र चल रहा है, उससे दोनों, अंकुश चलाने और अंकुश उठाने की नीति सख़्त ख़तरे में है। हिन्दुस्तान के जुदा जुदा हिस्सों में,

भाव में इतना भयङ्कर फरक़ होने की वजह यही माल उठाने के साधनों की कमी ही है । अगर गुड़ रोहतक में ८ रु० मन और बम्बई में ४० रु० मन के हिसाब से बिकता है तो यह साफ बताता है कि रेलवे तन्त्र में कहीं सख़्त गड़बड़ है महीनों तक मालगाड़ी के डिब्बों में से सामान नहीं उतारा जाता। डिब्बों और कोयलों की कमी और तरह तरह के माल तरजीह देने के बहाने माल गाड़ी के डिब्बों पर माल लादने में सख़्त बेईमानी और घूसख़ोरी का बाज़ार गरम है। एक डिब्बे को किराये पर हासिल करने के लिए सैंकड़ों रुपये ख़र्च करने पड़ते हैं और कई कई दिनों तक स्टेशनों पर झक मारनी पड़ती है। डिब्बों की मांग पूरी करने और डिब्बों को चलते रहने में ट्रान्सपोर्ट के मंत्री की अभी तक कुछ चली नहीं । अगर अंकुश उठाने की नीति को सफल बनाना है तो ट्रान्सपोर्ट के मंत्री को रेल और सड़क की सारी ट्रान्सपोर्ट व्यवस्था की फिर से पड़ताल करनी होगी, तभी यह नीति जिन ग़रीब लोगों को राहत देने के लिए चलाई जा रही है उनको फायदा पहुंचायेगी। आज इस ट्रान्सपोर्ट के नुक्स से लाखों और करोड़ों देहातियों को सख़्त तकलीफ़ उठानी पड़ती है और उनका माल मंडी तक पहुंचने ही नहीं पाता।

*

जैसा मैं पहले लिख चुका हूँ। पैट्रोल का राशनिङ्ग बन्द करना ही चाहिए और सड़क से सामान के साधनों का इजारा और परमिट का तरीक़ा बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए । इजारे में थोड़ी ट्रान्सपोर्ट कम्पनियों का ही लाभ होता है और करोड़ों ग़रीबों का जीवन दूभर हो रहा है। अंकुश उठाने की नीति की ९० फीसदी सफलता ऊपर दी गई शर्तों पर ही निर्भर है। जो सूचनायें ऊपर दी गई हैं।

उन पर अमल हुआ तो परिणामस्वरूप देहातों से लाखों टन खाद्य पदार्थ और दूसरा माल देश भर में आने लगेगा।

घूसखोरी का राक्षस

यह बेईमानी और घूसख़ोरी का विषय कोई नया नहीं है केवल अब पहले से बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। बाहर का अंकुश तो कुछ रहा ही नहीं, इसलिए यह घूसख़ोरी तब तक बन्द न होगी जब तक जो लोग इसमें पड़े हैं, वे समझ लें कि वे देश के लिए हैं, न कि देश उनके लिए। उसके लिए जरूरत होगी एक ऊँचे दरजे के नैतिक शासन की। उन लोगों की तरफ से, जो खुद घूसखोरी के इस मरज से बचे हुए हैं, और जिनका घूसखोर अमलदारों पर प्रभाव है, ऐसे मुआमिलों में उदासीनता दिखाना गुनाह है। अगर हमारी संध्याकाल की प्रार्थना में कुछ भी सचाई है, तो घूसखोरी के इस दौर को खतम करने में इससे काफ़ी मदद मिलेगी।

—❀—

: २७ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, २९–१'४८

मुसलमान और प्रार्थना-सभा

प्रार्थना-सभा में गांधी जी ने आज पूछा कि कितने मुसलमान हाज़िर हैं ? एक ही हाथ ऊपर उठा। गांधीजी ने कहा, इससे मुझे सन्तोष नहीं होता। प्रार्थना में आने वाले सब हिन्दू और सिक्ख भाई-बहन अपने साथ एक एक मुसलमान को लावें।

महरौली का उर्स

उसके बाद महरौली की दरगाह शरीफ़ मे उर्स के मेले का ज़िक्र करते हुए, जिसमें आज सुबह गांधी जी खुद गये थे, उन्होंने कहा, किसी को वहाँ आने-जाने में झिझक नहीं थी। मैंने जान बूझ कर मुसलमान भाइयों से पूछा कि हमेशा जितने आते थे, उतने तो नहीं आ सके होंगे। तो उन्होंने कहा, कुछ डर तो रहा ही होगा। हम में ऐसे लोग भी हैं न, जो डर-सा बता देते हैं। वे कहते हैं, अलाहाबाद में कुछ हो गया है, वही यहाँ हुआ, तो हिन्दू क्या करेंगे ? इन्सान इन्सान से डरे, यह कितनी शर्म की बात है ! लेकिन कम से कम मैंने इतना तो पाया कि जितनी तादाद वहाँ मुसलमानों की थी, उतनी ही हिन्दुओं की भी थी और उनमें सिक्ख भी काफ़ी थे। पीछे एक दुःखद बात भी मैंने देखी—वह दरगाह तो बादशाही ज़माने की है। आज की थोड़े ही है। बहुत पुराने ज़माने की है, अजमेर की दरगाह शरीफ़ से दूसरे नम्बर पर आती है—मुख्य चीज़ वहाँ का नक्काशी का काम ही था। वह बहुत खूबसूरत था। वह सब तो नहीं लेकिन काफ़ी ढा

दिया गया है। नक्काशी की जालियाँ काफ़ी तोड़ डाली गई हैं। मुझे यह देख कर बहुत दुःख हुआ। मैं तो उसे वहशियाना चीज़ ही कह सकता हूँ। मैंने अपने दिल से पूछा, क्या हम यहाँ तक गिर गये हैं कि एक जगह पर किसी औलिया की कब्र बनाई गई है—और कब्र भी आलीशान, हजारा रुपये उस पर खर्च हुए हैं—उसको हम इस तरह नुकसान पहुँचावें? माना कि इससे भी बदतर पाकिस्तान में हुआ है। यहाँ एक गुना हुआ और वहाँ दस गुना। इसका हिसाब मैं नहीं कर रहा। मेरे नज़दीक तो चाहे थोड़ा गुनाह करो, चाहे ज़्यादा; उसकी तुलना मैं नहीं करता। वहाँ जो हुआ, वह शर्मनाक है। लेकिन सारी दुनिया अगर शर्मनाक बात करती है, तो क्या हम भी करें? ऐसा नहीं करना चाहिये, यह आप भी मानेंगे।

मुझको पता चला है कि दरगाह में हिन्दू और मुसलमान दोनों काफ़ी तादाद में आते हैं। और मिन्नत भी लेते हैं। जो औलिया यहाँ और अजमेर सरीफ़ में हो गये हैं, वे ऐसा बड़ा दर्जा रखते हैं। उनके दिल में हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद भाव नहीं था। यह तो ऐतहासिक बात थी और सच थी। मुझे झूठ बताने में किसी को कुछ फ़ायदा नहीं। ऐसे जो औलिया हो गये हैं, उनका आदर होना ही चाहिये। पाकिस्तान में क्या होता है, उस तरफ हम न देखें।

सरहदी सूबे में और ज़्यादा हत्यायें

आज ही मैंने अख़बारों में देखा है कि पाकिस्तान में एक जगह १३० हिन्दू और सिक्ख कत्ल हो गये हैं और पीछे वहाँ लूट-पाट भी हुई। किसने उनको कत्ल किया? सरहदी सूबे के ऊपर जो छोटी-छोटी कौमें मुसलमानों की रही हैं, उन्होंने बस उन पर हमला किया और

उन्हें मार डाला। उन लोगों ने कोई गुनाह किया था, ऐसा कोई नहीं कहता। पाकिस्तान की हुकूमत ने जो बयान निकाला है, उसमें यह भी कहा है कि कई हमलावरों को हुकूमत ने मार डाला। जब वे कहते हैं, तब उनकी बात हमें मान लेनी चाहिये। वहां जो हुआ, उस पर हम गुस्सा करें और यहां भी मारना शुरू कर दें, तो वह वहशियाना बात होगी। आज तो आप भाई भाई होकर मिलते हैं, पर दिल में अगर गन्दगी है, बैर या द्वेष है, तो जो प्रतिज्ञा आपने ली थी, उसे झुठला देते हैं। पीछे हम सब की खाना-खराबी होने वाली है। यहाँ सबने यह महसूस किया। किसी से मैंने पूछा तो नहीं, पर उनकी आँखों पर से मैं समझ गया। पाकिस्तान में जो कुछ हुआ, उसका हिसाब लेना हमारी हुकूमत का काम है। उसका काम वह जाने। हमारा काम तो यही है कि एक दूसरे का दिल साफ करने की जो कसम हमने खाई है, उसे क़ायम रखें, और उसपर अमल करें।

अजमेर के हरिजन

अभी अजमेर में राजकुमारी बहन चली गई थीं। उन्होंने वहाँ की एक खतरनाक और हमारे लिए बड़ी शर्म की बात सुनाई। वहां जो हरिजन रहते हैं उनसे वहाँ वाले काम लेते हैं, और वे करते हैं। मगर जिस जगह वे रहते हैं, वह बहुत गंदी और मैली है। वहाँ तो हमारी ही हुकूमत है और अच्छी खासी हुकूमत है। वहाँ के हिन्दू और सिक्ख अमलदार इसी हुकूमत के मातहत काम करते हैं। क्या उन्हें ख़्याल नहीं आता कि ऐसा शर्म का काम कैसे करते हैं? वहाँ सफेद पोशाक पहनने वाले बहुत से हिन्दू हैं। वे खासा पैसा कमाते हैं और खुशहाली में रहते हैं। वे क्यों न एक दिन के लिए हरिजन-बस्ती में जाकर रहें? वे अगर वहां जायें, तो उन्हें कय हो जायगी और उनमें से कोई तो

शायद मर भी जावेंगे। ऐसी जगह इन्सानों को रखना, क्योंकि उनका यह गुनाह है कि हरिजनों के घर पैदा हुए, बहुत बुरी बात है। यहाँ दिल्ली में भी मैं हरिजनों की बस्ती में गया हूँ। वह भी बहुत खराब है। मगर अजमेर उस से भी बदतर है। यह बड़ी शरम की बात है। क्या ऐसी शर्मनाक बातें हम करते ही रहेंगे? हमने आज़ादी तो पाई, लेकिन उस आज़ादी की तब तक कोई क़ीमत नहीं, जब तक हम इस तरह की चीज़ें बन्द नहीं कर सकते। यह एक दिन में बन्द हो सकता है। क्या हम हरिजनों को सूखी जगह में नहीं रख सकते? वे मैला उठाने का काम तो करें, लेकिन वे मैले ही पड़े रहें, ऐसा तो नहीं हो सकता। हमारी तो आज अकल मारी गई है। हमारे पास हृदय नहीं रहा और हम ईश्वर को भूल गये हैं। इसलिए तो गुनाह के काम करते जाते हैं। और पीछे हम एक-दूसरे का ऐब निकालें, दूसरों को दोष दें और खुद निर्दोष बनें, यह बड़ी खतरनाक बात है।

मीरपुर के दुःखी

अन्त में एक और बात कहना चाहता हूँ; और वह है मीरपुर के बारे में। एक दफा तो मैंने थोड़ासा कहा भी था। मीरपुर काश्मीर में है। अब वह हमलावरों के हाथ में है। वहाँ हमारी काफी बहनें थीं। उन्हें वे उडा ले गये हैं। उनमें बूढ़ी भी हैं और नौजवान भी। वे उनके कब्जे में पड़ी हैं। उन्हें वे बेआबरू भी कर लेते हैं; जिसमें मेरे दिल में कोई शक नहीं। खाना भी उन्हें बुरा दिया जाता है। चन्द बहनें तो पाकिस्तान के इलाके में हैं—गुजरात जिले में झेलम तक शायद पहुँची होंगी।

मैं तो कहूँगा कि जो हमलावर हमला कर रहे हैं, उनमें भी कुछ तो मर्यादा या हद होनी चाहिए। मैं हमलावरों से कहता

कि आप इस्लाम को बिगाड़ने के लिए यह काम कर रहे हैं और कहते यह हैं कि आज़ाद काश्मीर के लिए कर रहे हैं। कोई खाने के लिए लूटपाट करे; वह मैं समझ सकता हूँ। लेकिन जो छोटी लड़कियाँ हैं; उन्हें बेइज़्ज़त करना, उन्हें खाने और पहनने को न देना, यह भी क्या आपको कुरान शरीफ ने सिखाया है? और पीछे पाकिस्तान में जिन लड़कियों को उठाकर ले गये हैं, उनके बारे में मैं पाकिस्तान की हुकूमत से मिन्नत करूँगा कि इस तरह की जो भी लड़कियां हैं, उन्हें वापिस करदें और उन्हें अपने घरों को जाने दें।

बेचारे मीरपुर के लोग मेरे पास आये हैं। वे काफी तगड़े हैं और शरमिन्दा होते हैं। मुझे सुनाते हैं कि क्या वजह है कि हमारी इतनी बड़ी हुकूमत इतना सा काम भी नहीं कर सकती? मैंने उन्हें समझाने की कोशिश तो की। जवाहरलाल जी इस बारे में कोशिश कर रहे हैं और बहुत दुःखी हैं। लेकिन उनके दुःखी होने से और उनके कोशिश करने से भी क्या? जो लोग लुट गये हैं, ताराज हो गये हैं, जिन्होंने अपने रिश्तेदारों को गँवा दिया है, उनको कैसे सन्तोष दिलाया जाय? आज जो भाई आया, उसके १५ आदमी वहाँ कत्ल हो गये हैं। उसने कहा, अभी जो वहाँ पड़े हैं उनका क्या हाल होने वाला है? मैंने सोचा कि दुनिया के नाम से और ईश्वर के नाम से वहाँ जो हमलावर पड़े हैं, उनसे और उनके पीछे पाकिस्तान से भी यह कहूँ कि आप बिना किसी के मांगे अपने आप शोहरत के साथ उन बहनों को वापिस लौटा दें। ऐसा करना उनका धर्म है। मैं इस्लाम को काफी जानता हूँ और मैंने उस बारे में काफ़ी पढ़ा भी है। इस्लाम यह कभी नहीं सिखाता कि औरतों को उड़ा ले जाओ और उन्हें इस तरह रखो। वह धर्म नहीं, अधर्म है। वह शैतान की पूजा है, ईश्वर की नहीं।

—※—

: २८ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, २८–१–'४८

बहावलपुर के दोस्तों से

प्रार्थना के बाद अपना भाषण शुरू करते हुए गांधी जी ने जिक्र किया कि बहावलपुर के कुछ भाइयों की शिकायत थी कि उन्होंने मिलने का समय माँगा था, पर उन्हें समय नहीं दिया गया। गांधीजी ने उनके लिये समय निकालने का वचन दिया, और विश्वास दिलाया कि उनके लिये जो भी किया जा सकता है, किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि डॉ० सुशीला नय्यर और लेसली क्रॉस साहब बहावलपुर चले गये हैं और नवाब ने उनकी पूरी सहायता करने के लिए कहा है।

राजधानी में शान्ति

भगवान की कृपा से यूनियन की राजधानी दिल्ली में तीनों जातियों में फिर से शान्ति कायम हो गई है। जिससे सारे हिन्दुस्तान में हालत जरूर सुधरेगी।

दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह

दक्षिण अफ्रीका का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा—आप जानते हैं कि दक्षिण अफ्रीका में हमारे लोग अपने हकों के लिए लड़ रहे हैं। यहाँ इस तरह कोई किसी के हक नहीं छीनता कि लोग कहीं जमीन न ले सकें; जहां रहना चाहते हों, वहां रह न सकें। हरिजनों के हमने जरूर ऐसे हाल कर दिए हैं। पर बाकी हिन्दुस्तान में ऐसा

कुछ है ही नहीं। लेकिन दक्षिण अफ्रीका में तो ऐसा है, उसका मैं गवाह हूँ। इसलिए वे वहां हिन्दुस्तान का मान रखने के लिए और हिन्दुस्तान के हकों के लिए लड़ रहे हैं। बहुत तरीकों से वे लड़ सकते हैं। लेकिन वे तो सत्याग्रही होने का दावा करते हैं। इसलिए सत्याग्रह की लड़ाई लड़ रहे हैं। उनके तार भी आ जाते हैं। वे बिना परवाने के कहीं जा भी नहीं सकते—जैसे नेटाल, ट्रान्सवाल; हिल स्टेट, केपकालोनी वगैरा में ऐसा सिलसिला रहा है। दक्षिण अफ्रीका एक खंड जैसा है; कोई छोटा-मोटा मुल्क नहीं है। नेटाल से अगर परवाना मिले, तो वे ट्रान्सवाल जा सकते हैं, नहीं तो नहीं। तो उन सबने कहा कि यह हमारा भी मुल्क है। क्यों हमारे इधर उधर जाने में किसी तरह की रुकावट हो? बहुत से तो वहां चले भी गये, और मुझे कहना पड़ेगा कि इस वक्त तो वहां की हुकूमत ने कुछ शराफत बताई है। उन्हें अभी तक पकड़ा नहीं। ट्रान्सवाल का जो पहला शहर आता है फाकसेस; वहां वे चले गये हैं। आगे चलकर उन्हें पकड़ सकते हैं; पर अभी तक पकड़ा नहीं है। हुकूमत के सिपाही तो वहां मौजूद थे, लेकिन वे सब देखते रहे और उन्हें कुछ कहा नहीं। वहां उन्हें मोटर भी खड़ी मिली; जिसमें बैठकर वे आगे चले गये। और वहां जलसा हुआ, जिसमें उनका स्वागत-सत्कार किया गया। मैंने सोचा कि इतनी खबर तो आपको दे दूँ। यह बड़ी बहादुरी का काम है। वहां हिन्दुस्तानी छोटी तादाद में हैं, लेकिन छोटी तादाद में रहते हुये भी अगर सब हिन्दी सत्याग्रही बन जावें, तो उनकी जय ही है। कोई रुकावट उनके आगे नहीं ठहर सकती। लेकिन ऐसा अभी तक बना तो नहीं है। जैसे यहां, वैसे वहां सब तरह के लोग रहते हैं। वहां थोड़े हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। वे सब मिलजुल कर

यह काम करते हैं । वे जानते हैं कि इसमें कमाने की कोई बात नहीं । और मैले आदमियों से तो यह लड़ाई लड़ी भी नहीं जाती । वे जोहान्सबर्ग तक पहुँच तो गये हैं ! लेकिन आखिर तक तो बचे नहीं रह सकते, ऐसा मेरा ख्याल है । उन्हें चलते ही जाना है, आखिर तक जाना है, जब तक कि पकड़े न जावें । पकड़ने का वहां की हुकूमत को हक है; क्योंकि सत्याग्रह में यह चीज तो पड़ी ही है कि जब कानून का भङ्ग किया जाय, तब उन्हें पकड सकते हैं, और जेल के भीतर जाकर वे कानून की पाबन्दी करते हैं । मैं तो इतना ही कहूँगा कि हमारी तरफ़ से उन्हें धन्यवाद मिलना ही चाहिये, और वह है । मैं जानता हूँ कि इस बारे में दूसरी आवाज़ निकल ही नहीं सकती । वहां की हुकूमत से भी मैं कहता हूँ कि ऐसे जो लोग लड़ते हैं, इतनी शराफत से लड़ते हैं, उन्हें हलाक क्या करना है ? उनकी चीज़ को समझ लें और फिर आपस में समझौता क्यों न कर लें ? ऐसा क्यों हो कि जिसकी सफ़ेद चमडी है, वह काली चमड़ी वाले के साथ कुछ बहस नहीं कर सकता ? या अगर वहाँ के हिन्दुस्तानियों को संतोष देना है, इन्साफ देना है, तो उसके लिए उन्हें लड़ना क्यों पड़े ? अगर हिन्दुस्तानी भी उसी जगह रहें, तो उन्हें (गोरों को) कष्ट क्या हो सकता है ? उन्हें कोई कष्ट नहीं होना चाहिये । दक्षिण अफ्रीका की हुकूमत को हिन्दुस्तानियों के साथ सलाह-मशविरा करके सलूक से रहना चाहिये और उनको संतोष दिलाना चाहिये । आज हम भी आज़ाद हैं और वे भी आज़ाद हैं, और एक ही हुकूमत के हिस्सेदारों की हैसियत से रहते हैं । दक्षिण अफ्रीका भी एक डोमिनियन है, और इण्डियन यूनियन भी एक डोमिनियन है और पाकिस्तान भी एक डोमिनियन है । तब सब भाई-भाई बनकर रहें; यह उनके गर्भ में पड़ा है । इसमें उलटे,

वे आपस-आपस में लड़ें और हिन्दुस्तान को अपना दुश्मन मानें—हिन्दुस्तानियों को जब वहां शहरी के हक न मिलें, तो फिर वे दुश्मन नहीं हैं तो और क्या हैं ?—तो यह समझ में न आ सके ऐसी चीज है। क्यों ऐसा माना जाय कि जो काली चमड़ी वाले हैं, वे निकम्मे हैं ? अगर वे उद्यम कर सकते हैं और थोड़े पैसे में रह सकते हैं, तो वह क्या कोई गुनाह है ? लेकिन वह गुनाह बन गया है। इसलिए इस सभा की मारफत मैं दक्षिण अफ्रीका की हुकूमत से कहना चाहता हूँ कि वे सही रास्ते पर चलें। मैं भी वहां २० वर्ष तक रहा हूँ। इसलिए मेरा भी वह मुल्क बन गया है, ऐसा कह सकता हूँ। यह सब कहना तो मुझे कल चाहिये था, लेकिन कह नहीं पाया।

मैसूर के मुसलमान

मैसूर के मुसलमानों ने कुछ दिन पहले तार भेजा था कि आपके उपवास का यहां कुछ भी असर नहीं हुआ और मुसलमानों को हलाक किया जा रहा है। इस बारे में मैंने कुछ कहा भी था। उसके उत्तर में आज मैसूर के गृह-मंत्री का तार आया है, जिसमें पहले तार का खंडन किया है और बताया है कि मुसलमानों के साथ इन्साफ करने की पूरी कोशिश हो रही है। जैसे मैं सबसे कहता हूँ, वैसे मैसूर के मुसलमान भाइयों से कहूँगा कि वे किसी चीज के बारे में अतिशयोक्ति न करें। ऐसा करने से मेरे हाथ-पांव बँध जाते हैं और मैं किसी काम का नहीं रहता। पहले भी कह चुका हूँ और फिर मुसलमान भाइयों से कहता हूँ कि वे किसी चीज को बढ़ाकर न कहें; अगर कर सकें, तो कुछ कम ही करें। यही रास्ता है हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों के मिल-जुलकर और

भाई-भाई बनकर रहने का । इतना बूढ़ा हो गया हूँ; तो भी सारी दुनिया में दूसरा कोई रास्ता मैंने नहीं पाया ।

दाताओं से दो शब्द

हमारे लोग ऐसे भोले हैं कि डाक में ही पैसे भेज देते हैं । मुझे अपने बाप के समय से तजरबा है । उनके पास कुछ जेवर था— एक छोटासा मोती था, लेकिन कीमती था । उन्होंने वह डाक से भेज दिया । तब से मैं जानता हूँ कि ऐसा नहीं करना चाहिये । उसमें कोई चोरी नहीं, लेकिन ख़तरा तो उठाना ही पड़ता है । कोई डाकको खोल न ले, तो फिर मोती कोई छिपा थोड़े ही रह सकता है ? और पैसे तो उन्हें फिर भी ख़रचने ही पड़े. क्योंकि उसकी पहुँच का तार मँगवाया । तो मेरे पिता को इस चीज़ का दुःख हुआ । लेकिन आज भी मेरे पिता के जैसे भोले आदमी हैं । वे समझ लेते हैं कि पैसे भेजने हैं, तो कौन उन्हें बीच में छुएगा ? आज तक तो खैर ऐसे ही पैसे आते रहे हैं । आज तो एक भाई ने एक हजार से ऊपर के नोट डाक में बन्द करके भेज दिये । उसकी रजिस्ट्री भी नहीं कराई और न बीमा । जो मामूली टिकट लिफाफे पर लगाते हैं, सो लगाकर भेज दिये । आजकल तो लोग बहुत बिगड़ गये हैं । पैसा खा जाते हैं और रिश्वत भी लेते हैं । लेकिन ये नोट तो मेरे पास आ गये । यह अच्छी बात है, और हमारे पोस्ट आफिस के लिए यह छोटी बात नहीं कि इस तरह इतने पैसे सुरक्षित आ जाते हैं । वे देखना भी नहीं चाहते कि भीतर क्या है ? जब वे मुझको सब कुछ सुरक्षित भेज देते हैं, तो दूसरों को भी भेज देते होंगे । लेकिन पैसे भेजने वालों से मुझे कहना है कि उन्हें इस तरह का ख़तरा नहीं उठाना चाहिये, क्यों कि आखिर कुछ बदमाश तो रहते ही हैं । डाक को अगर कोई खोल ले, तो मेरे और जिन हरिजनों के

लिए उन्होंने रुपये भेजे हैं, उनके क्या हाल होने वाले हैं ? और जो दान देने वाले हैं, उनके क्या हाल होंगे ? तो वे ठीक तरीके से रुपये भेजें। उसपर जो खर्च हो सो काटकर भले उतना कम भेजें। डाकखाने में जो काम करते हैं, उन्हें तो मैं मुबारकबाद देता हूँ कि वे इस तरह काम करते हैं कि कोई घूँस नहीं लेते। बाकी जो सब महकमे हैं, वे भी ऐसा ही करें। जो लोगों का पैसा हो, उसकी हिफ़ाजत करें। किसी से रिश्वत का पैसा न लें, तो हम बहुत आगे बढ़ जाते हैं। ऐसा लालच किसी को होना ही नहीं चाहिये, और किसी के रास्ते में रखना भी नहीं चाहिये। इसलिए मैं इन आदमियों से कहूँगा कि आप मनीआर्डर भेज दें। उसमें कितने पैसे लगते हैं ? ऐसा न करें, तो रजिस्टर्ड पोस्ट से भेज दें। उसमें पैसा थोड़ा ही ज़्यादा लगता है और खैरियत से सब पहुँच भी जाता है। ऐसा आप न करें कि मामूली डाक से हजारों के नोट भेज दिये।

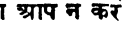

: २६ :

बिड़ला-भवन, नई दिल्ली, २६-१-'४८

कहने की चीज़ें तो काफ़ी पड़ी हैं। आज के लिए ६ चुनी हैं। १५ मिनट में जितना कह सकूँगा, कहूंगा। देखता हूँ कि मुझे यहाँ आने में थोड़ी देर हो गई है। वह होनी नहीं चाहिये थी।

बहावलपुर को डेपुटेशन

सुशीला बहन बहावलपुर गई है। वहां के दुःखी लोगों को देखने गई है। दूसरा कोई अधिकार तो है नहीं, न हो सकता था। फ्रेण्ड्स सर्विस के लेसली क्रॉस साहब के साथ वह गई है। मैंने फ्रेण्ड्स यूनिट में से किसी को भेजने का सोचा था, ताकि वह वहां के लोगों को देखे, मिले और मुझे सब हालत बता दे। उस समय सुशीला बहन के जाने का बात नहीं थी। लेकिन जब उसने सुना कि वहाँ पर सैकड़ों आदमी बीमार पड़े हैं, तो उसने मुझे पूछा कि मैं भी जाऊँ क्या ? मुझे वह बहुत अच्छा लगा। वह नोआखाली में काम करती थी, तब से फ्रेण्ड्स यूनिट के साथ उसका सम्पर्क था। वह आखिर कुशल डाक्टर है और पंजाब के गुजरात इलाके की है। उसने भी काफ़ी गँवाया है। क्योंकि उसकी तो वहाँ काफ़ी जायदाद है। फिर भी उसके दिल में कोई ज़हर पैदा नहीं हुआ। वह गई है; क्योंकि वह पंजाबी जानती है; हिन्दुस्तानी जानती हैं। उर्दू और अंग्रेजी भी जानती हैं। वह क्रॉस साहब को मदद दे सकेगी। वहां जाने में ख़तरा हैं। लेकिन उसने कहा, मुझ को क्या ख़तरा है ? ऐसे डरती तो नोआखाली क्यों जाती ? पंजाब में बहुत लोग मर गये हैं, बिलकुल मटियामेट हो गये हैं, लेकिन मेरा तो

पैसा नहीं। खान-पीना मिलता है, सब कुछ ईश्वर करता है। सो आप भेजेंगे और क्रॉस साहब ले जायेंगे, तो मैं वहां के लोगों को देख लूँगी मैंने क्रॉस साहब से पूछा, सुशीला को आपके साथ भेजूँ क्या? वे खुश हो गये। कहने लगे, यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मैं उनके मारफ़त वहाँ के लोगों से अच्छी तरह बातचीत कर सकूंगा। फ्रंटियर में कोई हिन्दुस्तानी जानने वाला रहे, तो बड़ी भारी चीज़ हो जाती है। सुशीला बहन आवें, उससे बेहतर क्या हो सकता है? क्रॉस साहब रेडक्रॉस के हैं। रेडक्रॉस के माने यह थे कि लड़ाई के मरीजों की दवादारू करना। अब तो वे लोग दूसरा-तीसरा काम भी करते हैं। यह सवाल कि डॉक्टर सुशीला क्रॉस साहब के साथ गई है या क्रॉस साहब डॉक्टर सुशीला के साथ गये हैं, ज़रा पेचीदा हो जाता है। मगर पेचीदा नहीं है। वे दोनों दोस्त हैं। सेवा-भाव से गये हैं। पैसा कमाने की तो बात नहीं। क्रॉस साहब मेरे मित्र हैं और सुशीला तो मेरी लड़की है। मैं उसका बाप हूँ। तो मैंने उसे बड़ी करने के लिए नहीं भेजा, कोई ऐसा न सोचें कि वह तो डाक्टर है और क्रॉस साहब दूसरे हैं। कौन ऊँचा है, कौन नीचा है, ऐसा भेदभाव न करें। क्रॉस साहब, औरत साथ हो, तो उसे आगे कर देते हैं। अपने आप को पीछे रखते हैं। मगर निरवार्थ सेवा में ऊंचे-नीचे का भेद नहीं होता। अगर कोई भेद है तो क्रॉस साहब बड़े हैं। सुशीला उनके साथ उन की मदद के लिए गई है। वे दोनों जाकर मुझे वहाँ के हाल बतावेंगे मुझे नवाब साहब ने लिखा कि मुझे कई लोग झूठी बातें भी लिख देते हैं, उन्हें मानने का मेरा क्या अधिकार? सो मैंने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिये, और क्रॉस साहब और सुशीला बहन को बहावलपुर भेजा। वहाँ के मुसलमानों का तार आ गया है कि वे वहाँ पहुँच गये हैं। वहाँ से लौटेंगे, तब मुझे सब सही हालात बता देंगे। तीन-चार दिन में लौटने वाले थे मगर कुछ काम निकल आया होगा, सो नहीं आये।

मैं उनका सेवक हूं

अभी बन्नू के कुछ भाई-बहन मेरे पास आ गये थे। शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो थे, पर ऐसी हालत नहीं थी कि चल न सकें। हाँ किसी की उंगली में घाव लगे थे; कहीं कुछ था कहीं कुछ था, ऐसे थे। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना हो ब्रजकृष्णजी से कह दें; लेकिन इतना समझ लें कि मैं उन्हें भूला नहीं हूं। वे सब भले आदमी थे। उनका गुस्से से भरा होना स्वाभाविक था, मगर वे मेरी बात मान गये। एक भाई थे। वे शरणार्थी थे या कौन थे, मैंने पूछा नहीं। उन्होंने कहा—"तुमने बहुत खराबी कर दी है। क्या और करते ही जाओगे? इससे बेहतर है कि जाओ। बड़े महात्मा हो, तो क्या हुआ? हमारा काम तो बिगाड़ते ही हो। तुम हमें छोड़ दो। हमें भूल जाओ। भागो।" मैंने पूछा, कहाँ, जाऊं? पीछे उन्होंने कहा, हिमालय जाओ। तो मैंने डांटा—वे मेरे जितने बुजुर्ग नहीं। वैसे तो बुजुर्ग हैं, तगड़े हैं, मेरे जैसे पांच-सात आदमियों को चट कर सकते हैं। मैं तो महात्मा रहा। कमज़ोर शरीर। घबराहट में पड़ जाऊं, तो मेरा क्या हाल होगा? तो मैंने हंसकर कहा, क्या मैं आपके कहनेसे जाऊं? किसकी बात सुनूं? कोई कहता है यहीं रहो, कोई कहता है जाओ। कोई डांटता है, गाली देता है; कोई तारीफ़ करता है। तो मैं क्या करूं? ईश्वर जो हुक्म करता है, वही मैं करता हूं। आप कह सकते हैं, आप ईश्वर को नहीं मानते। तो कम से कम इतना तो करें कि मुझे अपने दिलके अनुसार करने दें। आप कह सकते हैं कि ईश्वर तो हम हैं। तब परमेश्वर कहाँ जायगा? ईश्वर तो एक है। हाँ, यह ठीक है कि पञ्च परमेश्वर है। मगर यह पञ्च का सवाल नहीं। दुःखी का बेली परमेश्वर है, लेकिन दुःखी खुद

परमात्मा नहीं। जब मैं दावा करता हूँ कि हरएक स्त्री मेरी सगी बहन है, लड़की है, तब उसका दुःख मेरा दुःख है। आप क्यों मानते हैं कि मैं आपका दुःख नहीं जानता, आपके दुःख में हिस्सा नहीं लेता, हिन्दुओं और सिक्खों का मैं दुश्मन हूँ, और मुसलमानों का दोस्त हूँ? इस भाई ने मुझे साफ़ साफ़ कह दिया। कोई गाली देकर लिखते हैं, कोई विवेक से लिखते हैं कि हमें छोड़ दो। चाहे हम दोज़ख में जायें, तुमको हमारी क्या पड़ी है? तुम भागो। लेकिन मैं किसी के कहने से कैसे भाग सकता हूँ? किसी के कहने से मैं खिदमतगार नहीं बना। किसी के कहने से मिट नहीं सकता। ईश्वर की इच्छा से मैं जो हूं, बना हूँ। ईश्वर को जो करना है, करेगा। ईश्वर चाहे तो मुझे मार सकता है। मैं समझता हूँ कि मैं ईश्वर की बात मानता हूँ। मैं हिमालय क्यों नहीं जाता? वहां रहना तो मुझे पसन्द पड़ेगा। ऐसा नहीं कि वहां मुझे खाना-पीना-ओढ़ना नहीं मिलेगा—वहां जाकर शान्ति मिलेगी। मगर मैं अशान्ति में से शान्ति चाहता हूँ; नहीं तो उस अशान्ति में मर जाना चाहता हूँ। मेरा हिमालय यहाँ है। आप सब हिमालय चलें, तो मुझको भी अपने साथ लेते चलें।

मेहनत की रोटी

मेरे पास शिकायतें आती हैं—वे सही शिकायतें हैं—कि यहाँ जो शरणार्थी पड़े हैं, उनको खाना देते हैं, पीना देते हैं, पहनने को देते हैं। जो हो सकता है सब करते हैं, लेकिन वे मेहनत नहीं करना चाहते, काम नहीं करना चाहते। जो उन लोगों की खिदमत करते हैं, उन्होंने लम्बी चौड़ी शिकायत लिखकर दी है, उसमें से मैं इतनी ही कह देता हूँ। मैंने तो कह दिया है कि अगर दुःख मिटाना चाहते हैं दुःख में से सुख निकालना चाहते हैं, दुःख में भी

हिन्दुस्तान की सेवा करना चाहते हैं--उसके साथ अपनी सेवा तो हो ही जाती है-- तो दुःखियों को काम तो करना ही चाहिये। दुःखी को ऐसा हक नहीं कि वह काम न करे और मौजशौक करे। गीता में तो कहा है, यज्ञ करो और खाओ--यज्ञ करो और जो शेष रह जाता है, उसको खाओ। यह मेरे लिए है और आपके लिए नहीं है, ऐसा नहीं है--यह सबके लिए है। जो दुःखी हैं, उनके लिए भी है। एक आदमी कुछ करे नहीं, बैठा रहे और खाये। वह चल नहीं सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये, तो वह निकम्मा है, पृथ्वी पर भार है। जिसके पास पैसा है, वह भी मेहनत करके खाये, तभी बनता है। हाँ, कोई लाचारी है--पैर नहीं चलते, अंधा है, वृद्ध हो गया है, तो अलग बात है। लेकिन जो तगड़ा है, वह क्यों न काम करे? जो कोई जो काम कर सकते हैं, सो करें। शिबिरों में जो तगड़े लोग पड़े हैं, वे पाखाना भी उठावें। चरखा चलावें। जो काम कर सकते हैं, सो करें। जो लोग काम करना नहीं जानते, वे लड़कों को सिखायें। इस तरह काम लें। लेकिन कोई कहे कि केम्ब्रिज में जैसी पढ़ाई होती थी, वैसी करावें। मैं, मेरा बाबा केम्ब्रिज में सीखे थे, लड़के को भी वहाँ भेजें, तो वह कैसे हो सकता है? मैं तो इतना ही कहूँगा कि जितने शरणार्थी हैं, वे काम करके खायें, उन्हें काम करना ही चाहिये।

किसान

आज एक सज्जन आये थे। उनका नाम तो मैं भूल गया। उन्होंने किसानों की बात की। मैंने कहा, मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा बड़ा वज़ीर किसान होगा, सब कुछ किसान होगा; क्यों कि यहाँ का राजा किसान है। मुझे बचपन

मे सिखाया था—एक कविता है, "हे किसान, तू बादशाह है।" किसान ज़मीन से पैदा न करे, तो हम क्या खायेंगे ? हिन्दुस्तान का सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाकर बैठे हैं। आज किसान क्या करे ? एम. ए. बने ? बी. ए. बने ? —ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नहीं चलायेगा। जो आदमी अपनी ज़मीन में से पैदा करता है और खाता है, सो जनरल बने, प्रधान बने, तो हिन्दुस्तान की शकल बदल जायेगी। आज जो सड़ा पड़ा है, वह नहीं रहेगा।

मद्रास में खुराक की तङ्गी

अन्त में गांधी जी ने कहा, मद्रास में खुराक की तङ्गी है। मद्रास सरकार की तरफ से दूत यह कहने के लिए श्री जयरामदास के पास आये थे कि वे उस सूबे के लिए अन्न देने का बन्दोबस्त करें। मुझे मद्रास वालों के इस रुख से दुःख होता है। मैं मद्रास के लोगों को यह समझाना चाहता हूँ कि वे अपने ही सूबे में मूँगफली, नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थों के रूप में काफी खुराक पा सकते हैं। उनके यहाँ मछली भी काफी है, जिन्हें उनमें से ज़्यादातर लोग खाते हैं। तब उन्हें भीख मांगने के लिए बाहर निकलने की क्या ज़रूरत है ? उनका चावल का आग्रह रखना—वह भी पालिश किया हुआ चावल जिसके सारे पोषक तत्व मर जाते हैं—या चावल न मिलने पर मजबूरी से गेहूँ मंजूर करना ठीक नहीं है। चावल के आटे में वे मूंगफली या नारियल का आटा मिला सकते हैं और इस तरह अकाल के भेड़िये को आने से रोक सकते हैं। उन्हें ज़रूरत है आत्म-विश्वास और श्रद्धा की। मद्रासियों को मैं अच्छी तरह से जानता हूँ और दक्षिण अफ्रीका में उस प्रान्त के सभी भाषा वाले हिस्सों के लोग मेरे साथ थे। सत्याग्रह

कूच के वक्त उन्हें रोज़ाना के राशन में सिर्फ डेढ़ पौंड रोटी और एक औंस शकर दी जाती थी। मगर जहां कहीं उन्होंने रात को डेरा डाला; वहां जङ्गल की घास में से खाने लायक़ चीजें चुनकर और मज़े से गाते हुए उन्हें पकाकर उन्होंने मुझे अचरज में डाल दिया। ऐसे सूझबूझ वाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते हैं? यह सच है कि हम सब मज़दूर थे। और, ईमानदारी से काम करने में ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी आवश्यक ज़रूरतों की पूर्ति भरी है।

बिड़ला भवन, नई दिल्ली, ३०--१--'४८

राष्ट्रपिता बापू का अवसान

आज प्रतिसंध्या की भाँति सायङ्काल की प्रार्थना-सभा में सम्मिलित होने के लिए महात्मा गाँधी बिड़ला-भवन से निकल कर प्रार्थना-स्थान को जा रहे थे। जब वे प्रार्थना-मञ्च से केवल १५ गज की दूरी पर थे, तब ५ बजकर ५ मिनट पर एक नारकीय पापात्मा मराठे युवक ने जिसका कलुषित नाम नाथूराम विनायक गोडसे था, दो गज़ की दूरी पर से बापू पर रिवाल्वर से चार गोलियाँ लगातार छोड़ी। गोलियां उनके वक्ष और उदर में लगीं। अपने दोनों हाथ जोड़े हुए केवल "हा राम" कहकर वे तत्काल मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े। और उसके ३५ मिनट पश्चात् संध्या के ५ बजकर ४० मिनट पर उनकी महान् आत्मा नश्वर शरीर को त्याग करअनन्त को महाप्रयाण कर गई। हिन्दू-मुस्लिम एकता की महान् पवित्र वेदी पर अपने प्राणों का बलिदान कर वे तो अमर शहीद हो गये किंतु भारत आज सदा के लिए अनाथ हो गया। उसने अपने ही हाथों अपना सुहाग लूट लिया। वह ज्योति जो उन्होंने प्रदीप्त की थी उसका अंत कभी न होगा--वह तो सहस्रों वर्षों तक--चिरकाल तक अक्षय रहकर स्वयं प्रकाशित होगी और अखिल विश्वको प्रकाशित करती रहेगी।